ज्ञानवल्लभ पुष्पांक १७ सम्पादक पुष्पांक ५९



# ज्ञानवल्लभ स्तवनमाला



जिसमें-

आप्त पुरुषों की प्राचीन कृतियों का संग्रह है

संग्रहकर्त्री -जिनश्रीजी साहिबा







सम्पादक-

चन्दनमल नागोरी

छोटी सादडी (मेवाड)

ज्ञान वल्लभ पुष्पा ३ | सम्पादक पुष्पांक

॥ श्री सद्गुरु सुखसागर गुरुभ्योनमः ॥

# ज्ञानवल्लभ स्तवन माला

---

जिसमें—

प्राचीन स्तवन आदि का अमूल्य संग्रह है

प्रेरिका—

**श्री प्रधानश्रीजी साहिबा**

सम्पादिका—

**श्री जिनश्रीजी साहिबा**

द्रव्यदाता—

**श्राविका संघ**




सम्पादक—

**चन्दनमल नागोरी**

छोटी सादडी (मेवाड)



प्रथमावृत्ति १००० | मूल्य ढाई रुपया

परमपूज्या विदुषीवर्या प्रवर्तिनी पद विभूषिता



[illegible] श्री जी म सा

# समर्पण-पत्र

श्रीमती परमपूज्या विदुषीरत्न प्रवर्तिनी
महोदया श्री वल्लभश्रीजी महाराज

आपकी छत्र छाया में ज्ञान सम्पादन कर चारित्र पालने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। सांसारिक उपाधियों को छोड़ संयम मार्ग के स्वीकार में कारण भूत आप ही हैं, आप का वात्सल्य भाव [illegible] किस [illegible] का [illegible] भूला नहीं जाता। शिक्षा प्रचार के [illegible] आन्दोलन के [illegible] व्यक्तियों पर आपके चारित्र बल का विशेष प्रभाव पड़ा। जिससे [illegible] में इतना [illegible] पुस्तक प्रकाशन सेवा में [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible] करके [illegible]।

सुमन

# सम्पादक-निवेदन

ज्ञानवल्लभ स्तवनमाला मे पूर्वाचार्यों द्वारा रचित स्तवनादिका संग्रह है, एक एक संग्रह से माला तैयार होती है। यह प्रकाशन परम पूज्या प्रवर्तिनी महोदया के पुण्य स्मरण निमित्त शिष्या समुदाय और भक्त श्राविका की ओर से हो रहा है। इस प्रकाशन की प्रेरिका श्री प्रधान श्रीजी साहिबा और द्रव्य उपदेशिका भी आप ही है। स्तवन संग्राहिका व लेखिका परम पूज्या श्री जिन श्रीजी साहिबा है। वैसे आप अनुभवशील है और स्तवन संग्रह मे आपने भक्तिरस का ध्यान रख विविध विषयो के नित्य पठन योग्य स्तवनो का संग्रह किया है।

प्रवर्तिनीजी महोदया के स्मारक निमित्त भक्तजनो ने चालीस हजार का फंड एकत्रित किया और अमलनेर मे ज्ञान वल्लभ विहार (भवन) कराया। अग्नि संस्कार की जगह छत्री बनवाई गई, पादुका स्थापित की। खरतरगच्छ मे साध्वी जी महाराज द्वारा विशेष उन्नति हुई। श्री प्रवर्तिनी जी साहिबा भी प्रभाविका मे एक थीं जिसका वर्णन वल्लभ जीवन सौरभ मे विशेष रूप से प्रकाशित हुवा है। आप व वर्तमान मे साध्वी मंडल प्रसिद्धि मे आई, वे सब परम पूज्या श्री शिव श्रीजी महाराज की समुदाय की है, आप भाग्यशाली, तप जप पठन पाठन मे बहुत सावधान थीं और विहार मे गावों मे शहरों मे धर्म प्रचार करने में श्रेष्ठ प्रयत्न कर शासन की शोभा बढाना कर्तव्य समझती थीं।

वैसे खरतरगच्छ में पूर्वकाल में प्रभावक आचार्य हुए हैं। उनमें से एक समर्थ विद्वान प्रभावक आचार्य चालीसवें पाट पर श्री जिनेश्वर सूरिजी वादीवाद विजय में प्रभावक थे। आप विहार करते अणहिलपुर पट्टन में पधारे, यह संवत् १०८० का वर्णन है। उस समय महाराजा भीम राज्य करते थे। सूरिजी के उपदेश से नगर में धर्मकार्य विपुल संख्या में हुए और वादी से विजय पाए। अतः महाराजा भीम ने आकर्षित हो खरतर बिरुद पद समर्पित किया, तब से ही खरतरगच्छ नाम से प्रसिद्धि पाए।

गगनेभ व्योमचन्द्र (१०८०) मितविक्रम संवादि ॥
अलभन्त नृपादेतद् विरुदं श्री जिनेश्वराः ॥ १ ॥

इस प्रकार विरुद प्राप्त करने से खरतरगच्छ प्रसिद्धि में आया

लुप्तप्राय यथाचारे, साधूनां संप्रधार्य ते ।
संविग्नैः साधुभिः, सार्धं क्रियोद्धारं व्यधुः स्वयं ॥१॥

मुनि आचार लुप्तप्राय हो जाने से श्री जिनचंद्र सूरिजी ने कितने ही संवेगी साधुओं के साथ स्वयं ने भी क्रियोद्धार करके संवेगी-पन स्वीकार किया।

और कई आचार्यों में एक श्री चंद्रसूरिजी महाराज बहुत प्रभावक हुए। जिस समय क्रिया उद्धार का कार्य तपगच्छ में जारी हुवा तब आपने साथ दिया और प्रेम पूर्ण मदद से आपने गच्छ के लिए नियमावली बनाई, जिसमें क्रिया नियम नियुक्त किये। तत पश्चात् जिनचंद्र समाचारी बना कर श्रमण वर्ग को सावधान किया और क्रियाशील रहने की घोषणा की।

आप बादशाह के दरबार में भी बहुत मान पाए तथा परवाने भी प्राप्त किए और शासन की शोभा में वृद्धि की। आपका नाम आज भी चमकते सितारों में है।

समय चक्र फिरता रहता है। इस समय खरतरगच्छ में मुनि गण्य अल्प हैं, और साध्वी संख्या विशेष है। जिन में व्याख्याता प्रभाविका भी विशेष हैं, और विहार उपदेश में भी दत्तचित हैं। श्री प्रवर्तिनी जी महाराज ने भी विहार कर उपदेश देने में कमी नहीं की। इसी उपकार को स्मरणार्थ भक्तजनोंने स्मारक की योजना बनाई।

स्तवन भक्ति का मुख्य अंग है। इस विषय में आवश्यक सूत्र नियुक्ति गाथा १०८७ में श्रीमद् हरिभद्र सूरिजी महाराज ने कहा है कि -

भत्तीइ जिणवराणं खिज्जंती पुव्व संचियाकम्मा।

श्री जिनेश्वरदेव की भक्ति करने से पूर्व संचित अनेक भवों में किए हुए कर्मों का क्षय होता है।

भक्ति भावार्थ की जानकारी और यथा योग्य राग गान तान मान सहित हो तो विशेष लाभदायी होती है।

स्तवन संग्रह में ११८ स्तवन का संग्रह परमपूज्या जिन श्रीजी महाराज ने बहुत परिश्रम के साथ किया है। आप प्रवर्तिनी जी महोदया की प्रथम शिष्या हैं। निवेदन यह है कि समुदाय में सब साध्वयाँ ज्ञान और क्रियाशीलता में स्वर्गीया की तरह शासन की शोभा बढ़ावें।

इन्द्रध्वम् २०२० दूसरा शाती सुदी १४
छोटी सादड़ी (मेवाड़)

निवेदक -
चन्दनमल नागोरी

# द्रव्य दाताओं की नामावली

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| १. | कुन्दमलजी चोपड़ा | | | खेनिया |
| २. | तेजमालजी लुंकड | की धर्मपत्नी | जीवणी बाई | फलोदी |
| ३. | राजमलजी लुंकड़ | ,, ,, | कसुम्बी बाई | ,, |
| ४. | जुगराजजी पारक | ,, ,, | अनोपी बाई | ,, |
| ५. | अमरचंदजी बोथरे | ,, ,, | सोभाग बाई | खींचंद |
| ६. | शिवराजजी टाटिया | ,, ,, | पानी बाई | ,, |
| ७. | खेवरचंदजी गुलेछा | ,, ,, | | फलोदी |
| ८. | खेतमलजी कोठारी | ,, ,, | जेठी बाई | अमलनेर |
| ९. | पृथीराजजी बंगानी | ,, ,, | राधा बाई | धमतरी |
| १०. | अमरचंदजी | ,, ,, | ,, ,, | ,, |
| ११. | जेटमलजी पारक | ,, ,, | | राजिम |
| १२. | वकतावर मलजी लुणावत | ,, ,, | सुगुनु बाई | कुसुमकसा |
| १३. | मनोरमलजी सींघी | ,, ,, | मगना बाई | ,, |
| १४. | भवरलालजी गुलेछा | ,, ,, | जतन बाई | रायपुर |
| | | | वीशस्थानक तप निमित | |
| १५. | पारसमलजी संकलेचा | ,, ,, | बबली बाई | दुरुग |
| १६. | भीकमचंदजी पारख | ,, ,, | अणची बाई | मलकापुर |
| | | | वीशस्थानक तप निमित | |
| १७. | मान बाई जतन बाई दुगड | | | छिन्दवाड़ा |
| १८. | गेनमलजी पारख | ,, ,, | | मद्रास |
| १९. | गुलाब चंदजी लोढा | ,, ,, | कोयल बाई | सारंखेड़ा |
| २०. | वंशीलालजी बनवट | ,, ,, | पदम बाई | मलकापुर |
| २१. | मोहनलालजी बुरड़ | की माता | जतन बाई | ,, |
| | | | वीशस्थानक तप निमित | |

# शुद्धाशुद्धि पत्र

| पृ० | प० | अशुद्धि | शुद्धि |
|---|---|---|---|
| ? | ११ | रचेरिघनेजी | रचे मेघनेजी |
| ४ | ११ | उपदिसेजा | उपदिसेजी |
| ५ | १३ | पूठभामडल | पूठभामडल |
| ६ | ८ | वयु | वपु |
| ८ | १२ | उह्नासे | उल्लासे |
| ८ | १६ | उह्नास | उल्लास. |
| ६ | १४ | घुएया | थुएया |
| १८ | ३ | ० | मननी वात |
| १८ | १४ | म्हेता | मैं अनता. |
| १८ | ६ | आथो | आयो |
| २१ | १० | मरत | भरत |
| २२ | ६ | रोहितासा | रोहितासा |
| २३ | ३ | हरितसे लीला | हरिसलीला |
| ३२ | १० | पापद्दु | थापद्दु |
| ३३ | १ | माह्री हरी | माह्ररी |
| ३४ | ८ | श्रम | उस |
| ३५ | ६ | तिचद | जितचद |
| ३६ | ३ | दास | सदा |
| ४० | १२ | भाज | भोजन |
| ४२ | २ | माग | आरा |
| ५२ | १२ | सर्द महयोग | सर्द ह्वो ग |
| ५४ | ३ | जीव जीव | जाव जीव |

| पृ० | पं० | अशुद्धि | शुद्धि |
|---|---|---|---|
| ५४ | ६ | उहन्नासोरे | उल्लासोरे |
| ६४ | ६ | मत्त | भत्त |
| ६७ | ११ | मारे भार्यो | भारे भर्यो |
| ११३ | ३ | मंक्षारी | मक्षारी |
| १२० | ११ | भलभणीए. | भक्तभणीग. |
| १२१ | १ | आपुत्र | आठ पुत्र. |
| १२४ | १२ | कहे राणी परे | कहे इण परी. |
| १२४ | १५ | भवसायरतर्यो | भवसायरतरो |
| १२६ | ३ | रंग | रंगे |
| १२६ | ३ | पक्वावान्न | पकवान |
| १५२ | १ | द्रे | देव |
| १५३ | २ | नेवला | नेउला |
| १५३ | १० | जारे | जोर |
| १५५ | १० | अढासे | अढीसे |
| १६५ | १० | अभिरामी रे लोक | अभिरामीरे लोल |
| १७८ | ११ | पठिमा | पड़िमा |
| १९३ | ६ | पौषण | पौपध |
| १९४ | १० | मातदियो | मातरो |
| १९५ | ११ | पालड़ी | पालठी |
| १९५ | १२ | एकड़ी | एकटी |
| १९५ | १३ | लेउगण | लेव्ठींगण |
| १९५ | १४ | अंधकरे | उंघकरे |
| १९६ | ९ | जग | जस. |
| १९७ | ६ | ० | अक्षर |
| १९७ | ७ | चउपखी | चउपर्वी |
| १९९ | ५ | परिसीरे | पोरसीरे. |

| पृ० | प० | अशुद्धि | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २०३ | १५ | सराये | सरापे |
| २०४ | ४ | चवदम | चवदमी |
| २२२ | | ० | देव विभया वीर थुवो<br>१६ गच्छा चार निधान |
| २३१ | ८ | तिथि | थिति |
| २४२ | १४ | गाग्वोजी | गारवोजी |
| २४८ | २ | ठोप्या | ठोक्या |
| २५८ | १ | गधरिया | गदहिया |
| २५८ | ७ | दाकुण | ढींकुण |
| २५८ | ८ | कोंतो | कोंता |
| २७२ | १६ | दुष्टण | दूषण |
| २७३ | ८ | वगरा वगरा भाई नाप | वगस २ मा वाप |
| २७३ | ६ | सरदहिणा | सद्दहणा |
| २८२ | ११ | ० | रितु. |
| २८२ | १९ | कद्द | कहे |
| २८३ | ८ | ऊचे | ऊंघे |
| २८३ | ६ | भीत | नीत |
| २८५ | ६ | पिड्ड मे | पिंड में |
| २८५ | १ | दसें | दीसे |
| २८५ | ७ | मत्तानर | मत्तोतर |
| २८५ | ८ | दास | दोप |
| २८५ | १५ | रान | रोग |
| २८५ | १५ | गगरे | दगपे |
| २८५ | १६ | मन | रन |
| २८६ | ५ | पाटी रतन गोहा माटे | कोडी रतन की .ी माटे |
| २८६ | १२ | लन | लगे |

| पृ० | पं० | अशुद्धि | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २८७ | १३ | ० | तिहां लगे |
| २८८ | २ | धन धन सु | धन धन तसु |
| २८८ | २ | ० | तस |
| २८९ | १ | चीमासा | चोमासा |
| २८९ | ८ | मेहला | मेहुला |
| २८९ | १० | ० | जी. |
| २९० | ३ | ० | जी. |
| २९१ | २ | ० | जी. |
| २९२ | १ | पुस | पौष |
| २९५ | १२ | विगतीजी | विगुतीजी |
| ३१३ | १३ | न फेरिये | फेरिये |

# अनुक्रमणिका


| क्रमांक | नाम स्तवन | विषय | कर्ता नामावली | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|
| १ | जिन शासन मेहरो | समवसरण | उ० धर्म वर्द्धन गणि | १ |
| २ | जम्बूद्वीप सोहामणो | एकम का | समयसुन्दर जी | ७ |
| ३ | एकमजीव अकेलो आयो | एकम का | डूंगर सिंह | १० |
| ४ | महावीर जिणंदा | द्वितीया का | वीर पू. श्रा सा सूरी | १२ |
| ५ | सीमंदरजीने वन्दना | ,, ,, | सूर सागर | १३ |
| ६ | चादलिया सदेशो | ,, ,, | जिनहर्ष सूरि | १४ |
| ७ | श्री सीमंदिर साहिबा | ,, ,, | ज्ञान विमलसूरी | १७ |
| ८ | मारी विनतडी अवधारो | ,, ,, | अगरचंद | २१ |
| ९ | मनडु तेमारो मोकले | ,, ,, | उपा० उदय | २६ |
| १० | श्री सीमंदर साहिबा | ,, ,, | म क्षमाकल्याणक | २८ |
| ११ | सफल ससार अवतार | ,, ,, | भक्तिलाभ जी | २९ |
| १२ | आदिदेव अरिहतजी | तृतीया का | जित्तचदजी उ | ३३ |
| १३ | ऋषभ जिनेश्वर दिनकर | ,, ,, | लालचन्द | ३५ |
| १४ | सुणसुण शत्रु जय गिरि | ,, ,, | जिनभक्ति सूरी | ३८ |
| १५ | सुण जिनवर शत्रु जय | ,, ,, | जिनहर्ष सूरी | ३९ |
| १६ | आदि जिनवरजी | ,, ,, | जिनहरिसागर सूरी | ४२ |
| १७ | आदिश्वर स्वामी | ,, ,, | ,, ,, | ४३ |
| १८ | प्रभु हाजिर खडे | ,, ,, | ,, ,, | ४५ |
| १९ | माता वामादे बोलावे | चतुर्थी का | सौभाग्य विजय | ४६ |
| २० | पारस तोरी निरखण दा | ,, ,, | केदार मुनि | ४८ |
| २१ | भविका श्रीजिनबिंब | ,, ,, | जिनचन्द्र सूरी | ४९ |
| २२ | जयकारी जिनराज | ,, ,, | जिनचन्द्र सूरी | ५१ |
| २३ | प्रणमु श्रीगुरुपाय | पचमी का | समय सुन्दर जी | ५२ |
| २४ | प्रभुसेवो प्रभुसेवो | ,, ,, | कविन्द्र सा सू | ५६ |

| क. | नाम स्तवन | विषय | कर्ता नामावली | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|
| २५ | वीरजिनेश्वर साहिव | षष्टि का | ऋषभदास | ५८ |
| २६ | वीर कुमारनी वातडी | ,, ,, | वीरविजयजी | ५९ |
| २७ | वीरजी सुणो एक विनती | ,, ,, | ज्ञानसागर | ६१ |
| २८ | सेवाशांति जिनंद की | सप्तमी का | भवसागर | ६३ |
| २९ | शांति जिनेश्वर साहिब | ,, ,, | जिनविजय | ६५ |
| ३० | सुणोशांति जिणंदसोभागी | ,, ,, | उदयरत्न | ६७ |
| ३१ | सदगुरु चरण कमल | ,, ,, | वसनामुनि | ६९ |
| ३२ | नमनकरु महावीर | अष्टमी का | वीरपुत्र. आ. सू. | ७३ |
| ३३ | अमल कमलजिम | ,, ,, | जिनचंद्र | ७५ |
| ३४ | पंचतीर्थ प्रणमुसदा | ,, ,, | सौभाग्य बुद्धि | ७६ |
| ३५ | श्रीराजग्रही नयरी | ,, ,, | न्यायसागर जी | ८१ |
| ३६ | नेमीश्वर वंदिये | नौमी का | क्षमाकल्याणक | ८३ |
| ३७ | तोरण आया हे सखी | ,, ,, | जैतसागर जी | ८६ |
| ३८ | तोरणथी रथ फेरिया | ,, ,, | देवचंद्रजी | ८७ |
| ३९ | द्वारापुरी वनो नेम | ,, ,, | कीर्तिविजय | ८९ |
| ४० | पास जिनेसर जग | दशमी का | रंगसमय जी | ९१ |
| ४१ | श्रीजिन वदन निवास | ,, ,, | क्षमाप्रमोद | ९६ |
| ४२ | प्रभुजी हो वणारसी | ,, ,, | रत्नमुनि | ११० |
| ४३ | नवपद समरी मन शुद्धे | एकादशी का | कुशललाभ | ११२ |
| ४४ | समवसरण बैठा | ,, ,, | समयसुंदर | ११९ |
| ४५ | शासन देवत्त सामिनी | द्वादशीका | सारजिन | १२० |
| ४६ | लाज राखो प्रभु मारो | ,, ,, | उदय | १२७ |
| ४७ | धरसो न दिल में | ,, ,, | चतुरविजय | १२८ |
| ४८ | वीर सुणो मारी विनती | अमावस्या का | समयसुन्दर | १३० |
| ४९ | सिद्धाचल मंडन | पूर्णिमाका | जिनहर्ष | १३३ |
| ५० | श्री महावीर जिनेन्द्र को | सत्ताइस भवका | जिनहरि सूरि | १३५ |
| ५१ | नमो रे नमो | छे मासी | जिनहरि सूरी | १५१ |

| क्र | नाम स्तवन | विषय | कर्ता नामावली | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|
| ५२ | माता त्रिशला भुनावे | पालना | दीप विजय | १५५ |
| ५३ | नदीसर बावन | नन्दीसर द्वीप | जैन चद | १५६ |
| ५४ | करनो करलो रे | ,, ,, | जिन हरि सूरी | १६१ |
| ५५ | मनना घरले नवपद | नवपद का | जिन कवि सूरि | १६३ |
| ५६ | सुर मणि सम सहमन | ,, ,, | जिन लाभ सूरि | १६५ |
| ५७ | शिव सुखके दातार | ,, ,, | वीर पु श्रा सूरि | १६७ |
| ५८ | श्री सिद्धचक्र आराधो | ,, ,, | जिन चद्र सूरि | १६८ |
| ५९ | जिहां प्रणमु दिन प्रत्ये | ,, ,, | मान विजय | १६९ |
| ६० | धरलो निर्मल ध्यान | ,, ,, | जिन हरि सा सूरि | १७३ |
| ६१ | नवपदनो ध्यान धरीजे | ,, ,, | कनक कीर्ति | १७४ |
| ६२ | दीवाली दिन वीरजी रे | दिवाली का | पूर्वाचार्य | १७६ |
| ६३ | मारग देशक मोक्षनो | ,, ,, | देवचद्रजी | १७७ |
| ६४ | श्री जिनवरजी ना गुण | ,, ,, | उदय रत्न | १७८ |
| ६५ | सुखकर समवसरण म | अक्षय निधि | जिन हरि. सा सू | १८० |
| ६६ | परमातम गुणगावो | ,, ,, | ,, ,, | १८१ |
| ६७ | ॐ अर्हंपद प्यारा | ,, ,, | ,, ,, | १८३ |
| ६८ | तुमे जोजो जोजो रे | अभिनन्दन | पदम विजय | १८४ |
| ६९ | मारोरस सेलडी | अक्षय तृतीया | पूर्वाचार्य | १८६ |
| ७० | हितकारी प्रभुजी लेने | केवल ज्ञान | जि ह सा सू | १८७ |
| ७१ | तीर्थंकर पदो सारे | बीश स्थानक | ,, ,, | १८८ |
| ७२ | मा सु सुण्योछे प्रभु | गोतम विलाप | हेमेन्द्र सागर | १९० |
| ७३ | जेसलमेर नगर भलो | पोषध का | समय सुन्दर | १९३ |
| ७४ | प्रणमु प्रथम जिनेसर | २८ लब्धि | धर्म वर्द्धन गणि | २०१ |
| ७५ | सिद्धारथ नदन नमु | १० पचवाण | रामचन्द्र गणि | २०६ |
| ७६ | श्री महावीर जी धर्म प्र | उपधान | समय सुन्दर | २१० |
| ७७ | जिनवर श्री वर्धमान | चवदा पूर्व | सौभाग्य सूरि | २१४ |
| ७८ | चोवीने श्रीतीर्थपति | ४५ आगम | रामरिद्धि गणि | २१६ |

| क्र. | नाम स्तवन | विषय | कर्ता नामावली | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|
| ७९ | पद पंकज रे प्रणमो | इरियावही | लक्ष्मीवल्लभ | २२५ |
| ८० | सुमति जिणंद सुमति | गुणस्थान | धर्मसिंह उ. | २२६ |
| ८१ | पूर मनोरथ पास जी | दंडक | ,, ,, | २३५ |
| ८२ | वर्धमान जिनवर तणा | मुहपत्ति | लक्ष्मीवल्लभ | २४१ |
| ८३ | सिद्धारथ सुत वंदिये | समवाय | विनयविजय | २४३ |
| ८४ | मेरा एक ध्यान है | २४ जिन | जिन क. सा सू. | २५१ |
| ८५ | सकल सिद्धि दायक | पुन्य प्रकाश | विनयविजय | २५३ |
| ८६ | हवे राणी पदमावती | पदमावती | समयसुन्दर जी | २६६ |
| ८७ | वेकर जोड़ी विनवुं जी | आलोयणा | ,, ,, | २७० |
| ८८ | ए धन शासन वीर | ,, ,, | धर्मसिंह | २७४ |
| ८९ | उतपत्ति जोय जीव | गर्भोत्पत्ति | पू. चा. | २८० |
| ९० | हे जी मरुदेवा जी | बारह मास का | जिनरिद्धिसार | २८८ |
| ९१ | वाणी ब्रह्मावादिनी | ,, ,, | प्रीतिविमल | २९५ |
| ९२ | भरतादिक उद्धारज | बिंब स्थापन | उ० यशो विजयजी | ३०३ |
| ९३ | शत्रुंजय गढना वासी | सिद्धि गिरिका | उदयरत्न | ३०४ |
| ९४ | जीव जीवन प्रभु | सामान्य | दीपविजय | ३०६ |
| ९५ | त्रिशलाना जायारे | महावीर जी | बुद्धिसागरजी | ३०७ |
| ९६ | मारी नाड तमारे हाथ | ,, ,, | कपूरविजय जी | ३०८ |
| ९७ | सांभलजो मुनि संयम | वेदनी कर्म का | वीरविजय जी | ३०९ |
| ९८ | आठम जिन वंदन | अष्टमी का | जि. क. सा. सूरि | ३१० |
| ९९ | तीर्थ अष्टापद नित्य | अष्टापद | जिनेन्द्रसागर | ३१२ |
| १०० | पर्व पजुसण आविया | पर्युषण | हंसमुनि | ३१३ |
| १०१ | समेत शिखर मुजने | शिखर जी | अजीतसागर सू. | ३१४ |
| १०२ | श्री चिंतामणिपास जी | पार्श्व नाथ | उ. यशो विजयजी | ३१६ |
| १०३ | सुविधि जिनेसर | सुविधिनाथ | बुद्धिसागरसूरि | ३१७ |
| १०४ | सखी तोरण आयो कंथ | नेमीनाथजी | वीर विजयजी | ३८१ |

श्री परमपूज्या सद्गत श्री ज्ञान श्रीजी साहिवा



समुदाय की आप परम उपकारिणी हैं

# समवशरण का स्तवन

॥ दोहा ॥

श्रीजिन शासन सेहरो ।
जगगुरु पाम जिणंद ॥
प्रणमी जेहना पाय कमल ।
आवी चौसठ इन्द्र ॥१॥

तीर्थंकर आवे तिहा ।
त्रिगडो करे तैयार ॥
समकितकरणी साचवे ।
एह कहुं अधिकार ॥२॥

करे प्रशसा समकिती ।
मिथ्यात्वी होवे मूक ॥
सूर्य देखी हरखे सहु ।
मखे अधारे घूक ॥३॥

॥ ढाल १ ॥

(रागः—वीर वखाणी राणी चेलणा)

आप अरिहंत भले आवीयाजी ।
गावे अपछर गंधर्व ।
समवसरण रचे सुरव राजी ।
संक्षेपेते कहुँ सर्व ॥आप ॥१॥

भुवनपति वीस इन्द्र मिल्याजी,
सोल व्यंतरसार ।
जोइस दुदश वेमाणिय जुड्याजी,
चौसठ इन्द्र सुविचार ॥२॥

पवनसुर पुँज परमारजेजी,
भूमि योजन समगाउ ।
मेघकुमर रचेरिघनेजी ।
करीय सुगंध छिड़काव ॥३॥

अगर कपूर सुभधूपणाजी,
करेय श्री अग्निकुमार ।
वाणव्यंतर हिवे वेगसुंजी ।
रचे मणिपीठीका सार ॥४॥

पुष्पपंचवरण ऊरधमुखेजी,
वरषे जानु परिमाण ।

भवणवई देव त्रिगड़ो भलोजी,
करयते सुणउ सुजाण ॥५॥

रचयगढ प्रथमरुपातणोजी,
सोवन कागरे सार ।
रविशशीरयण कोसीसकोजी,
कनकनो चीयप्राकार ॥६॥

रतनगढ़ रतनने कागरेजी,
रचय वेमाणिय सुरराज ।
भलो त्रीजोगढ भीतरेजी,
जीहां विराजे जिनराज ॥७॥

भींत ऊंची धणु पाचसेजी,
मनातेत्रीस विस्तार ।
धनुष सेतेरगढ आतरोजी,
पौल पचास धणु च्यार ॥८॥

दशपंचपन त्रिहुं गढतणीजी,
पावडी वीस हजार ।
थाके श्रमनहींय चढतां थकाजी,
रुकर उच विस्तार ॥९॥

पन धनुमहस पृथवी थकीजी,
उंच रहे श्रीगढ आकास ।

तेह तल सहु यथा स्थित वसेजी,
नगर आराम आवास ॥१०॥

तोरण चिहुं चिहुँ दिस तिहांजी,
नीलमणि मोर निरमाण ।

दुसय घणु मध्यमणि पीठीकाजी,
उच्च जिणदेह परिमाण ॥११॥

च्यार आसण तिहां चिहुं दिसेजी,
मोतीयें झाक झमाल ।

सम विच कूण ईसांण में जी,
देवछंदो सुविसाल ॥१२॥

देवदुँदुंभी नाद उपदिसेजा,
जिनगुण गावसी तेह ।

अद्ध जिम आई शिर उपरेजी,
गाजसी तेह गुणगेह ॥१३॥

॥ ढाल २ ॥

सफल संसार की (राग)

पुव्वदिशि आसने आई बेसेपहू ।
सुरकृत चौमुखरूप देखे सहु ।

दीपे अशोकतरु बारगुण देहथी ।
देखी हरखे सहु मोर जिम मेहथी ॥१॥

मोतीया जालो त्रिण छत्र सुविमाल ए।
रूप चिहुं २ दिशें चामर ढाल ए।
योजनगामिनी वाणी श्री जिनतणी।
भगवंत उपदिशेबार परषदभणी ॥२॥
प्रदचिणा दयथी अग्नि कुणे करी।
गणधर साधवी तिम वेमाणीय सुरी।
ज्योतिषी भुवननी व्यंतरी स्त्रीपर्खे।
नैऋतकूण जिनवाणी ऊभीसुणे।
त्रिहुंतणा पति वायव कूणमे जाण ए।
सुरवेमाणीय नरनारी ईशाण ए।
बारह परषदा मदमछर छोड ए।
भूवनिप वीमरे सुणेकर जोड ए ॥३॥
पूठभामंडल तेज प्रकाश ए।
लोयणगहण धज ऊंच आकाश ए।
झलहले तेज धर्मचक्र गगने सही।
महक गगु नाग्गो भृपघाणा सही ॥४॥
थाइम पहीम मछु प्रीप पहिले गढे।
गोई परनारी नरनारी ऊभा गढे।
जिनतणी वाणी सुणी जीवनिरंजण।
देवतणी पापगः नहे सुण मन ए ॥५॥

पुण्यवंत पुरुष ते परषद बार में ।
सुणे जिन वाणी धनगणय अवतार ए ।
चौविह देव जिन देव सेवा रचे ।
मणिमयी मांहीली प्रोल मांही वसे ॥६॥
चिहुं दिशि वाटली वावी चौ जाणीयें ।
विदिशि चौकूण दोई दोई वखाणीयें ।
आठ जिहां वावी जल अमृत जेमए ।
स्नानपाने वपु निरमल हेमए ॥७॥
जय विजय जयंत अपराजिया ।
मध्य कंचनगढे प्रोल वसंतिया ।
तुँबरु पुरुष खट्वांग अर्चि मालए ।
रजतगढ प्रोलना एह रखवालए ॥८॥
पहिल त्रिगड़ो न हुवे जिणपुरग्रामए ।
देव महर्द्धिक रचे तिणठाम ए ।
करण वार वार नहीं कारण कोईये ।
आठ प्रति हारज ते सही होइए ॥९॥
जिण समवसरणनी ऋद्धि दीठी जीये ।
नेह धनधन्य अवतार पायो तिये ॥
पास अरदास सुणी वंछित पूरजो ।
हिवमुक्ताहरो शुद्ध दर्शन हुजो ॥१०॥

## (कलश)

इम समवसरणें ऋद्धि वरणे सहु जिनवर सारखी ।
सरदहै ते लहै शुद्ध समकित परम जिन धर्मपारखी॥
प्रकरण सिद्धान्त गुरु परंपर मुणीसहु अधिकारए ।
स स्तव्यो पास जिणंद पाठक धर्मवर्द्धन धारए ॥२॥

–सम्पूर्ण

## एकम का स्तवन

(राग सीमंदर, करजो माया)

जम्बूद्वीप सोहामणो, दक्षिण भरत मझार ।
राजगृही नगरी भली, अलकापुरी अवतार ॥१॥
श्री मुनिसुव्रत स्वामीजी ममरता सुख थाय ।
मनवाञ्छित सुखपामीये, दोहग दूर पुलाय, श्रीमुनि ॥२॥
राजकरे तिहाराजियो, सुमित्र नरेसर नाम ।
पटराणी पद्मावती, शीलगुणे अभीराम ॥श्री॥३॥
श्रावण उज्वलपुनमे, श्रीजिनवर हरिवंश ।
माता कुक्षिमंगेवरे, अवतरिया रायहस ॥श्री॥४॥
जेठपढमपच अष्टमी, जनम्या श्री जिनराय ।
जन्ममहोत्सव सुरकरे, त्रिभुवन हरख न माय ॥श्री ॥५॥
सामलवरण सोहामणो, निरुपम रूपनिधान ।
जिनवरलंछन काछवो, वीश धनुष तनुमान ॥श्री॥६॥

परण्या नारी प्रभावती, भोगपुरंदर साम ।
राजलीला सुखभोगवे, पूरे वांछितकाम ॥श्री.॥७॥
तब लोकांतिकदेवता, आवीजंपे जयकार ।
प्रभु फागुणसुदी बारसे, लिधो संयम भार ॥८॥
शुभ फागुणवदी बारसे, मन धरी निर्मलध्यान ।
चारकर्म चक्र चूरीया, पाम्या केवल ज्ञान ॥श्री॥९॥

(ढाल २)

(राग) सुखकारण भवियण

ततखिण तिहां मिलिया, चलिया सुरनर कोड़ी ।
प्रभुनापद पंकज, प्रणमें बेकर जोड़ी ।
बेकरजोड़ी मच्छर छोड़ी समवसरण विरचंत,
माणक हेम रुप्यमय त्रिगड़ो, छत्रत्रय झलकंत ।
सिंहासण बैठातिहां स्वामी, चौविह धर्म प्रकाशे,
बारे परषदा बैठी आगल, सुणे मन उल्लासे ॥१।
तपने अधिकारे पखवासो तपधार ।
पड़वाथी कीजे, पनरह तिथि उदार ॥
पनरह तिथि कीजे, गुरुमुख लीजे जिसदिन होय उपवास,
श्रीमुनिसुव्रत स्वामीनो जापजपीजे, वंदे देव उल्लास ।

तपउजमणो रजतपालणो, सोवन पुतली चग ।
मोदक थाल देहरे मूकीजे, जिनवर स्नात्र सुरग ॥२॥
तपकरीये निरतर, अहुत्त्व दर्शन जेम ।
मनवांच्छित केरा, सुख पामीजे तेम ॥
सुखसपदा पामीजे लीला लीजे, राजऋद्धि विस्तार ।
पुत्र मित्र परिवार परंपर, अति वल्लभ भरतार ॥
जस कीर्ति सौभागवडाई, महियल महिमा जाण ।
परभवमुक्ति तणाफल लहिये, ए तपने परमाण ॥३॥
थिर थापीरे चतुर्विध सघतणो अधिकार ।
भरुवच्छ प्रमुख नगरादिक कियो विहार ॥
विहार करी प्रतिबोध्या स्रावक, पचसया, परिवार ।
कार्तिक सेठ जित शत्रुराजा, सुव्रत नामकुमार ॥
तीस सहस वरप आऊखो पाली, पाली जग दयासार ।
श्री सम्मेत शिखर परमेश्वर, केरा पहुंता मुक्तिमझार ॥४॥
इम पचकल्याणक, थुणया त्रिभुवनताय ।
श्रीमुनिसुव्रतस्वामि, बीशमा जिनवरराय ॥
बीशमा जिनवरराय जगतगुरु, भयभजन भगवत ।
निराकार निरजन निरुपम, अजर-अमर अरिहत ॥
श्रीजिनचंद्र विनेय शिरोमणि, सकल चद गणि शिष्य ।
वाचक समय, सु दर इम पभणे, पूरो मन जगीस॥५॥इति॥

---

## ॥ २ एकमका स्तवन पखवासे का ॥

एकम जीव एकेलो आयो फिर एकेलो जासी ।
प्रभुभजन की करलो खर्ची, आगे ही सुखपासी ।
चतुरनर ज्ञानविचारो, चतुरनर ? अर्थविचारो ।
अब बीतो पखवाड़ो ॥ चतु. ॥ ॥ टेर ॥

बीजतणा दोय जन्म मरण का, दोनों दुःख छे पूरा ।
दानशीयल तप भाव करीने, मुक्ति पहुंता शूरा ॥२॥
तीजतणा तीनों ही गुप्ति, मन वच काया धारो ।
पांच सुमति सैंठी कर राखो, ज्यां शिवपुर अवधारो ॥३॥
चोथ चोकड़ी लारेलागी, क्रोध-मान-मद-माया ।
इससे जीत्या उत्तम प्राणी, अविचल पदवी पाया ॥४॥
पांचम पांचों ही इंद्रिवश कर राखो, विषय स्वाद निवारो ।
शुभध्यान हृदय में धरतां, भव-भवमें निस्तारो ॥५॥
छठतणी छ लेश्या जाणो, पद्म शुक्ल छे भारी ।
ए ध्यावे कोई पुण्यवंत प्राणी, तिरिया बहु नरनारी ॥६॥
सातम सातों ही समुद्र धातुछे, तिणरा भेद पीछाणो ।
चेत सके तो चेतरे प्राणी ! आय मिल्यो छे टांणा ॥७॥
आठम आठोंही कर्म सबल है, कोईक उत्तम जीत्या ।
कर्मों रे वश कदेई न पड़ीया, सदा रह्या निःचिंत्या ॥८॥

नम तणा नव तत्त्वो भारी, नव पद नवकर वाली।
दर्शन-ज्ञान-चारित्र तप करी ने, भव-भव फेरा टाली ॥९॥
दशम दशोंही प्राणतणा सुख, त्यागे सो वैरागी।
निद्रा-विकथा दूर निवारो, प्रभुजी से लय लागी ॥१०॥
इग्यारस इग्यारे पडीमा, उत्तम श्रावक धारे।
देहीज पर मोह न राखे, परभव पार उतारे ॥११॥
बारस बारह व्रत विचारी, पडिकमणो सुद्ध कीजे।
सुद्ध मन सामाइक करने, दान सुपात्रे दीजे ॥१२॥
तेरसरे दिन तेरे काठिया, लारे लागा आवे।
ज्ञानी होय सो नहीं ठगावे, गाफिल गोता खावें ॥१३॥
चवदश है गुण ठाणा चवदे, उपरला छे भारी।
इन्द्रिय तणा जे स्वाद चाखे, नीची ममता धारी ॥१४॥
पूनम पनरे कर्मादान सु, अलगा रहेजो भाई।
पनरे जोग मना कर राखो, ज्यासुवरे ला कमाई ॥१५॥
यो संसार है हाटको मेलो, ज्या आमी, त्या जामी।
चेत सके तो चेत रे प्राणी, आगे ही सुख पामी ॥१६॥
जैन धर्म हृदय मे धरनां, शंका मूल मत आणो।
डूंगरसी कहे कर जोडीने, भव-भव फेरा टालो ॥१७॥

— ० इति ० —

## ॥ बीज का स्तवन ॥

रागः—गोपीचन्द लडका

महावीर जिनंदा नमन करूं रे सच्चे भाव से (टेर)

बीज दीवस सुन्दर जिनराया, श्रीमुख से फरमावें ।
जे नर सुधमन से आराधे, परमानंद पद पावे जी ॥महा१॥

बीज दिने उत्तम कल्याणक, पंच हुवे श्रीकार ।
वर्द्धमान शासन जिनराया, बोलें आनन्दकार जी ॥२॥

सुमतिनाथ अरनाथ केरे, च्यवन कल्याणक जाण ।
वासुपूज्य शीतल जिनंदरे, पाये केवल ज्ञान जी ॥ ३ ॥

शीतल मुक्ति पद को पायो, बीज दिवस सुखकार ।
अतित अनागत गिनते भविजन, फल अनंत अपार जी ॥४॥

वीर प्रभु ने धर्म दिखाया, श्रावक और अनगार ।
धर्मशुक्ल दोयध्यान निरंतर, ध्यावो जयजयकार जी ॥५॥

बीज दिवस के चंद्रोदय के, दर्शन करे संसार ।
चडतीकला दिन-दिन वधेभवि, बीजदिवस जगसारजी ॥६॥

दो महीने लघु से आराधो, जाव जीव उत्कृष्ट ।
दोय वर्ष दोय मास से, बीज करो शुभ दृष्टी जी ॥७॥

बीज पर्व के तप करने से, नष्ट होय दोय बंध ।
राग द्वेष शत्रु हटेरे, मिट जावे भवफंद जी ॥ ८ ॥

चौविहार उपवास करीने, आराधे शुभ पर्व।
मनवांछित सबही फले भवि, पावे सुख निधि सर्व जी ॥९॥

धन शासन जिन राजका रे, जगजीवन आधार।
वर्द्धमान जिनराय को जी, वंदुं वारवार जी ॥१०॥

सुखसागर भगवान हो, त्रैलोक्यनाथ हितकार।
आनंद रत्नाकर कहेजी, वीज दिवस मनुहारजी ॥११॥

---

## ॥ सीमंधरजी का. ॥

सीमंधरजी ने वंदना, नित होय जो हमारी जी।
मनवच काया शुद्ध थी, सेवा चाहूँ तुम्हारी जी (टेर)

इण तो आरो पंचमो, तिहां चोथो आरो जी।
आप तो सुखडा भोगवो, अमने कौन संभाले जी ॥ १ ॥

आप रहो विदेह क्षेत्र मे, हूं तो भरते बैठो जी।
मन नी तो इच्छा घणी, आप प्रभुजी ने भेटूं जी ॥२॥

बीच दिया पारखी, कोई लब्धि न दीसेजी।
आप प्रभु पद भेटवा, मुझ मनडो उमायो जी ॥ ३ ॥

माटा डूंगर आंतरा, वली नदियो नाले जी।
किम कर आउं साहिबा, मुज हुंस घणेरी जी ॥ ४ ॥

दूजतणा तुं चांदला, दीजे साख हमारी जी।
जाय पहुंचाड़े वंदना, कहो नाथ संभाले जी ॥ ५ ॥

श्री श्रेयांसकुल चंदलो, माता सत्य की राणी जी।
रुखमणी राणी नो वालहो, लछी नवल नगीनो जी ॥६॥

सोवन वर्ण शरीर छे, धनु पांचसे प्रमाणो जी।
चौरासीलाख पूर्वनो, आउखुं गुण-ज्ञान विसालोजी ॥७॥

चौतिस अतिशय शोभता, वाणी गुण पैंतीसे जी।
प्रभुजी ने संभारतां, मुझ मनडुँ हींसे जी ॥ ८ ॥

सुपना मांहें प्रभुजी मिल्या, मुझ भयो आनंदो जी।
सुर सागर मुनि इम कहै, साधु भरते आनंदो जी ॥९॥

## ❋ श्री सीमंधर जिनस्तवन ❋

चांदलिया संदेशो जिनवर ने कहे रे,
इतरो ओ काम करे अविसार रे।
बारे पर्षदां जिनवर ओलगेरे,
श्री सीमंधर—जग आधार रे ॥टेर.॥

सोवन वर्ण शरीर सोहामणो रे,
मोहन मूर्त्ति महिमावंत रे।
जग में सुयश घणो सहु को जपे रे,
भेटीस ते दिन धन्य भगवंत रे ॥१॥

साहिब दुःख अनंता मैं सह्या रे,
हूँ भमीयो गमियो छूं भव आल ।
शरणे राखीजो निज सेवका रे,
तो विना कोई न दीनदयाल रे ॥२॥

इतरा दिवस लग भूलो थको रे,
सेव्या तो होसी सुर केई करे ।
ते अपराध खमीजो माहरा रे,
मोटा तो वचे म्हन अनेक रे ॥३॥

हिवे एक तारी कीधी एहवी रे,
तो विना अवर नमना खम रे ।
सुरतरु फल छोडीने तुच्छना रे,
खावानी केम आवे हुंस रे ॥४॥

झगडो तो नेह घणो ही जालवो रे,
जावे आरंभ करता प्रीत रे ।
सम विषमी पग न गणे वाटडी रे,
नवला स्नेही नवली रीत रे ॥५॥

मनडो चपल सुख तनु आलसी रे,
कर्म कठिन सबली अन्तरायरे ।
पाप किया केईभव पाछला रे,
मन रेतुं किम मेलो थाय रे ॥६॥

वालेसर ! सांभल मुझ विनति रे,
मारे तो तुंहीज सज्जन सेण रे।
हिवड़ा भीतर तूं सज्जन वसे रे,
ध्यान धरूं समरूं दिन रेण रे ॥७॥

कोई कहे छे मन तन माहरो रे,
कोई कहे छे जीवन प्राण रे।
मारे तो तुझ विन कोई नहीं रे,
जिन भावधरी इम जाण रे ॥८॥

नयने निरखीस मूर्त्ति ताहरी रे,
ते दिन सफल गणीस महाराज रे।
सनमुख करशुं प्रभुमुख वातड़ी रे,
छोडी पर निज मन नी लाज रे ॥६॥

देवों न दीधी मुझने पांखड़ी रे,
उडी मिलूं जिनजी तुझ आय रे।
मनरा मनोरथ मन में रह्या रे,
किण आगल कहूं चित्त लाय रे ॥१०॥

तारे तो मुझ पाखे सही रे,
पर म्हारे तो तुझ विन नहीं सरंत रे।
जलधर सारो मोरा साहिबा रे,
मेह विना मोर किम रहंत रे ॥११॥

चांदो गगन सरवर आहुणो रे,
दूर थकी पण करे विकाश रे।
जेह जीनों रे मनमा वशे रे,
तेह सदा ही तेहने पासरे ॥चा-१२॥

दूर थकी मानीजो वंदनारे,
म्हारी अह ऊगमते सूररे।
महिर करीजो सेवक उपरेरे,
मुझ ने राखीजो राज हजूर रे ॥चा-१३॥

केई अपच्च साहिब शुं कहूंरे,
कहता न आवे मनमें काणरे।
श्री सीमधर तूं जाणे मही रे,
श्रीमोहनगणिजिन हर्ष सुजाणरे ॥चा-१४॥

---

## ॥ श्री सीमंधर स्तवन ॥

श्री सीमंधर साहिबा

साहिब तुम प्रभु देवाधि देव,
सनमुख जोनोने म्हारा साहिबा।
साहिब मन शुद्ध करूं थारी सेव,
एक वार मिलो नी म्हारा साहिबा॥१॥

साहिब सुख दुःख नी वातों,
म्हारे अतिघणी साहिब ।
किण आगल कहूं नाथ
केवल ज्ञानी प्रभु जो मिले—
साहिब तो थाऊं हूं रे सनाथ ॥२॥

साहिब भरत क्षेत्रमां हूं अवतर्यो,
साहिब ओछूं छे एटलुं पुण्य ।
ज्ञानी नो विरह पड्यो आकरो,
साहिब ज्ञान रह्यो अति न्यून ॥३॥

साहिब दश दृष्टांते अति दोहिलो,
साहिब उत्तम कुल सोभाग ।
पाम्यो पण हारी गयो,
साहिब रतन उड़ायो काग ॥४॥

साहिब षट्रस भोजन म्हेंता किया,
साहिब तृप्ती न पाम्यो लगार ।
हूं रे अज्ञानी अनादि नो,
साहिब भूलों नी भूल गमाय ॥५॥

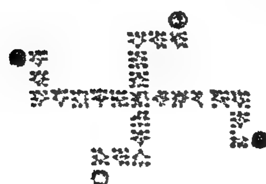
साहिब मोहथी मुझने घेरीयो,
साहिब रागथी कियो मुझने अंध।
क्रोध थी काई जाण्यो नहीं,
साहिब एले गमायो जन्म ॥६॥
साहिब धन मेलावण धसमस्यो,
साहिब तृष्णा रो नहीं आयो पार।
लोभ थी लटपट बहु कर्या,
साहिब नहीं जाण्यो पुण्य ने पाप ॥७॥
साहिब सज्जन कुटुम्ब धन मेलव्यो,
साहिब तिण दुःख दुखियो थाय।
जीव अकेलो कर्म जुवा जुवा,
साहिब दुःखडो ए महीयोरे न जाय॥८॥
साहिब जमीन उपर शुभ अशुभ वसे,
साहिब तुमे करो रवि प्रकाश।
हूं रे अज्ञानी अनादि नो,
साहिब आपोनी समकित वास ॥९॥
साहिब हूं वसुं भरत ने छेडले,
साहिब तुमे वसो महा विदेह मझार।

दूर थकी करूं वंदना,
साहिब मानीजो जग गुरु तात ॥१०॥

साहिब मेह वरसे जेम वाड़ में,
साहिब वरसे छे ठामो जी ठाम ।
शुभ अशुभ नहीं लेखवे,
साहिब एरे मोटों नो स्वभाव ॥११॥

साहिब तुम पासे देव घणा वसे,
साहिब एक मोकलो मारी पास ।
मुख नो संदेशो म्हारो सांभले,
साहिब सहज सरे मोरा काज ॥१२॥

साहिब हूं तुमरे पगनी मोजड़ी,
साहिब हूं तुम चरणो नो दास ।
ज्ञान विमल सूरि इम भणे,
साहिब राखः ने तुमारे पास ॥१३॥



## ॥ श्री सीमंधर जी का वड़ा स्तवन ॥

मारी विननडी अवधारो साहिब ! सीमधर महाराज (टेर)

त्रिभुवन साहिब अर्ज सुणीजो,
दर्शन दीजो आज ।
दर्शन दीजो महिर करीजो,
अरज सुणीजो राज ॥मारी. ॥१॥

आप रम्या महाविदेह खेतरमाँ,
हूं छूं भरत मझार ।
ओ मेलो किम होवे साहिब,
एहीज सबल विचार ॥मा. ॥२॥

भरत विचाले परवत आडो,
नामे वैताढय सार ।
पचीस जोजन को ऊचो छे प्रभु,
पचास जोजन विस्तार ॥मा. ॥३॥

गंगा सिंधु दोनूं नदियाँ,
आडी छे विस्तार ।
सहस अठावीस बीजी नदिया,
ए बेहू नो परिवार ॥मा. ॥४॥

इण आगल छे परवत आडो,
चुल्ल हिमवंत नाम ।
एक सहस वली बावन जोजन,
बार कला अभिराम ॥मा. ॥५॥

खेतर हेमवंत वली आडो,
जुगल्यां केरो वास ।
इकवीश सो वलि पांच जोजन,
पांच कला सुविलास ॥मा. ॥६॥

रोहिता ने रोहितासा नामे,
नदियां छे असराल ।
छपन्न सहस वलि बीजी नदियों,
आऊं केम दयाल ॥मा. ॥७॥

महा हिमवंत परवत आडो,
मोटो अति विस्तार ।
चार सहस दोय सो दश जोजन,
दश कला मनुहार ॥मा. ॥८॥

आठ सहस शत च्यार अनोपम,
इकवीश जोजन तास ।

एक कला वलि रूप अनोपम,
खेतर छे हरी वास ॥मा. ॥९॥
हरी कताने हरित से लीला,
नदिया छे परतक्ष ।
बीजी नदियां आडी छे प्रभु,
सहस बार एक लाख ॥मा. ॥१०॥
परवत निपध छे वलि आडो,
जोजन वलि विस्तार ।
सोल सहस शत आठ बयांलीस,
दोय कला मनुहार ॥मा. ॥११॥
खेतर छे वलि जुगल्यॉ केरो,
देवकुरू इण नाम ।
ते पण जोयण बहु विस्तारे,
पोलो छे सुणो स्वाम ॥मा. ॥१२॥
सीता नामे नदी वडेरी,
सब नदियों सिरदार ।
पाच लाख वलि बीजी नदिया,
अने बत्तीस हजार ॥मा ॥१३॥

लाख जोजन को मेरु परबत,
नामे सुदर्शन सार ।
गजदंता वलि च्यार वीचमें,
आऊं ! केम कृपाल ! ॥मा. ॥१४॥

वनगिरि ने परवत बहुला,
नदियां ओघट घाट ।
किण विध आऊं सुगुणा साहिब,
मारग विषमी वाट ॥मा. ॥१५॥

कंचन गिरि वखारा परवत,
गजदंता गिरि राय ।
भद्र शाल वन मारग वीचमें,
लागे केम उपाय ॥मा. ॥१६॥

क्यां मुझ देश छे भरत खेतर,
क्यां पुखलावती जिनराज ।
ओ मेलो किम होसी साहिब,
तारण तरण जिहाज ॥मा. ॥१७॥

निशदिन मारे तूं हीं आलंबन,
वसियो हृदय मझार ।

भव दुःख भंजन तू ही निरंजन,
करुणा कला भंडार ॥मा. ॥१८॥

मन वांछित सुखसंपत्ति दाता,
प्रभु साहिब छो खास ।
मुझ ने सेवक साचो जाणी,
पूरो मन नी आस ॥मा. ॥१९॥

खरतर हरख गुरु सुपसाये,
रूपचंद गुण गाय ।
अगर चंद की यही विनति,
तारो दीन दयाल ॥मा. ॥२०॥

संवत् अठारसे इकवीसे,
पोष वदी शुभ मास ।
बीजभद्र बुधवार अनोपम,
जिन पदवंदन भास ॥२१॥



## ॥ सीमंधरजी का स्तवन ॥

मनडोते मारो मोकले मारा व्हालाजीरे,
शशीधर साथे———संदेश,
जईने कहेजो मारा व्हालाजीरे।
भरतनो भक्तने तारवा. मा.
एक वार आवोने आ देश जई ने ॥१॥

प्रभुजी वसे पुष्कलावती, मा.
महाविदेह क्षेत्र मझार जईने।
पुरीराजे पुंडरीक गिणी, मा.
जिहां प्रभुनो अवतार तार.। जई ॥२॥

श्री सीमंधर साहिबा, मा.
विचरंता वीतराग. ।जई.
पड़िबोहे बहुप्राणी ने, मा.
तेहनो पामे कुणताग, ।जई. ॥३॥

मनजाणे उडी मिलुं, मा.
पण पोताने नहीं पांख. ।जई।
भगवंत तुम जोवा भणी, मा,
अलजो धरेछे बे आंख ॥४॥

दुर्गम मोटा डुंगरा, ।मा.।
नदी नाला नो नहीं पार. ।जई.
घाटी नी आंटी घणी मा,
अटवी पंथ अपार, ।जई. ॥५॥

कोडी मोनैये कापीऊं, ।मा.।
कगनारो नहीं कोय, ।जई.।
कागलियो केम मोकलुं, ।मा.
होंशतो नित्य नवली होय ।ज.। ॥६॥

लखू जे जे लेखमा, ।मा.।
लाखों गमे अभिलाष ॥ज.।
तमे लेखमा ते लहो, ।मा.।
मुझ मन पूरेछे आश, ॥मा. ॥७॥

लोकालोक स्वरूपना, ।मा.।
जगमा तुमे छो जाण, ।ज.।
जाण आगे शुं जणावीये, ।मा.।
आखिर अमे अजाण, ॥ज. ॥८॥

वाचक उदयनी विनति, ।मा.।
गणधर कह्योरे सदेश, ।ज.।

मानीलेजो वंदना, ।मा.।
वसतां दूर विदेश, ॥ज. ॥९॥



## ॥ श्री सीमंधर का स्तवन ॥

श्री सीमंधर साहिबा, मुझ अंतर जामी ।
पूर्व विदेह विराजता, त्रिभुवन जन स्वामी ॥१॥
प्रभु मुखचंद्र सोहामणो, दीठाँ दुःख जाये ।
मोह संताप मिटे सही, शीतलता पाये ॥२॥
मुझ मनड़ो ऊमाहीयो, तुम दर्शन काज ।
वयण सुधारस तिमवली, सुणवा जिनराज. ॥३॥
मनना संशय मेटवा, मुझ ऊलट भाव ।
परतिख प्रभु भेटयां विना, किम बने बनाव ॥४॥
दूर देशातर में रहूं, करु कोडी विसास ।
विचमारग विपमो घणो, पहुँचूँ किम पास. ॥५॥
दूर थकी प्रभु निशदिने, धरू ध्यान तुमारो ।
देव अवर सेवु नहीं, निश्चे अवधारो ॥६॥
मोह महाभड़ मुजनड़े, एहने प्रभुवारो ।
निज सेवक जाणी खरो, भव सायर तारो. ॥७॥

महाजन टोली माँ नन्यो, एह विनति टाणो ।
पण मुझ इन्छा एहवी, नित्य नाह पीछाणो ॥८॥
अमृत सम प्रभु धर्मथी, नित जयजय कार ।
जाणो नमा कल्याण नी, वंदना वार वार ॥६॥

## ॥ सफल संसार श्रीमंधरजी का ॥

सफल संसार अवतार ए हूँ गणू,
स्वामी सीमधरा तुम्ह भक्ति भणु ।
भेटवा पायकमल, भावहियडे घणो,
करीय सुपसाय जे निनवु ते सुणो. ॥१॥
तुम्ह सु कइ अरिहत शु राखीये,
जिस्यो अछे तिस्यो करजोडीकरी भाखिये ।
अति सबल मुझ हिये मोहमाया घणी,
एक मनभक्ति किम करुँ त्रिभुवन धणी ॥२॥
जीन आरति करे नम नवी परिगडे,
रीस चटको चढे मोह वैरी नडे ।
नयण रस वयण रस काम रस रसियो,
तेम अरिहंत तूं हियडे नवि वसियो ॥३॥

दिवसने रात हियड़े अनेरो धरुं,
मूढमन रींझवा वलिय माया करुं ।
तूंही अरिहंत जाणे जिस्यो आचरुं,
जेमकर तेम संसार सागर तरुं ॥४॥

कम्म वसी सुक्ख ने दुक्ख जेहूं सहुं,
मन तणी बात अरिहंत किणने कहूं ।
करी दया करी मया देव करुणापरा,
दुक्ख हर सुक्ख कर स्वामी सीमंधरा. ॥५॥

जाण संयोग आगम वयण पिणसुणुं,
धर्म न कराय प्रभु पाप पोतेघणुं ।
एक अरिहंत तूं देव बीजो नहीं,
एह आधार जग जाणजो अम्ह सही. ॥६॥

धण कणय माय पिय पुत्त परियण सहूं,
हस्यो बोल्यो रम्यो रंग रातो रहुं ।
जयो जयो जगगुरु जीव जीवनधरा,
तुम समो कोइ नहीं अवसर वालेसरा.॥७॥

अमिय समवाणी जाणूं सदा सांभलूँ,
बार वर पर्षदा मांही आवीमिलूं ।

चित्त जाणुं सदा स्वामी पाय ओलगूं,
किमकरुं ठाम पुंडरी गिणी वेगलूं ॥८॥
मोलीडा भक्ति तूं चित्त हारे किशे,
पुण्य सयोग प्रभु दृष्टिगोचर हुशे ।
जेहने नामे मन वयण तन उल्लसे,
दूरथी टूकडा जेम हियडे वसे. ॥९॥
भलो भलो एणी ससार सहु ए अछे,
स्वामी सीमंधरा ते सहु तुम पछे ।
ध्यान करता थका सुपनमाही आनि मिले,
देखिये नयण तो चित्त आरति टले. ॥१०॥
स्वामि सोहामणा नाम मनगहगहे,
तेह सु नेह जे वात तुमची कहो ।
तुम पाय भेटवा अतिघणो टलवलू,
पख जो होय तो सहीय आनी मिलूँ ॥११॥
मेरु गिरि लेखनी, आभ कागल करुं,
खीर सागर तणा दूध खडिया भरु ।
तुम मिलवा तणा स्वामि सदेसडा,
ड्रपण लखिय न सके अछे एवडा ॥१२॥

आपणे रंगभरी वात मुख जेटली,
ऊपजे स्वामी न कहाय मुख तेटली ।
सुणो सीमंधरा राज राजेश्वरा,
लाडने कोड प्रभु पूर सवी माहरा ॥१३॥

पुव्व भवि मोहवश नेह हुवे जेहने,
समरीये एणी संसार नित तेहने ।
मेहने मोर जिम कमल भमरो रमे,
तेम अरिहंत तूं चित्त मोरे गमे ॥१४॥

खरूं अरिहंत नुं ध्यान हियडे वस्युं,
पापहुं पाप हिव रहिय करसे किस्युं ।
ठाम जिम गरूड़वर पंखी आवे वही.
तत खिण सर्पनी जाती न सके रही ॥१५॥

पापना कज्ज सावज्ज सहु परि हरी,
स्वामी सीमंधरा तुम पय अणु सरी ।
शुद्ध चारित्र कहिये प्रभु पाळसुं,
दुक्ख भंडार संसार भय टालशुं ॥१६॥

तुम्ह हूं दास हूं तुम्ह सेवक सही,
एह मैं वात अरिहंत आगल कही ।

एवडी माही हरी भक्ति जाणी करी,
आप जो बापजी सार केवल सही ॥१७॥

॥ कलश ॥

इम ऋद्धि वृद्धि समृद्धि कारण,
दुरित वारण सुख करो ।
उवज्झाय नर श्री भक्ति लाभे,
थुण्यो श्री सीमंधरो ॥

जयो जयो जग गुरु जीव जीवन,
करो स्वामी मया घणी ।
कर जोडी वली वली विनवुं,
प्रभु पूर आशा मन तणी॥ १ ॥

॥ तीज के स्तवन ॥

आदि देव अरिहतजी, लीधो संयम भार ।
छठ छठ करता पारणो, पहुंता गोचरी ठाम ॥
देवाधिदेव श्री आदि देव जिन ॥ टेर ॥

पांच सुमति सुमता थया, तीन गुप्तिनाजाण ।
समता रस में झीलता, धरता ध्यान सुध्यान ॥१॥
ज्यां ज्यां प्रभु पगला धरे, त्यां त्यां करुणा लोक ।
कई राणा कई राजवी, केई लावे धनने रोक ॥दे.॥२॥
केई भूषणमणि में जड़या, केई लावे उरना हार ।
हय गय रथने पालखी, केई लावे अचल तुखार ॥दे.॥३॥
अतिअणियाली लोयणी, कोयल सरिखो कंठ ।
अस कंवरी आगलधरी, कहे परणोनी भगवंत ॥दे.॥४॥
प्रभुजी तो लेवे नहीं, जोवे निरवद्य आहार ।
किणहिक समेपखंता, करता उग्र विहार. ॥दे.॥५॥
इम विचरंता आवीया, गजपुर नगर मझार ।
आया प्रभु देखीकरी, श्री श्रेयांस कुमार ॥दे.॥६॥
जातिस्मरण ज्ञान थी, त्रण प्रदक्षिणा देय ।
आय प्रभु वंदी करी, पावन कीजे मुझ गेह ॥दे.॥७॥
वर्षीतप ने पारणे, पहुँता श्री जिनराय ।
इक्षु रस वहोरावीयो, श्री श्रेयांस कुमार ॥दे.॥८॥
पांचदिव्य प्रगट थया, अहो दान ! महोदान !
वर्षी कोड़ी कनकनी, साढी बारे प्रमाण ॥दे.॥९॥

पुष्प नीर वृष्टि थई, पृथवी थई सुवास ।
देवदुंदुभी वाजतां, गाज रहयो आकाश ॥दे.॥१०॥
दान शील तप भावना, जगमें राख्यो नाम ।
प्रभुजी केवल सुखलही पहुंता शिवपुर ठाम ॥दे.॥११
श्री इंद्रपुरमण्डणों, नाभि नरेश्वर नंद ।
याचक श्रीजिन चंदनो, शीस नमावे तिचंद ॥दे.॥१२॥

---

## ॥ दुजा ऋषभ जिन स्तवन ॥

ऋषभ जिनेश्वर दिन कर साहिब,
निनतडी अवधारोरे जगना तार ।
मुझ तारो नी कृपानिधि स्वामी,
जग जसवाद प्रगट छे ताहरो ।
अविचल सुखदातारोरे ॥ज.॥१॥
निजगुण भोगी पर गुण लोप्ता,
आतम शक्ति जगाई रे. ॥ज.॥
अविनाशी अविचल अविकारी ।
शिव वासी जिनरायारे ॥ज०॥२॥
इत्यादिक गुण श्रवणे सुणीने.
हूं तुझ चरणे आयोरे ॥ज०॥

तुम रींझावण हेते ततखिण ।
नाटक खेल मचायोरे. ।ज०॥३॥

काल अनंतो रहयो एकेंद्रिय,
तरु साधारण पामीरे ॥ज०॥

वर्ष संख्याता वलि विकलेंद्रिय ।
वेष धर्या दुःख धामीरे ।ज०॥४॥

सुर नर–तिरि-वलि नरक तणीगति,
पंचेन्द्रिय पणो धार्यो रे ॥ज०॥

चोवीसे दण्डक मांहि भमियो ।
अवतो हूं पिण हार्यो रे ।ज०॥५॥

भव नाटक नित प्रति कर नव-नव,
हुँ तुझ आगल नाच्योरे ॥ज०॥

समरथ साहिब सुरतरु सरिखो ।
निरखी तुझने जाच्यो रे ।ज०॥६॥

जो मुझ नाटक देखी रीझया,
तो मुज वंछित दीजे रे ॥ज०॥

जो नवी रींझया तो मुझ भाखो,
वलि नाटक नवी कीजेरे ॥७॥

लालच धरी हुं सेवा सारुं,
तुं दुःखडा नवी कापेरे ॥ज०॥
दाता सेती सूम भलेरो ।
वहीलो उत्तर आपेरे ॥ज० ॥८॥
तुझ सरिखा साहिब पिण माहरे,
जो नवी कारज सारोरे. ॥ज.॥
तो मुझ करम तणी गति अवली,
दोष न कोई तुमारो रे. ॥ज०॥९॥
दीन दयाल दया करी दीजे,
सुध समकित सही नाणीरे ॥ज.॥
सुगुण सेवकना वाछित पूरो ।
एहीज गुण मणि खाणीरे ।ज.॥१०॥
संवत अठारे गुण चालीसे,
जेठ सुदी सोमवारो रे ॥ज०॥
लालचद प्रतिपद दिन भेटया ।
बीकानेर मझारो रे. ।ज०॥११॥

---

## ॥ तीजा. शत्रुंजय मंडण ऋषभ जिन स्तवन ॥

पाटोधर पाटिने पधारो (राग.)

सुण सुण शत्रुंजय गिरि स्वामी,
जग जीवन अंतर जामी, हूं तो अरज करूं शिरनामी ।
कृपानिधि विनति अवधारो, भव सायर पार उतारो ।
निज सेवक वान वधारो, जिनेसर विनति अवधारो ॥टेर॥
प्रभु मूर्ति मोहन गारी, निरख्यां हरखे नरनारी ।
जाऊं वारी हुं वार हजारी ।कृ.।१।
हवे किसीय विमासण कीजे, मुझ उपर महिर धरीजे ।
दिल रंजन दरिशन दीजे ॥कृ०॥२॥
आज सयल मनोरथ फलिया, भव भवना पातिक टलिया ।
प्रभु जो मुझ सन्मुख मिलिया ।कृ.॥३॥
समर्यां संकट टली जावे नव नव नित मंगल थावे ।
मुझ आतम पुण्य भरावे ॥कृ०॥४॥
करजोड़ी विनति कीजे, केशर चंदन चरचीजे ।
दिन धन धन तेह गणीजे ॥कृ०॥५॥
प्रभु दरस सरस लही तोरो, अति हरखित हुओ चित मोरो ।
जिम दीठां चंद चकोरो ॥कृ॥६॥

परतिख प्रभु पचमे आरे, विषम महाभय संकट वारे ।
सहु सेवक काज सुधारे ॥क्र०॥७॥
सेवो स्वामी दास सुखदाई, कमणा न रहे घर कांई ।
वाधे संपत्ति शोभा सवाई ॥क्र०॥८॥
नामिराय कुलाम्बरचंदा, भवि, जनमननयन आनंदा ।
ओलगे सुर असुर सुरिंदा ॥क्र०॥९॥
जयकारी रिषभ जिनन्दा, प्रहसमे धरि परम आनन्दा ।
वन्दे श्रीजिन भक्ति सूरिन्दा ॥क्र.॥१०॥

---

## ॥ आदिनाथ जी का स्तवन ॥

सुण जिनवर शेत्रु जा धणीजी, दासतणी अरदास ।
तुझ आगल बालक परेजी, हूं तो करु विखासरे
जिनजी मुझ पापी ने तार ॥
तूँतो करुणा रस भर्योजी, तूँ सहुनो हितकाररे. जिन मुझ-१
हूँ अवगुण नो ओरडोजी, गुण तो नहीं लवलेश ।
परगुण पेखी नवी सकु जी, केम संसार तरेसरे जिनजी-२
जीवतणा वध में कर्याजी, बोल्या मृषावाद ।
कपट करी परधन हर्याजी, सेव्या विषय संवादरे जिनजी-३

## ॥ आदि जिन स्तवन ॥

(राग) बोल वंदे मातरं

आदि जिनवर जी अनादि, कर्म मल हर लीजिये।
दास हूं अरदास मेरी, ध्यान में धर लीजिये ॥टेर॥

तीसरा आरा प्रभु वह था, अकर्मक भाव में।
कर्मयुग तब था दिखाया, अब भी दिखला दीजिये ।आ.।१।

आपने नरनारियों को, मोक्ष की दी थी कला।
नाथ अब वैसी कला का, दान दयया कीजिये ।आ.।२।

राजनीति धर्मनीति, के प्रवर्तक आप हैं।
है अनीति छा रही बस, दूर उसको कीजिये ।आ०।३।

राज को रजपुंज माना, भोग माने रोग से।
त्याग का वह पाठ पावन, नाथ सिखला दीजिये ।आ.।४।

वर्षभर रह निराहारी, कर्म को तोड़े प्रभु।
वह सफल तप कर सकूँ, यह शक्ति प्रभु दे दीजिये ।आ.।५।

हाथी हय कन्या रतन मणिके, प्रलोभन आपको
थे चला न सके अचलता, नाथ मुझ को दीजिये ।आ.।६।

भक्त वर श्रेयांस से ले, इक्षु रस पावन किया।
वैसी भक्ति कर सकूं, वैसा लक्ष्य प्रभु दीजिये ।आ.।७।

की तपस्या में क्षमा थी आपने अनुपम प्रभो !
उस क्षमा की साधना को, आज सिखला दीजिये ।आ.।८।

ज्ञान केवल आपने, पाया स्वमाता को दिया ।
शुद्ध उसके अंश का कुछ, दान दाता कीजिये ।आ.।९।

आप सुख सागर प्रभु, भगवान हैं संसार में ।
नाथ निजपद भक्ति के, अधिकार को कुछ दीजिये ।आ.।१०।

हे प्रभो हरिपूज्य गुण, गाया करूँ नित आपका ।
बुद्धिबल वह दीजिये, इस विनति को सुन लीजिये ।आ.।११।



## ॥ आदि जिन स्तवन ॥

भीनासर स्वामी (राग)

आदीश्वर स्वामी त्रिभुवन नामी, अभिरामी अवतार ।
पंचम गतिगामी निजगुणधामी आरामी अविकार रे ।टेर।

हे प्रभु कर्म से पीड़ित हूं मैं, कर्म बड़े विकराल ।
आप अकर्मक भाव के नायक, मेरी करो प्रतिपाल रे ।आ.।१।

घाती अघाती चार चार हैं, हैं उनका विस्तार ।
आतम के गुण आठ उन्हीं पर, ये करते अधिकार रे ।आ.।२।

मिथ्यात्वादिक हेतु सहित जो, किरिया होती खास ।
उस से आतम पड़ता पुद्गल, रूपी कर्म के पास रे ।आ.।३।
शुभ किरिया है पुण्य का कारण, कंचन बेड़ी समान।
पाप अशुभ है लोह की बेड़ी, दुस्सह दुःख निदानरे ।आ.।४।
जीव अनादि कर्म अनादि, उभय अनादि संयोग ।
कनको पलमें पावक जैसे, स्वामी साधा वियोगरे ।आ.।५।
प्रभुगुण जैसे मुझ में भी हैं, सत्तागत गुण आठ ।
व्यक्त करो कृपया प्रभु मेरे, जैसे हुताशन काठरे ।आ.।६।
विघ्न घना घन कर्मवली को, वर्षाधिक तपधार ।
आतम ध्यान सुपावन पवने, आप किया परिहाररे ।आ.।७।
बंध उदय उदीरणा सत्ता, गत मम कर्म अनेक ।
उसपर विजय करूं मैं कैसे,? यह दो नाथ विवेकरे ।आ.।८।
गुणठाणों की महिमा भारी, फरमाई जगनाथ ।
उत्तरोत्तर मैं भी चढ़ पाऊं, जो पकड़ो मुझ हाथरे ।आ.।९।
कर्म प्रवर्तक होकर स्वामी, हुवे अकर्मक आप ।
यह तप त्याग तपोबल बुद्धि, दे दो हे मां बापरे ।आ.।१०।
सुखसागर भगवान परम हरि पूज्य दया कर देव ?
पाऊं अकर्मक तुम पद दर्शन, तो नित साधूँ सेवरे ।आ.।११।

## ॥ आदि जिन स्तवन ॥

मैं तो दीवाना (राग)

प्रभु हाजिर खडे हम तेरे लिये,
तेरे लिये हां तेरे लिए ॥टेर॥

नाभिनृप मरु देवी के नंदन । वदन करे हम तेरे लिये ।१।
हाथी को लावें घोड़ों को लावें, रथको मगावें ।प्र.।२।
कन्या को लावें व्याह रचावें, महल तैयार करें तेरे लिये ।३।
रतनो को लावें मणियों को लावें,
कचन का ढेर करें तेरे लिये ।४।
शाल दुशाले वस्त्र अनोखे, अर्पण करें हम ।५।
यह दुःख हमसे देखा न जावे, दुखिये हैं हम तेरे लिये ।६।
ससार छोडा संयम को धारा । मौनी हुवे प्रभु किसके लिये ।७।
नपोंतप को धारें प्रभुजी, कर्मकलक हरने के लिये ।प्रा.।८।
श्रेयांस आया इक्षु रस लाया,
वह तो उचित था तेरे लिये ।९।
मक्तों ने जाना तब से प्रभुजी, आहार देना तेरे लिये ।१०।
पचदिव्य तब प्रगटे थे भारी, 'हरि' करे जय तेरे लिये ।११



## ४ ॥ चौथ का स्तवन ॥ १

॥ पारसनाथजी का स्त. माता त्रिसला. ॥राग॥

मातावामादे बोलावे जमवा पास ने,
जमवा वेला थई छे रमवा ने चित्तजाय।
चालो तात तमारा बहु थाशे उत्तावला,
वहेला हालो ने भोजनिया ठंडा थाय ॥मा. ॥१॥
मात नुँ वचन सुणीने जमवाने बहु प्रेममुं,
बुद्धि बाजोठ ढाली बैठा थई हुशीयार।
विनय थाल अजवाली लावी ने,
आगल मूकियो विवेक वाटकियों सोहावे थालसभार ॥मा.२॥
समकित सेलड़ी ना छोली ने गड्डा मूकिया,
दान ना दाड़म दाणा फोली आप्या खाश।
समता सीताफलनो, रस पियो बहु राजिया,
जुक्ति जामफल प्यारा आरोगो ने पास. ॥मा. ॥३॥
मारा नानड़िया ने चोखो चित्त नो चूरमों,
सुमति शाकर उपर भावसुँ मेलूँ घीरत्त।
भक्ति भुजिया पिरस्या पास कुमर ने प्रेमसुँ,
अनुभव अथाणा चाखो ने राखो सरत्त. ॥मा. ॥४॥

प्रभुने गुण गुजाने ज्ञान गुंदवडा पिरसीया,
प्रेमना पेडा जमजो मान वधारण काज ।
आपणपणा नी जलेबी जमता मागे भूखडी,
दया दूध पाक अमीरस आरोगो ने आज, ॥मा. ॥५॥
संतोष सीरो ने वली पुण्य नी पोली पिरसीया,
सतेग साक भला छे दातार टीली दाल ।
मोटा मालपुआने प्रभाव नाना पूडला,
विचार वडी वधारी, जमजो मारा बाल, ॥मा. ॥६॥
रुची रायतो रुडा पवित्र पापड पिरसिया,
चतुराई चोखा आप्या ओमा मण भरपूर ।
उग्र इंद्रिय दमन दूध तप तापे तातुं करी
प्रीते पिरस्यु जमजो जगजीवन महनूर ॥मा ॥७॥
प्रीति पाणी पीधा प्रभावती ना हाथ थी,
नव तबोल लीधा शियल सोपारी साथ ।
अक्कल एलायची आपीने माता मुख वदे,
त्रिभुवन नाथ नमजो जगजीवन जगनाथ ॥८॥
प्रभुना थाल तणा जे गुण गावे ने सामले,
भेद भेदान्तर समझे ज्ञानी ते कहेवाय ।

गुरु गुमानविजय नो शिष्य कहे शिर नामिने.
सदा "सौभाग्य विजय" गावे गीत रसाल ॥६॥



## ॥ पारसनाथ जी का. ॥

(राग—सारंग)

पारस! तोरी निरखण दो असवारी,
जिणंदा तोरी जोवण दो छबी प्यारी।
अरज सुणो प्रभु मारी ॥पा.॥टेर॥

काशी देश वणारसी नगरी, दिन दशमी जयकारी।
वामाराणीनी कुखे थी प्रभुजी, जन्म लियो सुख कारी-१
छप्पन दिग कुमरी हुलराये, हिये हरष अति भारी।
चौसठ इन्द्र करे वली महोत्सव, तरवा भवजल पारी-२
एक क्रोड़ साठ लाख सोहे छे, कलश महा मनोहारी।
बारे जोजन पहोला पेटे, पचीस जोजन ऊंचाधारी.-३
नीचा ऊंचा जोजन पहोला, निरमल भरियो वारी।
फूल चंगेरीने बावना चंदन, केशर ने घनसारी-४
इण परि ओछव सुरपती कीनो, जोजो सूत्र संभाली।
सुरगिरि उपर पांडुक वन में पांडु शिला अति भारी.-५

अश्वसेन राय ओछव कीनो, दान दियो दिल धारी।
शहर नी श्रेष्ठता जुवे जुगने, बैठा गोखे मझारी.-६
लोक मह पूजा यो लई ने, कमठ पूजणकारी।
प्रभुजी पधार्या देखण काजे नाग जले तिणवारी.-७
काष्ठ फडावी नाग निकाल्यो, संभलाव्यो मंत्र मारी।
समकित लई ने सुरपति हुवा, धरणेंद्र एक अवतारी-८
संवत उगणीशे इकतालीस वरसे, पोष दशमी रटीयाली।
आहोर नगर में ओछव कीनो, संघ सकल बलिहारी.-९
सुंदर मूरती प्रभुनी बिराजे, भविजन कुं सुखकारी।
कीर्ति चंद मम सोहे जगमें, केशरी मुनि जयकारी।
पारस तोरी निरखण दो असवारी ॥पा०॥१०॥

---

## ॥ पारसनाथ जी का स्तवन ॥

भविका श्रीजिन बिंब जुहारो,
आतम परम आधारो रे॥भ.॥श्री.॥टेर॥
जिन प्रतिमा जिनसारखी जाणो, न करो शंका कांई।
आगम वाणी ने अनुसारे, राखो प्रीति सवाई ।भ ।१।

जे जिन बिंब स्वरूप न जाणे, ते कहिये किम जाणे ।
भूला तेह अज्ञाने भरिया, नहीं तिहां तत्त्व पीछाणे रे ।भ.।२।
अंबड़ श्रावक श्रेणिक राजा, रावण प्रमुख अनेक ।
विविधपरे जिन भक्ति करंतां, पाम्या धर्म विवेकरे ।भ.।३।
जिनप्रतिमा बहु भक्के जोतां, होय निश्चय उपगार ।
परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जोजो आर्द्र कुमार रे ।भ.।४।
जिनप्रतिमा आकारे जलचर, छे बहु जलधि मझार ।
ते देखी बहुला मच्छादिक, पाम्या विरति प्रकार रे ।भ.।५।
पंचमें अंगे जिनप्रतिमानो, प्रगट पणे अधिकार ।
सूर्याभसुर जिनवर पूजा, रायपसेणी मझार रे ।भ.।६।
दश में अंगे अहिंसा दाखी, जिनपूजा जिनराज ।
एहवा आगम अरथ मरोड़ी, करीये केम अकाज रे ।भ.।७।
समकित धारी सतिय द्रौपदी, जिन पूजा मनरंगे ।
जो जो एहनो अरथ विचारी, छठे ज्ञाता अंगेरे ।भ.।८।
विजयसुरें जिम जिनवर पूजा, कीधी चित्तथिरराखी ।
द्रव्यभाव बिहुं भेदे कीनी, जीवा भिगमते साखीरे ।भ.।९।
इत्यादिक बहु आगम साखे, कोई शंका मति करजो ।
जिनप्रतिमा देखी नित नवलो, प्रेमघणो चित्त धरजो रे।१०।

चिंतामणि प्रभु पास पसाये, श्रद्धा होयजो सवाई ।
श्रीजिनलाभ सुगुरु उपदेशे, श्रीजिनचद्र सवाई रे ।स.११।

## ॥ पारसनाथ जी का ॥

(राग गरबानी)

जयकारी जिनराज, पुरुषा दाणी रे ।
वामासुत वरदाय, निर्मलनाणी रे ॥ज.॥१॥
पंच कमल प्रभु अंग, निरुपम निरग्यारे ।
तिण कमल मुक्ष मग, अतिशय हरख्यारे ॥ज.॥२॥
वदन महोदय देखी, चद लजाणु रे ।
गगन भमे निशदीश, इम मन जाणु रे ॥ज.॥३॥
सुरमणि ज्युँ सुखकार, नयन निरखे रे ।
हृदय कमल शुनिगाल, थाल ज्युँ छाजेरे ॥ज.॥४॥
प्रभु कर चरण विलोकि, पकज हार्यो रे ।
नागिन निज संताप जलमे धार्यो रे ॥ज ॥५॥
इम सर्वांग उदार, श्री जिनराया रे ।
गाने पुण्य संयोग, साहिब पाया रे ॥६॥

प्रभु गुण अनुभव नीर, संग सुरंगे रे ।
टाल्यो पातक पंक, आतम संगे रे ॥ज.॥७॥
वरस अठार चौत्रीस, वदि वैशाखे रे ।
मनोहर पांचम दिन, सहु संघ साखे रे ॥८॥
नगर महेवा मांहि, पार्श्व जुहार्या रे ।
श्रीजिन चंद मुणींद, वांछित सार्या रे. ॥जय॥९॥



## ॥ पंचमीतप वृहद् स्तवन ॥

प्रणमुँ श्री गुरुपाय, निर्मल ज्ञान उपाय ।
पंचमीतप भणुँ ए, जन्म सफल गिणुँए ॥टेर॥
चौवीशमो जिनचंद, केवल ज्ञान दिणंद ।
त्रिगड़े गहग ह्योए, भवियण ने कह्योए ॥१॥
ज्ञान वड़ो संसार, ज्ञान मुगति दातार ।
ज्ञान दीवो कह्योए, सांचो सर्द सह्योए ॥२॥
ज्ञान लोचन सुविलास, लोकालोक प्रकाश ।
ज्ञान विना पशुए, नर जाणे किशुंए ॥३॥
अधिक आराधक जाण, भगवती सूत्र प्रमाण ।
ज्ञानी सर्वतुए, किरिया देशतुए, ॥४॥

ज्ञानी सासो सास, कर्म करे जे नाश।
नारकी ने मही ए, क्रोड वर्ष कही ए, ॥५॥
ज्ञानतणो अधिकार, बोल्या सूत्र मझार।
किरिया छे सहिए, पण पाछे कहीए ॥६॥
क्रिया सहित जो ज्ञान, हुवे तो अतिप्रधान।
सोनो ने सुरोए, शंख दूधे भर्योए. ॥७॥
महानिशीथ मझार, पंचमी अक्षर सार।
भगवत भाखियोए, गणधर साखियोए. ॥८॥

## ॥ ढाल दूसरी ॥

कलहरा की (राग)

पचमीतपविधि सांभलो, जिमपामो भवपारो रे।
श्री अरिहंत इम उपदिशे, भवियण ने हितकारो रे ॥१॥
मिगसर माह फागुण भला, जेठ आषाढ वैशाखोरे।
इग षट मासे लीजिये, शुभ दिन सद्गुरुनी साखोरे ॥२॥
देव जुहारी देहरे, गीता रयगुरु वदीरे।
पोथी पूजो ज्ञान नी. शक्ति हुवेतो नंदीरे ॥पं.॥३॥
वेकर जोडी भाव सुं गुरुमुख करो उपवासोरे।
पंचमी पडिकमणो करो, पटो पडित गुरु पासोरे ॥पं॥४॥

जिण दिन पंचमी तप करो, तिण दिन आरंभ टालोरे ।
पंचमी स्तवन थुई कहो, ब्रह्मचर्य पण पालोरे. ॥पं॥५॥
पांचमास लघु पंचमी, जीव जीव उत्कृष्टि रे ।
पंच वरस पंचमासनी, पंचमी करो शुभ दृष्टि रे ॥६॥
चोथ करो एकासणो, पंचमी करो उपवासोरे ।
पारणे वलिय एकासणो, कर मन अधिक उह्लासोरे ॥७॥

## ॥ ढाल तीसरी ॥

( राग उह्लाला की )

हिवे भवियणरे, पंचमी उजमणो सुणो ।
घर सारु रे वारु, धन खरचो घणो ॥
ए अवसर रे, आवंतां वलि दोहिलो ।
पुण्य जोगेरे, धन पामंतां सोहिलो ॥
सोहिलो वलिय धन पामंतां धर्म काज किहां वली ।
पंचमी दिन गुरु पास आवी कीजिये काउसग्ग मन रली ॥
त्रण ज्ञान दरिसण चरण टीकी, देई पुस्तक पूजिये ।
थापना पहिली पूज केशर, सुगुरु सेवा कीजिये. ॥१॥
सिद्धान्त नीरे, पंच प्रति वीटांगणा ।

पंच पूठांरे, मसमल सूत्र प्रमुख तणां ॥
पच डोरारे, लेखण पांच मजीसणा ।
चास कूँपारे, कांबी वारुँ वरतणां ॥
वरतणारारु वीजिय कंवली, पांच झिलमिल अति भली ।
स्थापना चारिज पांच ठवणी, मुहपति पड पाटली ॥
पट सूत्र पाटी पच कोथली, पच नवकर वालिया ॥
इणपरे श्रावक करे पचमी उजमणुं उजवालिया ॥२॥
नलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजिये ।
ग्ग साहु गे दान तिहा वली दीजिये ॥
प्रतिमाजी नेरे, आगल ढोवणु ढोवियें ।
पूजा नारे जो जे, उपकरण जोईये ॥
जोईये उपकरण देवपूजा, काज कलश शृंगार ए ।
आरति मगल थाल दीवो, धूप धाणु सार ए ॥
घनसार केशर अगर सुखड, अंग लुहणु दीशए ।
पच पच मघली वस्तु टोनो, शक्ति सुं पच वीशए ॥३॥
पंचमीनारे साहमी सर्व जमाडिये ।
राति जोगेरे गीत, रसाल गवाडिये ॥
इण करणीरे करता ज्ञान आराधिये ।

ज्ञान दरिसणारे, उत्तम मारग साधिये ॥
साधिये मारग एह करणी, ज्ञान लहिये निर्मलो।
सुरलोक ने नरलोक मांहें, ज्ञानवंत ते आगलो ॥
अनुक्रमे केवल ज्ञान पामी शाश्वतां सुख जे लहें।
जे करे पंचमी तप अखंडित वीर जिनवर इम कहे ॥४॥

(कलश)

इम पंचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिनेश्वरो।
मैं थुणयो श्री अरिहंत भगवंत, अतुल बल अलवेसरो ॥
जयवंत श्री जिन चंद सूरिज सकल चंद नमंसियो।
वाचना चारिज समय सुंदर, भक्ति भावे प्रशंसियो ॥५॥

## ॥ पंचमी का स्तवन ॥

॥ मन मोह्यु मारुं मोह्यु प्रभु तारा ध्यानमा ॥

प्रभु सेवो प्रभु सेवो प्रभु सेवा सार है।
पंचम ज्ञान विराजित प्रभु की सेवा सार है।प्रभु।टेर।
चैत वदी पंचमी चन्द्रा प्रभु जगदाधार है।
च्यवन कल्याणक होते फैला, सुख संसार है ॥१॥

श्रावण सुदि पचमी दिन पावन नेमिनाथ का।
जन्म कल्याणक होते घर घर, मगलाचार है ॥२॥
वद वैशाख तिथि पाचम मे कुंथुनाथका।
दीक्षा कल्याणक घर होते, जय जयकार है ॥३॥
कार्तिक वदी पचमी प्रभु तीजे, समवनाथका।
ज्ञान कल्याणक लोक प्रकाशक, परमोदार है ॥४॥
अजित मभव विभु अनंत जिनवर, शिव निर्वाणकी।
चैत सुदी पंचमी तिथि उत्तम, जय श्रीकार है ॥५॥
ज्येष्ठ सुदी पंचमी तिथि तैसे, श्री धर्मेश की।
मोक्ष कल्याणक पुनित परंपर, सुख भंडार है ॥६॥
किरिया पाच निवारी महाव्रत, पांचों धार के।
पच काम गुण आश्रव पांचो रूंधे पार है ॥७॥
पांचों सवर द्वार निर्जग, थानक भावते।
पाच समिति को साधे साधक शुद्धाचार है ॥८॥
पचम ज्ञान प्रकटते पाचों, अस्ति कायको।
पूर्ण रूप जाने विज्ञानी–गुण वलिहार है ॥९॥
ममनायांगे पाच वस्तुएं, वर्णित भावना।
सुखसागर भगवान बतावे, परमाधार है ॥१०॥

'जिनहरि' पूज्य दयामय आज्ञा, तिथि आराधते।
सुमति 'कवीन्द्र' सुयश नित गाते जय जयकार है।११

---

## ॥ छठ का स्तवन ॥

॥ महावीर स्वामी का ॥

वीर जिनेश्वर साहिब मेरा, पार नहीं लहुँ तेरा।
महर करी टालो महाराजजी, जन्म मरणना फेरा हो जिनजी।
अबहूं शरणे आयो ॥१॥
गर्भावासतणा दुःख मोटा, ऊंधे मस्तके रहियो।
मल-मूत्र मांहें लपटाणो, एहवा दुःख मैं सहियो हो।२।
नरक निगोदमां उपन्यो ने चवियो, सूक्ष्म बादर थइयो।
विंधाणो सूई ने अग्र भागे, मान तिहां किहां रहियो-३
नरक तणी अतिवेदना उहन्नसी, सही ते जीवे बहु।
परमाधामी ने वश पड़ियो, ते जाणो तुमे सहु हो-४
तिर्यंचतणा भव कीधा घणेरा, विवेक नहीं लगार।
निशदिन नो व्यवहार न जाण्यो, केम उतराये पार हो-५
देवतणी गति पुण्ये हूं पाम्यो, विषयारसमां भीनो।
व्रतपचखाण उदय नवी आव्या, तानपान मांहें लीनो हो-६

मनुष्य जन्म ने धर्म सामग्री, पाम्यो छूं बहु पुण्ये।
राग द्वेष मांहे बहु भलियो, न टली ममता बुद्धि हो-७
एक कंचन ने बीजी कामिनी, तेहसु मनडुं बांध्युं।
तेहना भोग लेवाने हूं शूरो, किम करी जिन धर्म साधुं हो-८
मननी "दोड" कीधी अति झाझी, हूं छूँ कोक जड जेवो।
कलिकलि कल्प में जन्म गुमायो, पुनरपि पुनरपि तेहवो हो-९
गुरु उपदेशमा हूं नथी भीनो, न आवी सदहणा स्वामी।
हवे वडाई जोइयें तमारी, खिजमत माही छे खामी हो-१०
च्यार गति माहे रडवडियो, तोये न सीधा काज।
ऋषभ कहे तारो सेवक ने, बांह ग्रह्या नी लाज हो-११

## ॥ महावीर स्वामी का स्तवन ॥

तीर्थनी आशातना (राग)

वीर कुमरनी वातडी केने कहिये!
हारे केने कहियेरे केने कहीये, हारे नवि मंदिर बेसी रहिये।
हारे सुकुमाल शरीर वीर कुमरनी ॥टेर॥
बाल पणा थी लाड को मन भाव्यो,
हारे मली चोंसठ इन्द्रे मल्हाव्यो।

इन्द्राणी मलिहुलराव्यो, हांरे गयो रमवा काज ।वी.-१
छोरु उछांछला लोकना केम रहिये,
हांरे एनी मावड़ी ने शु कहिये ।
हांरे कहिये तो अदेखा थइये, हांरे नाशी आव्यां बाल ।वी-२
आमलकी क्रीड़ा वशे, वींटाणो,
हांरे मोटो भोरिंग रोषे भराणो ।
हांरे वीरे हाथे झालीने ताण्यो, हांरे काढी नांख्यो दूर ।वी-
रूप पिशाच नु देवता करी चलियो,
हांरे शुभ पुत्र ने लेई उछलियो ।
हांरे वीर मुष्टि प्रहारे वलियो, हांरे सांभलिये एम ।वी-४
त्रिसला माता मौजमां एम कहेती,
हांरे सखियों ने ओलंभा देती ।
हांरे क्षण क्षण प्रभु नामज लेती, हांरे तेड़ावे बाल ।वी-५
वाट जोवंता वीरजी घेर आव्यां,
हांरे माता त्रिसलाए न्हवराव्या ।
हांरे खोले बेसाड़ी हुलराव्या, हांरे आलिंगन देत ।वी-६
यौवन वय प्रभु पामतां परणावे
हांरे पछी संयम सु दिल लावे ।

हारे उपसर्गनी फोज हटावे, हारे लीधु केवल ज्ञान ।वी-७

कर्म सूदन तप भाखियो जिन राजे,
हांरे त्रणलोक नी ठकुराई छाजे ।
हारे फलपूजा कही शिव काजे, हांरे भविने उपकार ।वी-८

शाता अशाता वेदनी क्षय कीधु,
हारे आपे अक्षय पद लीधु हारे ।
"शुभवीर" नुं कारज सीधु, हांरे मागे सादि अनंत ।वी-९



## ॥ महावीर स्वामी का ॥

वीरजी सुणो एक विनति मोरी,
वात विचारो तुम धणी रे ।
वीर मने तारो महावीर मने तारो,
भवजल पार उतारो ने रे ॥१॥
परिभ्रमण मे अनंता रे कीधा,
हजु ए न आव्यो छेडलो रे ।
तुम तो थया प्रभु सिद्ध निरंजन,
अमे तो अनंता भव भम्या रे ॥२॥

तुमे हमे वार अनंती रे वेला,
रमिया संसारी पणे रे ।
तेह प्रीत जो पूर्ण पालो,
तो हमने तुम समगणो रे ॥वी.॥३॥

तुम सम हमने जोग न जाणो,
तो कांई थोडुँ दीजिये रे ।
भवोभव तुम चरणों नी सेवा,
पामी हमे घणुँ रींजीये रे ॥वी.॥४॥

इन्द्र जालियो कहे तोरे आव्यो,
गणधर पद तेहने दियो रे ।
अर्जुन माली जे धुर पापी,
तेहने वीर तुम उधर्यो रे ॥वी.॥५॥

चंदनबालाए उडदना बाकुला,
पड़िलाभ्या तुम ने प्रभु रे ।
तेहने साहुणी साचीरे कीधी,
शिव वधु साथे मेलवी रे ॥वी.॥६॥

चरणे चंड कोसीयोरे डसीयो,
कल्प आठमें ते गयो रे ।

गुण तो तुमारा प्रभु मुख थी सुणी ने,
आवी तुम सन्मुख रहीयो रे ॥वी॥७॥

निरंजन प्रभु नाम धरावो,
तो महुले मणिया गणोरे ।
भेदभाव प्रभु दूर करी ने,
अमसु रमो एक मेकसुं रे. ॥नी.॥८॥

मोडा वहेला तुम हीज तारण,
हवे विलंब शाकारणे रे ।
ज्ञानतणा भरना पाप मिटावो,
वारी जाऊं वीर तुम वारणे रे ॥नी॥९॥

---

## ॥ सातम का स्तवन ॥

शान्तिनाथ भगवान का स्तवन

सेवा शान्ति जिणद की, कीजे अतिभारी रे लो ।
अहो कीजे अतिभारी रे लो,
पदपंकज सेवे सदा जेहना नर नारी रे लो ॥अहो. ॥टेर॥
एक वार सुरलोक मे, मेघरथ राजारी रे लो. ॥अहो॥
इन्द्रों कीवी प्रशंसा, मोटा उपकारी रे लो ॥१॥

तिण वेला सुर बोलियो, मिथ्यामति धारी रे लो.।।अ।।
धानतणो छे कीडलो, मलमूत्र भंडारी रे लो. ।।अ।।२।।
तिणमांहे कहो कयां थकी, एवड़ी एकतारी रे लो. ।अ।
उत्तर वैक्रिय रूपकरी, चाल्यो तिणवारी रे लो. ।अ।३।
कीधा दोय पंखीतणा, रूप बुद्धि विचारी रे लो. ।अ।
ध्यानधरी बैठा तिहां, नरपति निरधारी रे लो. ।अ.।४।
राख राख करतो फिरे, पारेवो तिण वारी रे लो. ।अ।
राजाजी रूड़ी रीतसुँ, लीधो पुचकारी रे लो. ।अ।५।
भय मत कर रे बापड़ा, कोई न सके मारी रे लो. ।अ.।
पापी पुठे आवीयो हलवो हिलकारी रे लो. ।अ।६।
मञ दीजे नृप माहरो, तिमखाऊं मारी रे लो. ।अ।
राजाजी बोलेरे पशुहिंसा नरक दुवारी रे लो. ।अ ७।
भोजन आपूं तो भणी, मीठा सुखकारी रे लो. ।अ।
मांस विना खाऊं नहीं, नृप जात हमारी रे लो ।अ.।८।
देसी तो तुझ ने होसी हत्या पारवारी रे लो. ।अ।
नहीं देसी तुझ ने हुसी, हत्या हमारी रे लो.।अ. ९।
राजाजी आपे तेहने निज अंग विदारी रे लो. ।अ।
तो पण न आणयो चित्तमें राय दुःख लगारी रे लो. ।अ।१०।

धीरज देसी चोलियो, सुरवाणी सारी रे लो. ।अ.।
परीक्षा कारण आवियो, हूं छूं आशाधारी रे लो.।अ.।११।
आज पछे हूं ताहरो हूं छूं आज्ञाकारी रे लो. ।अ.।
इन्द्र वखाणयो जेहनो, तेहवो उपकारी रे लो. ।अ. ।१२।
जीवदया प्रतिपाली ने, निज काज सुधारी रे लो.।अ.।
राजाजी पहोता मंदिरे, व्रत पोषध पारी रे लो.।अ.।१३।
बारमें भवलाधी भली, दोय पदवी सारी रे लो.।अ.।
तीर्थंकर थया सोलमा, पंचमा चक्र धारी रे लो.।अ.।१४।
शान्ति जिनेसर विनति, चित्त में अवधारी रे लो.।अ.।
मान सागर कहे थाय जो, संघमे मंगलकारी रे लो.।अ। १५।



## ॥ शान्तिनाथ जी का ॥

भैरवी (राग)

शान्ति जिनेसर साहेब वदो, अनुभव रसनो कंदो रे।
मुखने मटके लोचन लटके, मोह्या सुरनर वृंदो रे।टेर।

आंबे मंजरी कोयल टहुके, मेघघटा जिम मोर रे।
तिम जिनवर ने देखी हरखूँ, वलि जिम चंद चकोर रे।१।

मारो पासो न मेले राग,
तसे प्रभुजी थया वीतराग रे ॥४॥
मने मायाए मुक्यो पासी, तुँ तो निरबंधन अविनाशी रे।
हूं तो समकित थी अधूरो,
तुँ तो सकल पदार्थे पूरो रे ॥५॥
मारे तुं छे प्रभु एक, तारे मुझ सरिखा अनेक रे।
हूं तो मनथी न मूकूं मान,
तुँ तो मान रहित भगवान रे ॥६॥
मारो कीधो किसुं नवी थाय, तुं तो रंकने करे राय रे।
एक करो मुझ पर मेरबानी,
मारो मुजरो लेजो मानी रे ॥७॥
एकवार जो निजरे निरखो तो सेवक ने करो तुम सरिखो रे।
जो सेवक सरिखो थाशे,
तो गुण तुमारा गाशे रे. ॥ ८ ॥
भवोभव तुम चरणों की सेवा, हुँ तो मागूँछू देवाधिदेवा रे।
सामुं जोवो ने सेवक जाणी,
एवी उदय रतन नी वाणी रे ॥९॥



## ॥ त्रेसठ शलाका पुरुष का स्तवन ॥

* ढाल १ *

धर्म महारथ सारथीमार (राग)

सद्गुरु चरण कमल चित्त धारं, त्रेसठ उत्तमनर अधिकार ।
पभणीसुँ श्रुत अनुसार, जेहना नाम लिये निस्तार ।
आपणो सफल हुवे अवतार, पामीजे भवपार ॥१॥
ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्म प्रभु नयना नंदन ।
सातम तेम सुपास, चंद्रप्रभु ने सुविधि शीतल जिन ।
श्रेयांस वासुपूज्य जिन शिरोमणि, विमलगुणेकरी वास ॥२॥
अनंत धर्म श्रीशान्ति जिनेसर, कुँथुनाथ अर मल्लि सुहकर ।
मुनिसुव्रत नमी नेम, पार्श्ववीर ए जिन चौवीश ।
जगवच्छल जगगुरु जगदीश, प्रणमीजे धरी प्रेम ॥३॥

---

## ॥ ढाल २ ॥

मुनिवर आर्य सुहस्ती

प्रथम भरत नरिंद, बीजो सागर मुणींद ।
मघवा त्रीजो उदार, चोथो सनत कुमार ॥१॥
पांचम शांति चक्रीश, छठो कुंथु गणीश ।

जिन प्रतिमा श्री जिनवर भाखी, सूत्रघणा छे साखी रे।
सुरनर मुनिवर वंदन पूजा, करता शिव अभिलाषी रे।२।
रायपसेणी प्रतिमा पूजी, सूर्याभ समकित धारी रे।
जीवाभिगमें प्रतिमा पूजी, विजयदेव अधिकारी रे।३।
जिनवर चैत्य विना नवी वंदूं, आणंद जी इम बोले रे।
सातमें अंगे समकित मूले, अवर नहीं तस तोले रे।४।
ज्ञाता सूत्रे द्रौपदी पूजा, करती शिवसुख मांगे रे।
राय सिद्धारथ प्रतिमा पूजी, कल्पसूत्र मांहे रागे रे।५।
विद्याचारण मुनिवर वंदी, प्रतिमा पांचमें अंगे रे।
जंघाचारण मुनिवर वंदी, जिन पड़िमा मन रंगे रे।६।
आर्य सुहस्तीसूरि उपदेशे, साचो संप्रति राय रे।
सवा क्रोड़ जिनबिंब भराव्या, धन-धन एहनी माय रे।७।
मोकली प्रतिमा अभयकुमारे, देखी आर्द्रकुमार रे।
जातिस्मरणे समकित पामी, वरियो शिव वधु सार रे।८।
इत्यादिक बहुपाठ कह्याछे, सूत्रमांहें सुखकारी रे।
सूत्रतणो एक वरण उत्थापे, ते कह्यो बहुल संसारी रे।९।
ते माटे जिन आणाधारी, कुमति कदाग्रह निवारी रे।
भक्तितणाफल उत्तराध्ययने, बोध बीज सुखकारी रे।१०।

एक भवे दोय पदवी पाम्या, सोलमा श्री जिनराय रे।
शुभ मन मंदिरीये पधरावरे, धवल मंगल गवराय रे।११।
जिन उत्तम पदरूप अनूपम, कीर्ति कमलानी शाला रे।
जिन विजय कहे प्रभुजी नी भक्ति, करता मंगल माला रे।१२।

## ॥ शान्तिनाथ जी का स्तवन ॥

सुणो शान्ति जिणंद सोभागी, हूं थयो छूँ तुम गुणरागी।
तुम निरागी भगवंता, जोता केम मलशे तंत रे ॥टेर॥
हूँ तो क्रोध कषाय थी भरियो,
तुं तो उपशम रसनो दरियो रे।
हूँ तो अनाने आवरियो, तुं तो केवल कमला वरियोरे-१
हूँ तो विषया रसनो आशी, ते तो विषया कीधी निराशी रे।
हूं तो कर्मों ने भारे भार्यो,
तें तो प्रभु भार उतार्यो रे ॥सु.॥२॥
हूं तो मोह तणे वश पड़ियो, तें तो सबलामोहने हणीयोरे।
हूं तो भव समुद्रमां खुच्यो,
तुं तो शिव मन्दिरमा पहुंच्यो रे ॥३॥
मारे जन्म मरण नो जोरो, तें तोड्यो तेहनो दोरो रे।

सातमो अर नरनाथ, आठमो सुभूम सुनाथ ॥२॥
नवमो पद्म नरेश, हरिषेण दशम कहेश ।
इग्यारमो जयवंत नाम, बारमो ब्रह्मदत्त नाम ॥३॥
एह चक्रीश्वर बार, क्षेत्र भरत सिणगार ।
मघवा सनत कुमार, पहुँता स्वर्ग मझार ॥४॥
सुभूम अने ब्रह्मदत्त, सत्तम निरय निरत्त ।
आठ थया शिवगामी ते प्रणमूँ शिरनामी. ॥५॥

## ॥ ढाल ३ ॥

मुनिवर आर्य. (राग)

पहिलो त्रिपृष्ठ जाण, द्विपृष्ठ दूसरो ।
तीजो स्वयंप्रभु जाणीये ए, पुरुषोत्तम ए चोथो ।
पंचम परगड़ो, पुरुष सिंह प्रमाणीये ए ॥१॥
छठो पुरुष पुंडरीक, दत्ततिम सातमो ।
लछमण नामे आठमो ए, नवमो कृष्ण नरेश ।
ए नवकेशवा. प्रगट्टा ते पिण नमुं ए ॥२॥
तिहां पहिलो वासुदेव.
नारकी सातमी आगला पांच छठी गयाए ।

सातम पचम नेरैयो,
चौथी आठमो नवमो तीजी नेरैयोए, ॥३॥
अचल विजय ने भद्र सुप्रभ सुदर्शन,
आनद नदन शुभ मतिए ।
रामचद्र बलभद्र, बलदेव ए नव,
आठ थया तिहा शिवगति ए. ॥ ४ ॥
बलभद्र ब्रह्मदेव लोक काल उत्सर्पिणी,
जासे शिव कृष्ण शासने ए ।
अथवा निःपुलाक नाम तीर्थंकर होसे,
चवदमो, इम बहु श्रुत भणेए. ॥ ५ ॥

## ॥ ढाल ४ ॥

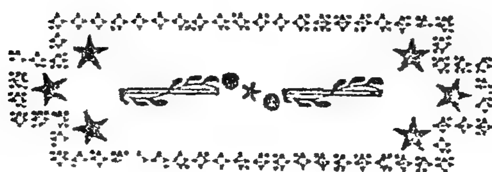
कुमरपणे प्रभु रहता (राग)

अश्वग्रीवने तारक मेरुक वली मधु तिमाए ।
निशु भ बलिय प्रह्लाद रावण जरासंध जिसाए ।
ए नव प्रतिवासुदेव नरके गति गामियाए ।
ते पण भावि जिनेश तेहं प्रणमु मुदाए. ॥१॥

## ॥ ढाल ५ ॥

सफल संसार (राग)

शांति ने कुंथु अर एह भव एक ही,
चक्रधर तीर्थंकर दोय पदवी लही ।
वीर वासुदेव अरिहंत भव जूजुवा,
देह तिणसाठ पिण जीव गुण सठ थया ।१।
वासुदेव बलिय बलदेव केरा पिता,
एकहीज थाय नव एण लेखे छतां ।
तीन चक्रधरतणा मिलिय बारे टल्या,
एम त्रेसठना तात एकावन मिल्या ॥२॥
तीन चक्रधरतणी, टाल दीजे जिसे,
मायसहु नी थई साठ लेखे इसे ।
एह नर रयणनो, ध्यान नित जे धरे
तेह सुरपद लही मोक्ष पदवी वरे ॥३॥



## (कलश)

इम गुणया तीर्थंकर चक्रीसर वासुदेव बलदेवए।
प्रति वासुदेव सुसेर जेहनी करे सुर नर सेवए॥
ए त्रेसठशलाघा पुरुष उत्तम जगे जयवंता सदा।
ग्रहसमे तेहना चरण पंकज नमे मुनि वसतो मुदा. ॥१॥

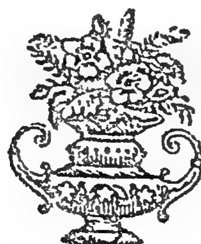
---

## १ ॥ अष्टमी का स्तवन ॥

(राग) भरतरी

नमन करू महावीर ने, जगदीश्वर जिनरायजी (टेक)
गौतम गणधर विनवे, विनय करी जोड हाथजी।
अष्टमी तप फल दाखीये, कृपाकरी जगनाथजी ॥न.॥१॥
वीर प्रभु मधुरे स्वरे, श्रीमुख से फ़रमावेजी।
जे नर अष्टमी तप करे, ते अक्षय सुख पावेजी ॥न.॥२॥
जीवने आयुष बंधन, पर्वतिथि होय प्रायःजी।
तेथी पर्व आराधीये, शुभगति द्रुत मिल जायजी ।न.॥३॥
जन्म दीक्षा आदिनाथ की, अजित जन्म मनुहारजी।
संभव च्यवन सुपार्श्व का, अष्टमी दिन हितकारजी ।न.।४।

जनमे सुमति सुव्रत, नमि आनंद हर्ष अपारजी ।
अभिनंदन नेमि पासजी, पहुंचे मुक्ति मझारजी ॥न.॥५॥
इण परे कल्याणक हुवे, अष्टमी दिन जयकारजी ।
अतीत अनागत ध्यावतां, फल अनंत अपारजी ॥न.॥६॥
ए तिथि आराधन करी, दंड वीर्य भूपालजी ।
अष्टकर्म मल वारिने, पाया मोक्ष विशालजी ॥न.॥७॥
प्रवचन जननी आठ ने, पालो सदा दिल धारजी ।
मद आठों को जीत के, अष्ट सिद्धि लहो सारजी ॥न.८॥
अष्ट प्राति हार्य संपजे, बुद्धिना गुण आठजी ।
अष्ट मंगल आगे चले, अष्टमी तप ए ठाठजी ॥न.॥९॥
अष्ट पोहरी पौषध करी, चौविहार उपवासजी ।
मनशुद्ध पर्व आराधता, पावे मुक्ति निवासजी ॥न.॥१०॥
सुख दाता भगवान हैं, त्रैलोक्य नाथ आधारजी ।
आनंद रत्ना कर कहे, अष्टमीतप जगसारजी ॥न.॥११॥



## २ ॥ आठम का दूसरा स्तवन ॥

अमल कमल जिम धवल विराजे, गाजे गौडी पास ।
सेवा सारे जेहनी सुरनर, मन धरीये उल्लास ।
गौमानी साहिब मेरा वे, अखियां सुखानी साहिब मेरा वे ।१।
सुंदर सूरति मूरति सोहे, सो मन अधिक सुहाय ।
पलक पलक मे पेखता मानूँ, नव नवी छवीय देखाय ।सो।२।
भव दुःख भंजन जन मनरंजन, खंजन नयन सुरंग ।
श्रवणे गुणीगुण ताहरा, साहरा विकस्या अंगो अंग ।सो।३।
दूर थकी हूं आयो नहीने, देव ! लगो दीदार ।
प्राणप्रिया परिहरि नहीं साहिबा, एह उत्तम आचार ।सो।४।
प्रभु मुख चंद निरखी निरखि हरखित, नाचत नयन चकोर ।
कमल हंसे रवि देखीने जिम, जलधर आगत मोर ।सो।५।
जिनके हरि हर जिसके ब्रह्मा, जिन के दिल मे राम ।
मेरे मन मे तूं वसे साहिबा, त्रिभुवनोरी ठाम ।सो।६।
माता वामा धन्य पिता प्रभु, श्री अश्वसेन नरेश ।
[illegible] [illegible], तन मन पावानो देश ।सो।७।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] दिन [illegible], [illegible] [illegible] नहीं परिमाण ।सो।८।

सानिधकारी विघ्ननिवारी, पर उपगारी पास ।
श्रीजिनचंद जुहारतां, मोरी सफल फलो मन आश ।सो।६।

## ॥ अष्टमी तीसरा स्तवन ॥

(दोहा)

पंचतीर्थ प्रणमूँ सदा, समरी शारदमाय ।
अष्टमी स्तवन हर्षे रचूँ, सुगुरु चरण पसाय. ॥१॥

—:०:—

### ॥ ढाल १ ॥

हांरे लाला जम्बू द्वीपना भरतमां, मगध देश महंतरे लाला ।
राजगृही नगरी मनोहरु ।
श्रेणिक बहु बलवंतरे लाला अष्टमी तिथि मनोहरु ॥टेर॥
हांरे लाला चेलणा राणी सुंदरु, शियलवती सिरदार ।
रे लाला श्रेणिकसुत बुद्धे छाजता ।
नामे अभय कुमार रे लाला ॥अ ॥१॥
हांरे लाला वर्णणा अष्टमी एह थी, अष्ट साधे ।
सुख निधान रे लाला. अष्टमद भांजे वज्र छे ।
प्रगटे समकित निधान रे लाला ।अ।२।

हारे लाला अष्ट भयनाशे एहथी, अष्ट बुद्धितणों भंडार ।
अष्ट प्रवचने मपजे, चारित्रतणो आगार रे लाला ।अ।३।
हारे लाला अष्टमी आराधन थकी, अष्टकर्मकरे चकचूररे ।
नवनिधि प्रगटे तसुघरे, संपूर्ण सुख भरपूर रे लाला ।अ।४।

हारे लाला अड दृष्टि उपजे एह थी ।
शिवसाधन गुण अङ्कुर रे लाला ।
सिद्धना आठ गुण सपजे ।
शिवकमला रूप स्वरूप रे लाला ।अ।५।



## ॥ ढाल २ ॥

जीहो- राजगृही रलियामणी, जीहो-विचरे वीर जिणद ।
जीहो-समवसरण इन्द्रे रच्यु , जी हो-सुरा सुर नोवृंद ।
जगत गुरु ! वंदो वीर जिणद ॥टेर.॥
जीहो-देव रचित सिंहासण, जीहो-बैठा श्री भगवन्त ।
जीहो अष्ट प्राति हारज शोभता, जीहो भामडल झलकन्त ।१।
जीहो-अनंत गुणे जिनराज जी, जीहो परउपकारी प्रधान ।
जीहो-करुणा सिंधु मनोहरू, जीहो-त्रैलोक्ये जगभाण ।ज।२।

जीहो-चौत्रीस अतिशय विराजता, जीहो-वाणी गुण पंतीस ।
जीहो-बार परषदा भावसुँ, जीहो सक्र नमावे शीश. ।जा३।
जीहो-मधुरीध्वनि देवे देशना, जीहो-जिम आषाढ नो मेह ।
जीहो-अष्टमी महिमा वरणवे, जीहो-जगवंधव कहे नेह ।४।

---

॥ ढाल ३ ॥

रुडीने रढीयाली रे प्रभु ताहरी देशना रे.
ते तो जोजन लग संभलाय रे ।
त्रिगड़े विराजे जिन दिये देशना रे,
श्रेणिक वंदे प्रभु ना पाय रे, ।
अष्टमी महिमा कहो कृपा करी रे,
पूछे गोयम अणगार रे ।
अष्टमी आराधन फल सिद्धनु रे ।रु.।१।
वीर कहे तप महिमा एह नो रे ।
ऋषभनु जनम कल्याण रे ।
ऋषभ चारित्र हुवो निर्मलु रे,
अजितनु जन्म कल्याण रे ।
संभव च्यवन त्रीजा जिनेसरु रे.
अभिनंदन निर्वाण रे ।

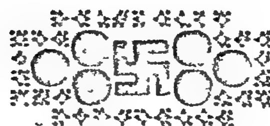
सुमति जन्म सुपाम च्यवन छे रे।
सुनिधिनमि जन्म कल्याण रे ॥ ३ ॥
मुनिसुव्रत जनम अति गुण निधि रे,
नेमि शिव पद लहीयो सार रे, ।
पार्श्वनाथ निर्वाण मनोहरु रे,
ए तिथि परम आधार रे, ॥ ४ ॥
उत्तम गणधर महिमा सामली रे,
अष्टमी तिथि परमाण रे, ।
मगल आठ तणी गुण मालिका रे।
तसघर शिव कमला प्रधान रे ॥५॥

—:x:—

## ॥ ढाल ४ ॥

आगमगनी निरयुगति ए भापे, महा निशीथ सूत्रो रे।
अृषभ वश हटवीर्य आराधे, शिवसुख पामे पवित्रोजी।
एतिथि महिमा वीरजी प्रकाशे, भविक जीवों ने मन भासे रे।
शासन ताहरु अविचलराचे, दिन दिन दौलत वाधे रे।
श्री जिनराज जगत उपकारी. ॥१॥

त्रिसला ना नंदन दोप निकंदन कर्म शत्रु ने जीत्या रे।
तीर्थंकर महंत मनोहरु, दोप अठार ने वरज्या रे ॥१॥
मनमधुकर जिनपद पंकज लीनो, हरखे निरखे प्रभु ध्याऊंरे।
शिवकमला सुख दियो हो प्रभुजी, कल्याण नंदपद पाऊंरे ।२।
वृक्ष अशोक सुर कुसुम नी वृष्टि, चामर छत्र विराजे रे।
आसन भामंडल जिन दीपे, दुंदुभी अंबर गाजे रे ।४।
खंभात बंदर अतिय मनोहर, जिन प्रसाद घणा सोहे रे।
बिंब संख्या नो पार न लहीये, दर्शन करी मन मोहे रे ।५।
संवत अठारह गुण चालीस वर्षे, आश्विन मास उदार रे।
शुक्ल पक्ष पंचमी गुरु वारे, स्तवन रच्युं छे तारु रे ।६।
पंडित देव सौभाग्य बुद्धि लावण्य, सौभागी तिण नामे रे।
बुद्धि लावण्य लियो सुख संपूर्ण, श्री संघने कोड कल्याण रे।
श्री संघने नवेरे निधान रे, श्री जिन राज जगत उपकारी।
परम सुखकारी ॥७॥



## ॥ आठम की दूसरी ढालो ॥

श्रीराजगृही नयरी उद्यान, अतिशय छाजे रे ।
विचरता वीरजिणंद आवी विराजे रे ॥१॥
तिहां चौत्रीस ने पांत्रीस वाणी गुण गाजे रे ।
पधार्या श्रेणिक राय, वंदन काजे रे ॥२॥
तिहां चौसठ सुरपति आवी, त्रिगडो बनावे रे ।
तिहा वेसी ने उपदेश प्रभुजी सुणावे रे ॥३॥
तिहा सुरनर नारी तिर्यंच, निज-निज भाषा रे ।
भेद समझी ने भविजीव लहे सुखवासा रे ॥४॥
तिहा इन्द्रभूति महाराज, कहे प्रभु वीरने रे ।
कहो अष्टमी नो महिमा, प्रभुजी अमने रे ॥५॥
तब भाखे वीर जिणंद, सुणो भविप्राणी रे ।
अष्टमीदिन जिनना कल्याण, धारो चित्त आणी रे ॥६॥

---

## ॥ ढाल २ ॥

श्री ऋषभ नुँ जन्म कल्याण रे, चारित्र लहे शुभ रान रे ।
त्रीजो संभव नुँ निर्वाण, भवि ! तुमे अष्टमी तिथि सेवो रे ॥
ए छे शिवबधू मलवानो मेवो. ॥भ. ॥टेर ॥१॥

अजित सुमति जिन जनम्या रे,
जिनसातमा शिव विसराम्या रे ।
अभिनंदन शिव पद पाम्या. ॥म. ॥२॥
वीशमामुनि सुव्रत स्वामी रे,
तेनो जन्म कल्याण मोक्ष धामी रे ।
एकवीशमां शिव विसरामी. ॥म. ॥३॥
श्रीपार्श्व जिन मोक्ष महंता रे,
इत्यादिक जिन गुणवंता रे ।
कल्याणक मोक्ष कहंता. ॥म. ॥४॥
तेथी अड़ कर्म दूर पलाय रे,
एथी अड़ सिद्धि अड़ बुद्धि थाय रे ।
तेने कारण शिव चित्त लाय ॥म. ॥५॥
एवी वीर जिणंदनी वाणी रे,
सुणी समज्या केई भवि प्राणी रे ।
इत्यादिक जिन गुण खाणी. ॥म. ॥६॥
श्री उदयसागर गुरुराया रे,
तस शिष्य विवेके ध्याया रे ।
श्री न्याय सागर गुणगाया. ॥म. ॥७॥

## ॥ नवमीका नेमिनाथ जी का स्तवन ॥

श्री नेमीश्वर वंदिये रे, जिनवर जगदाधार रे ।
ब्रह्मचारी शिर सेहरो रे, जादव कुल सणगार रे ।श्री ।१।
समुद्र विजय नृपकुल तिलोरे शिवादेवी मात मल्हार रे ।
वानीशमा शासनधणी रे, समरंता सुखकार रे ।श्री ।२।
सोरठ देशे शोभतो रे, गिरिवर गढ गिरनार रे ।
क्रीडागिरी यदुकुलतणो रे, मेरु शिखर अनुसार रे ।श्री।।३।
नेमीश्वर जिनवरतणा रे, ज्या थया तीन कल्याण रे ।
दीक्षा कल्याणक ने धुरें रे, केवल ने निर्वाण रे. ।श्री ।४।

—•—

### ॥ ढाल २ ॥

सीता सती सज्झायनी राग

वन-वन सघवी दश ममेत रे,
गिडिया राजा राम रे सुजानी ।
तिलोकचंद नली लूणीया रे लाल,
जिणकर्या उत्तम काम रे ।
सुजानी श्री नेमीश्वर वंदीये रे ॥५॥

शत्रुँजय संघ कढावीयो रे,
मरुधर देश मम्कार रे ॥सु.॥
लक्ष्मीनो लाहो लियोरे लाल।
सफल कियो अवतार रे ।सु। श्री।६।
निज शक्तें करता भला रे।
मारग चैत्य उद्धार रे ॥सु.॥
याचक जन संतोषतारे लाल।
पग पग जय-जयकार रे ॥सु.॥७॥
यात्रा करंता आवीयारे।
पहिलो श्री गिरनार रे ॥सु.॥
हय गय रथ भड़ परिवर्या रे लाल.
उत्सव करता उदार रे ।सु।श्री॥८॥
साधु साहमीनी सदा रे।
करता भक्ति संभाल रे ॥सु.॥
जिन पूजा करता भला रे लाल.
त्रिकरण शुद्ध त्रिकाल रे ।सु ॥९॥
खरतर कंवला गच्छपति रे।
चार आचारज साथ रे ॥सु.॥

संवेगी साधु वली रे लाल ।
जपता श्री जगनाथ रे ।सु.।।श्री.।।१०।।

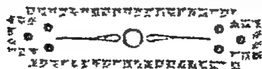
सघ मिल्या सहु देशना रे ।
करता अधिक उत्साह रे ।।सु.।।
सहु साथे यात्रा करी रे लाल ।
पूज्या श्री नेमिनाथ रे ।सु।।श्री।।११।।

सतारे सय छासट समेरे ।
मनहर चैत्रक मास रे ।।सु.।।
पुनम दिन प्रभु भेटिया रे लाल ।
पूगी मननी आश रे ।।सु।।१२।।

---

(कलश)

इम थुण्या श्रीजिनराज जग गुरु, नेमि जिनवर दुःख हरु ।
गिरनार गिरिवर मौलिमंडण, सयल संघे सुहकरु ।
श्रीमत अमृत धर्म वाचक, शिष्य प्रभु गुण मनधरी ।
मन शुद्ध क्षमाकल्याण पाठक, अंबिका सानिधि करी ।१३।



## ॥ नेमीनाथ जी का दूसरा स्तवन ॥

तोरण आया हे सखी ! कहे नेमकुमार ।
निरखे राणी राजुलनार परणे जादवराय नेमजी ।टे०।
अंग फरुके हे सखी, म्हारो जिमणो है आज ।
कहे राणी राजुलनार, देखी वालम पाछा वल्याजी ।१।
सहियां जंपे हो राजुल, थे छो राजकुमारी ।
मिथ्या वचन न बोल. फलसी मनोरथ मन मांसटाजी-२
नेम पूछे हो सारथी, कहो नी एकज वात ।
पशु बांध्या किण काज, वाड़ो भर्यो सामटोजी ।३।
सारथी भाखे हो सुणो यदुपति नेम कुमार ।
परणी जो राजुलनार, गवरो होसी तुम तणोजी ।४।
नेम भाखे हो धिग्, धिग् संसार असार ।
होसी जीवाँ रो संघार, विषयारसरे कारणेजी ।५।
दान देई हो नेम कुमार चढ्या गढ गिरनार ।
लीनो संयम सार. पशु देखी पाछा वल्याजी ।६।
राजुल जंपे हो सखी, यदुपति लावोरे मनाय ।
धरणी पड़ी भसकाय, बात सुणी सहियाँ तणीजी ।७।
सहियों जंपे हो राजुल. थे छो राजकुमारी ।

ओ छे कालो भरतार, अवर भलेरो जोवमाजी ।८।
राजुल जपे हो सखी, थे छो मूढ गमार ।
इण भव ओ भरतार, अवर परणी जणरी आँखडी ।६।
काला हाथी हे सखी, सोहे गज दरबार ।
काली घटा जलनीर, काली के कस्तूरीजी ।१०।
काली टीकी हे सखी, सोहे आख मझार ।
कालामे किसी खोड, जीत कीजे मनमाहे लीजी ।११।
दान देई हो राजुल, पहुंता गढ गिरनार ।
लीनों संयम भार, पियु पहेलो मुक्ते गयाजी ।१२।
इम जपे हो जैतसागर गुणगाय जे गावे नरनार ।
जिहा घर सदा सुख ऊपजे, जिहा घर नवनिध संपजेजी ।१३।



## ॥ राजुल नेमजी का बारेमासीया ॥

*सीयाले साढु (राग)*

तोरणथी रथ फरियो रे लाल, निठुर नेमकुमार ।
प्रेमनिलूधी पद्मणी रे लाल, वीनवे राजुल नार ।
हो रंगीला नेम सुण म्हारी अरदास ॥ १ ॥

सहेल्यां सुँ राजुल कहे रे, मिगसर नाव्यो पीव ।
प्रीतम विन हिव माहरो रे ।
धीरज न धरे जीव हो नेम ॥सु.॥ २ ॥
पोष महीनो आवियो हो, आयो सो दुख देण ।
तो सूरतने सांभला हो, देखण तरसे नयन हो ।३।
माहमहीने सीयडे हो, पीयु संग पोढे नार ।
प्रीतम विन हूं एकली हो, केम रहुं निराधार हो ।४।
होली खेले हेत सुँ हो, फागुण में नर नार ।
हूं किण सुँ खेलूँ हिवे हो, पास नहीं भरतार हो ।५।
चैतमहीने चांदणी रे, संजोगण सुख देण ।
विरहण ने वालम विना रे, रोवत जावे रैण हो ।६।
वन हरिया वैशाख में हो, मंजिरी रही महकाय ।
अरज सुणी अबला तणी हो, तपुन मीठावो आय हो ।७।
जेठ तपे लू आकरो हो, दाझे कोमल गात ।
सस्नेही साहिब विना हो, कुण पूछे मुझ वात हो ।८।
आषाढे काली घटा हो, उनमी आयो मेह ।
कंत मिल्या निज नार सुँ रे, धरती मिलिया मेह हो ।९।
श्रावण चमके दामनी हो, घन वरषे झड़लाय ।

इण ऋतु सुतां एकली हो, क्युंकर रैण विहाई हो ।१०।
काली कलायण मिलि हो, भादरवे वरषत ।
अरज सुणीने साहिबा हो, पूरो मों मन खंत हो ।११।
आमोजे आसु भरे हो, नाथ विना निश दीश ।
सार न पूछी साहिबे हो, राखो रखो मन रीस हो ।१२।
काति दृढ छाती करी हो, जाय मिली गिरनार ।
देखी मुख निजनाथ नो हो, सफल गिणे अवतार हो ।१३।
सयमले पीयु हाथ से हो, पामे भवनो पार ।
इण परे पाले प्रीतडी हो, धन-धन ते नर नार हो ।१४।
जे कीधी पशु उपरे हो, मो पर करजो देव ।
चन्द भणी ओ करी दया हो, प्रभु चरणों नी सेव हो ।१५।

॥ नेमजी का स्तवन ॥

काटो लागो छे मारे (राग)

द्वारापुरी नो नेम राजियो, तजीछे जेण राजुल जेवीनाररे ।
गिरनारी नेम सयम लीधोछे, बाला वेपमा ॥
भाभिये मेणा तेने मारिया,
परणे चालो श्रीकृष्ण नो वीर रे ॥गि.॥१॥

मंडप परच्यो छे मध्य चौकमां,
हरखियुँ छे शौरीपुरी नो लोक रे ॥गि.॥२॥
गोखे थी राजुल सती जोई रह्यां,
क्यारे आवे जादव कुलदीप रे ॥गि.॥३॥
सासुए पोखरण कीधां नेमना,
व्हालो मारो तोरण लोवा जाय रे ॥गि.॥४॥
पशुडाए नेमने पुकारिया,
उगारजो व्हाला राजुलना कंत रे ॥गि.॥५॥
नेमजी ए शालाने बोलावियां,
शाने करे छे पशुडा पोकार रे ॥गि.॥६॥
वेनी राजुल हमारी परणशे प्रभाते,
देई शु गोरोव नो भोज रे ॥गि.॥७॥
तोरण थी रथ पाछो फेरव्यो,
जई चढया छे गिरिगुफा मोझार रे ॥गि.॥८॥
राजुल रुवे छे मेली ध्रुसके,
रुवे-रुवे छे शौरीपुरी नो लोक रे ॥गि.॥९॥
माताए राजुल ने समजावियां,
अवर देईसुं नेम सरिखो भरतार रे ॥गि.१०॥

पीयु ते नेम गुरु धारिया.

बीजा ढरख़ूं भाई ने बाप रे ॥गि.॥११॥

जमणी आंखे श्रावण संरवडे,

डावी आंखे भादरवो भरपूर रे ॥गि.॥१२॥

चीर भींजाया राजुल नारना,

वागे छे कई ऊने अपरंपार रे ॥गि.॥१३॥

जैन तीर्थंकर चोवीशमा,

मलीयों कहे अवर न मिले जोड रे ॥गि.॥१४॥

कीर्ति विजय नी विनति,

लब्धि विजय कहे कर जोड रे ॥गि.॥१५॥

—:※:—

## ॥ दशमीका-पार्श्व जिन स्तवन ॥

पास जिनेसर जगति लोए, गवडीपुर मडण गुण निलोए ।
स्तवन करिस प्रभु ताहरो ए, मन वछित पूरो माहरो ए ।१।
नयरीनाम बनारसी ए, सुर नयरी जिम रिद्धे वसी ए ।
तेणपुरी छे दीपतो ए, अश्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ।२।
वामा तसु घर नार ए, तसु गुणहि न लब्मे पार ए ।
तसु उयर अवतार ए, तसु अतिशय रूप उदार ए ।३।

चवद सुपन तिण निशि लह्या ए ।
अनुक्रम करिते सहु मन ग्रह्या ए ।
पूछे भूपतिने कह्या ए, करजोडि कह्या ते जिम लह्या ए ।४।

॥ ढाल २ ॥

प्रथम सुपन गज निरख्यो, माय तणो मन हरख्यो ।
बीजे वृषभ उदार, धरणी जिण धर्यो भार ॥५॥
तीजे सिंह प्रधान, जसुबल कोय न मान ।
चउथे देखी श्री देवी, कमल वसे सुर सेवी ॥६॥
पांच में पुष्पनी माला, पञ्चवन्नरण सुविशाला ।
छट्ठे दीठोए चन्द, ग्रहगण केरो ए इंद्र ॥७॥
सातमें सूरज सार, दूर कियो अन्धकार ।
आठ में धज लहकंती, वरण विचित्र सोहंती ॥८॥
नवमें पूरण कुंभ, भरियो निरमल अम्भ ।
देखी सरोवर दशमें, मन थयो अति विसमें ॥९॥
समुद्र इग्यार में ठामे, खीर जलधि जसुनामे ।
बार में देव विमान, वाजित्र ध्वनिगीत गान ॥१०॥
तेर में रतननी राशि, दहदिशि ज्योति प्रकाशी ।

सुपन चवद मे।ए दीठो, पामक धुमथी मीठो ॥११॥
सुपन कथा सुविचार, हरख्यो भूप उदार ।
पुत्र रतन होस्ये ताहरे, थास्ये उदय हमारे ॥१२॥

---

॥ दोहा ॥

चवद सुपन श्रवणे सुणी, हरख कियो सुविचार ।
सुन्दर सुत तमे जनमस्यो, कुल दीपक आधार ॥१३॥
नामा प्रीतम वचन सुणी, आवी मन्दिर भक्ति ।
देव सुगुरु कीरत करी, जनम कियो सुकयत्थ ॥१४॥
इण अनुक्रमे उग्यो दिवस, कीधा सुपन विचार ।
ते घरि पहुंता आपणे, दीधा दान अपार ॥१५॥

---

॥ ढाल ३ ॥

जिन जनम्या जगतगुरु, जगत्र हुवो जयकार ।
खिण इक नारकिये पायो सुक्ख अपार ।
दिशि कुमरी मिल कर सूतिकरम निशिकीध ।
करी थानक पुहती वाञ्छित तेहनो सिद्ध ॥१६॥
तिणहिज निशि चौसठ इंद्र मिली तिहा आवे ।

लेई निज भगते, सुरगिरि स्नात्र करावे ।
करि जन्म म्होच्छव, जननी पासे ठावे ।
तिहांथी सुर सव मली दीप नन्दीसर जावे ॥१७॥
इम रयण विहाणी ऊगो दिवस उदार ।
घर घर गाईअे कीजे मंगलाचार ।
इग्यारम दिवसे मिली सहु परिवार ।
तसु नाम दियो श्री उत्तम पास कुमार ॥१८॥
प्रभु वाधे दिन दिन कला करी जिमचन्द ।
त्रिहुँ ज्ञान विराजित रूप जिसो देविन्द ।
गुणकला विचक्षण विद्यातणो निधान ।
यौवन वय आयो परणायो राजान ॥१९॥



॥ ढाल ४ ॥

कुमर पदे प्रभु रहितां काल सुखे गमें ए ।
आयो मन वैराग्य संयम लेवा समें ए ।
तव लोकान्तिक देव जणावे अवसरु ए ।
देई संवच्छरी दान याचक जन सुखकरुए ।२०।
स्वामी संयम लेई इन्द्रादिक सहु मिल्या ए ।

देश विदेश विहार करी कर्म निरदल्या ए।
पामिय केवल ज्ञान गुणे महिमा करी ए।
पामिय चउविह सघ मुगति रमणी वरी ए ।२१।

---

## (कलश)

छप्पय

इम श्री गौडी पास तणा गुण जे नर गावे।
ते नर नारी इह परलोक सुवंछित पावे।
सनकी भवपति जिके सवटी पुर जावे।
चोर धाड सकट टले विघन पुराई न आवे ।२२।
धरणराय पउमावई जास वहे सिर आण ।
सावल वरण सुशोभित नवकर काय प्रमाण।
कल्पवृक्ष चिन्तामणि कामगवि समतोले ।
श्री गुणशेखर सीस समय रंग इण परि बोले ।२३।



# श्री गोडी पार्श्वनाथ बृहत् स्तवन ॥

दोहा

श्री जिन वदन निवासिनी, सरस्वती समरेह ।
तीर्थंकर तेवीसमा, गुण गाइश गुणगेह ॥१॥
गुण गिरुश्रा गौडी तणां गाजे गौडी राय ।
सङ्कट हरण संपत्ति करण, समर्यां करे सहाय ॥२॥
समकाले प्रतिमा तिहां, शुभ मुहूर्त शुभ वार ।
महिमा पसरी महितले, प्रगटी पाटण मझार ॥३॥
परचा श्रीप्रभु पार्श्वनां, प्रगट थई प्रतिमादि ।
मति सारूँ छोड मद, आखिस गुण आल्हादि ॥४॥

---

॥ ढाल १ ॥

देशां सहु शिर देश छे, काशी,
नगरी बनारसी वासीरे जिनवर जयकारी ।
जाऊं जेहनी वारी रे जिनवर जयकारी ॥१॥
राज्य करे अश्वसेन नरिन्दा,
तेज रूपे अभिनव इन्दारे ।

गुण की खाणी मीठी वाणी,
जग धारिणी वामा राणी रे ॥१॥

चौदां सुपने प्रभु अवतरिया,
तेज कर सुगुण परिवरिया रे ।

पोष वदी दशमी दिन प्रभु जाया,
तेजे रवि तेज दबाया रे ॥२॥

छप्पन दिग कुमारी मली गावे,
नर नारियां गुण गावे रे ।

जन्म महोत्सव इन्द्रा कीनो,
पिता पार्श्व कुमार नाम दीनो रे ॥३॥

यौवन वय वनिता परणाई,
प्रभावती नाम कहाई रे ।

वैरागी प्रभु संयम लीनो,
घाती हनन केवल पद लीनो रे ॥४॥

[illegible] आयुष्य पाली,
[illegible] रे ।

ज्योति रूप जन्म क्षय कीनो,
अजर अमर पद लीनो रे ।
पूजीजे प्रभु टामो टामे,
गौडी राजे गोडी गामे रे ॥६॥
सुण भवियण तुम गौडी केरा,
शुभ भाव से बिंब भलेरा रे ।

---

## ॥ ढाल २ ॥

आपीरे प्रतिमा तीन अहमदावाद में ।
इण सम बिंब न कोय, दीठोरे पृथ्वी तले ॥
गोडी पार्श्वनी प्रतिमा तुरक ले संग्रही ।
धरती खणाने तेह राखी प्रतिमा सही ॥१॥
एक दिन स्वप्न मांहि, आवी यक्ष ते कहे ।
गोडी पार्श्वनो बिंब ते धरतीमां रहे ॥
प्रगट करजे तेह तुरत तूँ तुरकडा ।
नहीं तर पडसी भीड़ देखीस दुख वांकडा ॥२॥
परिकर वासी मेघो पाटण आवशी ।
अक्षत तिलक लिलाडते, अहिनाण पावसी ॥

पार्श्व जिनेसर केरी, प्रतिमा देखजे ।
पूरव पांचसे दामके गुणने लेखजे ॥३॥
मनने हरखे यात, बहु चित्त गहही ।
गुरुना माहीं पचराय, ते बहु कही ॥
इम सेवकने हाथ दे, बिम्ब जिनवर तणो ।
[illegible] इम निज पद, पामिए भविजन ! सुणो ॥४॥

---

## ॥ ढाल ३ ॥

[illegible] भरत मुलेक मे, पारिजन नामे देश रे ।
[illegible] तणो तिण नेहरो, नहीं जिहां दुख प्रवेश रे ॥टेर॥
[illegible] धर्म तिणे [illegible], [illegible] नाथ [illegible] रे ।
[illegible] अति [illegible], [illegible] तणो [illegible] रे ॥१॥
[illegible] नगर है, [illegible] रे ।
[illegible] निजे, [illegible] रे ॥२॥
[illegible] रे ।
[illegible] रे ॥३॥
[illegible] रे ।
[illegible] ॥४॥

माहो मांही सुखे वशे, गमावे दिन रात रे ।
एक दिवस सेघा सणी, काजल भांखी वात रे ॥५॥
धन लेई इहांसे घणो, जावो व्यापार काज रे ।
मानी वात शाह मेघजी चाल्या तुरत समाज रे ॥६॥
वहतांने सउण सखरा हुवा, थासी सहु काम सिद्ध रे ।
पाटण केरे चौहटे, तिहां लेशी नव निद्ध रे ॥७॥
उतारा मेघे किया, डेरा तम्बू ताण रे ।
राते स्वप्न में कह्यो, तिहां आवी यक्षरांण रे ॥८॥
तुरक घरे जिनवर तणी, मूरती महिमा वन्त रे ।
दाम पांचसे देईने, लेजो मन धरी खंत रे ॥९॥
यक्ष पहुँतो निज थानके, निशि गई ऊगो भाण रे ।
पाटण केरे चहुंअटे, तुर्क फरे छे विनाण रे ॥१०॥
जितने दीठा शाह मेघजी, सहु पहुंता सहिनाण रे ।
चालो मुझ घर शाहजी ! थाने देखाऊं जग भाण रे ॥११॥
हर्ष भराणो हियड़े, आवे असुरने गेह रे ।
झलहल तेज बिराजतां, देख्या जिनवर तेह रे ॥१२॥
यह मूर्ति राखो तुम्हें, दो मुझ पांचशे दाम रे ।
वचन सुण्या अमृत समा, हुलस्या आतमराम रे ॥१३॥

## ॥ ढाल ४ ॥

तुमने दाम दिया पांचसे,
जिन बिम्ब लिया मन हर्ष रे।
म्हारी भाग्य दशा आज जागी,
भाग्यदशा आज जागी म्हेतो आज हुवा बडभागी रे ॥टेर॥
मावठ मनडारी भागी, प्रभुजी से अतर लय लागी रे।
ममता रूप सौभागी, दिल रञ्जनने निरागी रे ।१।
निर्मल मुद्रा वैरागी, तजी भोग हुवा प्रभु त्यागी रे।
अकल स्वरूपी अयागी, मैं तो पायो शिवपुर पागी रे ।२।
मनना मनोरथ फलिया, मने तेजिममा जिन मलिया रे।
मोतीडे वुठा मेहो, म्हारे प्रगटयो सुरतरु गेहो रे ।३।
दीठी प्रभुजीनी देहो, म्हारा नयन भराणा जाजा स्नेहो रे।
हुवा अधिक उछाहो, चितडानी पुगी चाहो रे ।४।
निरुपम त्रिभुवन राया, म्हेतो पुण्ये प्रभुजी पाया रे।
दुःख दोहग परजलिया, म्हारा वखत अमोलख फलियारे ।५।
गुणमणी गुण गह गायां, म्हेतो पार्श्व जिनेश्वर पाया रे।
माता वामाराणी जाया, जय जय तूं त्रिभुवन रायारे ।६।

त्रिण प्रदिक्षण दीधी, कर लटके वंदना कीधी रे ।
द्रव्य भाव पूजा कीधी, सहु हंस हियानी सीधी रे ।७।
दाम देइ रू तिहां लीधो, मन मान्यो कारज सीधो रे ।
रूका भरिया ऊंट तेवीस, मांहे बेसाडया जगदीश रे ।८।
पाटण हूंति सिधाया अनुक्रमे राधनपुर आया रे ।
दाणलेवा दाणी आया, अति हर्ष भराणी काया रे ।९।
गिणतां ऊंट जेलेखे ओछो अधिको मेघा एक देखे रे ।
दाणी मन आश्चर्य पाया, तब मेघाने बुलाया रे ।१०।
शाह मेघो कहे सांभल दाणी, हम मूर्ति पार्श्वनी आणी रे ।
ते मूर्ति राखी इसमांहे, घणा जतनासुँ उमाहे रे ।११।
ए मूर्ति प्रभावे, हमने यह अचरज आवे रे ।
दाणी जिन बिंबज दीठो, चित्तडामें लागे अति मीठो रे ।१२।
पूजा करी करी प्रणाम, दाणी छोड गया निज ठाम रे ।
तिहांथी भूदेसर आया, नरनारी हर्ष सवाया रे ॥१३॥
सहु जन सामा आया, नर नारी मङ्गल गाया रे ।
मोती भर थाल वधाया, वली जीत नीशाण घुराया रे ॥१४॥
पूजा प्रभावना करी अपार, मांहे थाप्या जगत आधार रे ।
संघ सहूमन अति हरखे जिन बिम्ब नयणे निरखे रे ॥१५॥

शाह मेघेरा मनोरथ फलिया, शुभ भावे प्रभुजी मिलिया रे।
जिनवरना यश गावे, दिन दिन दीपे वधावे रे ॥१६॥
सवत चवदे बत्तीसे, कार्तिक सुदी बीज शुभ दिवसे रे।
शुभ मुहूर्त थ्यावर वारे, थ्याप्या सघ सकल आधार रे ॥१७॥

—

## ॥ दोहा ॥

मेघाशाह की भार्या, मृगा नयनी नाम।
गुणवन्ती ने रागिणी, सुन्दर अति अभिराम ॥१॥
तेहनी कूखे अवतर्या पुत्र रतन सुखकार।
मेरोने महिश्रो निहु, देव कुमर अवतार ॥२॥

—:※:—

## ॥ ढाल ५ ॥

एक दिन भाखे हो काजल मेघने, साभल मोरी बात।
नाणो हमारो लई करी, तुम गये थे गुजरात ॥टेर॥
ते लेखो आपो विगत सुदा हमने, नहिं तर टूटसी प्रीत।
बलतो मेघो कहे काजल! सुणो धनरख्यों धर्मरीत ।१।
पाचसे दामे हो प्रति मनोहर, म्हें लीनी मनरङ्ग।
कहे काजल थो पत्थर किम कामको, म्हारे धन शुं रङ्ग ।२।

मांहो मांहीं झगड़ता दोनुँजणा बीते बारह वर्ष ।
सगपण हुंति हो धन संसार में, व्हालो विश्वासीम ।३।
झगडा ने बिचमें मूर्ति पार्श्वनी, पूजे शेठ धनराज ।
तिण समये गोठीने सुपनो दियो, करजे एह उपाय ।४।
नगरीको नाश हुंतो में जाणियो, आयो तुर्त इण ठाम ।
इकदिन निश्चल पणेसुं निर्मल पणे, अरजे धणीकूं आय ।५।
स्थल बोहला हो पर्वत सारिखा, दीसन्ता विकराल ।
तिण समये एकलठो रथ तूँ खेडजे, निडर थइ तत्काल ।६।
वहतां जिण स्थान के रथ थंभी जे, तिहां लेजे विश्राम ।
श्री पार्श्व नाथनो बिंब तूँ स्थापजे, चैत्य करे अभिराम ।७।
जिण समय गोठीने सोच उपन्यो, पाणी नहीं पाषाण ।
सूनी रोहीने विन धन देवल तणो, कैसे मंडावुं मंढाण ।८।
श्री पार्श्वनाथ प्रसाद थी, होसी बातरसाण ।
सब वृतान्त स्वप्नमांहे कही, यक्ष गया निज स्थान ।९।
प्रह उठी शेठ रथ जोतरे, ऊपर ठविया साम ।
बारहकोस भद्रेसर हुंती आया, थंभाणो रथ ठाम ।१०।
चिन्तातुरने मारग खेदथी, आई नींद तिणवार ।
तिण समय सेवक ने स्वामी तणा, सुणिये शेठ महराय ।११।

## ॥ ढाल ६ ॥

सुण सुण सुगुण सनेही शेठजी, मीठी माहरी वाणी जी ।
जाना दक्षिण दिश भणी, तिहा पडियो नीलो छाण जी ।टेर।
तिहा खणजे धरती भूमिका, अमृत सम प्रगटशे नीरो जी ।
तिहा कने धवला आकडा, तेहने हेठे धन छे धीरो जी ॥१॥
स्वस्तिक सोपारी तणा, दीसे के सहनांणो जी ।
सिरोही सिलावट वसे, तेहने तुम इहा आणोजी ॥२॥
हिवे स्वप्ना माही यक्ष जी, सिलावट ने जणाय जी ।
देवल करे जो तुं पार्श्व नो, तो नीरोगी थाय जी ॥३॥
तेडी सिलावट आनियो, शेठ दियो सन्मान जी ।
पाणी पाषाण प्रगटिया, वली प्रगटयो निधान जी ॥४॥
श्री जिन भवन ना काम मे, कोइ न करजे काण जी ।
आछे मुहुर्त शुभ दिने, मंडायो मण्डाण जी ॥५॥
मनोहरणी करी कोरणी, वर्णन करयो नहि जायजी ।
सुणता तन मन उल्लसे, नयन रह्या लोभायजी ॥६॥
उत्तम तीर्थ अभिनवो, रचियो सेठ शाहोजी ।
साग प्रथम मंडाणीयो, लोग कहे वाह वाहो जी ॥७॥

धोरी धर्म रो इण जुगे, मेघो चढते भावेजी ।
गोडी गाम सुनोहुंतो, तेतो तुर्त वसावे जी ॥८॥
गोडी गामरे नामथी, गोडी पार्श्व कहायोजी ।
इंडो हजेय चढयो नहीं. बिच में थयो अन्यायो जी ॥९॥
हिवे काजल मेघाने किण विध करसी घातजी ।
भावी पदारथ नहीं टले, सुणजो आगल वातजी ॥१०॥

॥ ढाल ७ ॥

काजल सब लोकांरी साखे, मेघाने इम भांखे रे ।
बात होवण वाली। नहीं टले, होवण हारसुं जोर न चाले ।
कांइ न लागे कारी रे ॥टेर॥
लागो धन जे देहरा सारुं, आपो आधो इण वारूं रे ।
मेघो कहे पार्श्व मूर्ति पाई, मुझ घर कमी कांइरे ।१।
पार्श्व स्वामी के परसादे, दिन दिन नव निधि वाधे रे ।
मननी वात मेघा सब भासी, तब काजल रह्यो विमासीरे ।२।
माणस जब मेघाने वखाणे, तब काजल दुख आणे रे ।
किसही विध मेघाने मारूं, मन चिंत्या कारज सारुं रे ।३।
वात सहु मनमांहे ध्यायी, परपंच रचूं बणाई रे ।

पुत्र को विवाह रचावे, मेघाने बुलावण आवे रे ।४।
यत्तराय निज स्वप्ने आवे, मननी वात बतावे रे ।
दूध भोजन माहिं विष जो देशी, पापी प्राणज हरसी रे।५।
जो तूँ जावे तिणरे माथे, तो तुं जमण कर लेजे हाथे रे।
तिहा दूध भोजन मत करजे, वात सहु मन सद्दहजे रे ।६।
यत्तराय निज स्थानक पूगो जितने सूरज ऊगो रे ।
दिन ऊगा मेघाने बोलावे, तब काजल घर आवे रे ।७।
आदरमान अधिक दिलावे, युक्ति सुं भोजन जिमावे रे ।
विष मेल कर दूधज दीनो, ते पिण मेघा पीनो रे ।८।
दूध भोजने मेघो मरणज पामी, तत्त्वण हुवो सुरगति गामीरे।
मानीनश वात याद न आई, जे यत्तराय बताई रे ।६।
मेहरीने महियो आवे, देखीने अति दुख पावे रे ।
द्रोह करी कुल तिलकज मारयो, काजलभूँडो विचारयोरे ।१०।
यह कार्यबहनी ? मं नविकीनो, भाणम दोष मुझ दीनो रे ।
लोग सहु ते फिट फिट भाखे, मुखा मुखी इम दाखे रे ।११।
होनहार सुं जोर न चाले, इम बहिनी मन साले रे ।
मेरगेने महियो वीरज बारे, मरण मेवागे सुधारे रे ।१२।
काजल मन तिहा मंत्र तोलाने, देवल टन्टो चटावे रे ।

देवल इन्डो चढायो, पड़ने धरती आयो रे ।१३।
बीजी वार तीजी वार चढ़ावे, शिखर उपर नहीं टावे रे ।
जितने यक्ष ऊचरी वाणी, तेपिण सघले जाणी रे ।१४।
मेहरोने महियो जो इन्डो चढासी, तो इन्डो स्थिर रहसी रे ।
देवल शिखरे इन्डो चढायो, पुण्ये अचरिज पायो रे ।१५।
संवत चवदेने चम्मालिस शुभ मूहूर्त शुभ दिन वार रे ।
देवविमानसम देवल दीठो, तन मन नयणे लागे मीठोरे ।१६।
देहरे प्रतिष्ठा प्रभुनी कीधी कीर्ति जगमां लीनी रे ।
महीयले तीर्थ जेह रचायो स्थान स्थान में ठायो रे ।१७।
यह तीर्थ मेघे शाह रचायो, नामे आश्चर्य पायो रे ।
मेघा सुतनो मनोरथ सिद्धो, द्रव्य खर्ची यशलीधो रे ।१८।
सुर असुरने कोडा कोडी, सेव करे कर जोडी रे ।
मद मत्सर मनसु सहु छोडी, गावे गौडी गौडी रे ।१९।



## ॥ ढाल ८ ॥

म्हारि महियाए जय जय जग गोडी धणी ।
एकल मिल अनीह, म्हारी सहियाए जय ॥टेर॥
दुख दोहग भंजन धणी, साचो साहिब एह ॥१॥
देश विदेश काइ फिरो, काइ करो मन मे विचार ॥२॥
एक मने तुम भविजना, सेवो श्रीजगत आधार ॥३॥
पुत्र अपुत्रिया ने देवे, निर्धनिया धन देह ॥४॥
परचा पूरण इण युगे, सुरतरु सम प्रभु एह ॥५॥
आज घडी सु धन्य घडी, आज जन्म सुप्रमाण ॥६॥
परचा पूरण पार्श्व जी, स्थिर चित्त स्थलनो राण ॥७॥

### (कलश)

सवत अठारह पचवीश वर्षे, चैत्र शुक्ल पचमी दिने ।
धरणेन्द्र ध्यायो गुणही गायो, हर्ष धरी शुभ मने ॥
पाठक चमा प्रमोदे शिष्ये, अनोपचद सुरमणी ।
मम पाचमे यह स्तवन कीनो, धवल धिंग गौडी धणी ॥



## ॥ श्री पार्श्वनाथ का स्तवन ॥

प्रभुजी हो बनारसी नगरी में, रिद्धि सिद्धि सघली पाई हो।
जयकारी जिनराज, उपकारी जिनराज बना. जिणंद हो।
प्रभुजी हो माता वामाराणी ने, चउदे सुपना लाधा हो।
जयकारी जिनराज, उपकारी जिनराज, बना. जिणंद हो ॥१॥
प्रभुजी हो पोष बदी दशमी ने, पार्श्व प्रभु जन्मया हो ।२।
प्रभुजी हो शिखर चढीने, सोवन थाल बजायो हो।
जय. बनारसी. हो जिणन्द ॥३॥
प्रभुजी हो सोनेरी छुरियां सूँ, प्रभुजी को नालो परनाल्यो हो।
ज. जि. उ. म. व. हो जि. ॥४॥
प्रभुजी हो सोने की झारी, रुपेरे कुन्ड नहवाया हो।
ज. जि. उ. म. ब. हो जि. ॥५॥
प्रभुजी हो पानीरे बदले दूधों सूँ नवराया हो।
ज. जि. उ. म. ब. हो. जि० ॥६॥
प्रभुजी हो पहिले पीताम्बर, जिनजी रे अङ्ग लपेटयो हो।
ज. जि. उ. म. ब. हो. जि० ॥७॥
प्रभुजी हो धर्म पालखडी, माताजी के पास पोढाया हो।
ज. जि. उ. म. ब. हो. जि० ॥८॥

प्रभुजी हो इन्द्र इन्द्राणी, मिलके महोत्सव कीना हो ।
ज. जि. उ. म. व. हो. जि० ॥९॥
प्रभुजी हो चोरारे बदले मोतीडासुं बधाया हो ।
ज जि उ. म. व. हो जि० ॥१०॥
प्रभुजी हो हिवडे आपरे, जैन धर्म की कुची हो ।
ज जि. उ. म. व. हो. जि० ॥११॥
प्रभुजी हो करणी आपकी, नवली अधिकी उची हो ।
ज. जि. उ म. व. हो. जि० ॥१२॥
प्रभुजी हो परमत माहि, नाग-नागिणि तारया हो ।
ज. जि. उ म. व. हो. जि० ॥१३॥
प्रभुजी हो बीस बरस में, परण्या सुन्दर नारी हो ।
ज. जि उ म. व. हो. जि० ॥१४॥
प्रभुजी हो तीस वर्ष मे, राज पाट सब छोडया हो ।
ज. जि. उ. म व. हो. जि० ॥१५॥
प्रभुजी हो सो वर्षां रो आऊखो, सबलोही पायो हो ।
ज. जि. उ. म. व, हो जि० ॥१६॥
प्रभुजी हो रतन मुनीश्वर स्तवन बनाया हट भारी हो ।
ज. जि उ म. व. हो जि० ॥१७॥

प्रभुजी हो मूरति आपकी, श्याम वरन में सोहे हो ।
ज. जि. उ. म. व. हो. जि० ॥१८॥
प्रभुजी हो दान शीयल तप भावना दिल में धारी हो ।
ज. जि. उ. म. व. हो. जि०
बनारसी नगरी में रिद्ध सिद्ध सघली पाई हो ।
जिनन्द, जयकारी जिनराज उ. म. व. हो. जि० ॥१६॥

## ॥ श्री मल्लिनाथ को ढालो ॥

नव पद समरी मन सुधे, वली गौतम गणधार ।
सरस्वती माता चित्त धरूँ, वाधे वचन उदार ॥१॥
मल्लिनाथ उगणीसमा, जिनवर जगमें जेह ।
गुण गाइश हुं तेहना, सुगुण सुणों धरि नेह ॥२॥
कोण देश कोण नगर में, कोण पिता कोण मात ।
पांच कल्याणक परगड़ा, विगत करी कहूं बात ॥३॥

---

## ॥ ढाल १ ॥

इण हीज जम्बू द्वीप, क्षेत्र भरत सुखकारी ।
नगरी मिथिला नाम, अलकाने अनुहारी ॥टेर॥

तिहां नृप कुंभ कहाय, राणी प्रभावती नामे ।
शियल गुणे अभिराम, जस पसर्यो ठामे ठामे ।ढण।१।
एक दिवस ते नार, सूती सेज मंझारी ।
देखी चवदे सुपन, ते जागी तिण वारी ।ढण।२।
पति ने पहोंती पास, सुपन सहु ते कहिया ।
नृप हरख्यो मन माहि, अनुपम अर्थे लहिया ।ढण।३।
सुपन तणे अनुसार, पुत्री होस्ये पुण्यवती ।
अर्थ सुणी ने एह, घर पोहती गह गहती ।ढण।४।
कहुं पूर्व भव वात, तिहांथी चवि ने आया ।
वीतशोका नामे नगर, महाबल नाम कहाया ।ढण।५।
ते मिलया छण मित्र, सहु मिली दीक्षा लीधी ।
महाबल रचे मित्र, तप में माया कीधी ।ढण।६।
स्थानक सेव्या वीस, गोत्र तीर्थङ्कर बाध्यो ।
स्त्रीवेद उदार, पुण्य में पाप न साध्यो ।ढण।७।
अणसण करिय तिणवार, जिण धर्मशुं लयलाई ।
छण जीव जयन्त विमान,सुर पदवी तिहां पाई ।ढण।८।

## ॥ ढाल २ ॥

तिणहिज जम्बूद्वीपमें रे, भरत क्षेत्र कहवाय रे ।
छए मित्र तिहां जई ऊपना रे, ते सुणजो चित्तलाय रे ।टेर।
पडिबुद्धा इक्ष्वाकमें रे, चन्द्र छाया अङ्गराय रे ।
शंख काशीनो राजियो रे, रूपी कुणाल कहाय रे ।तेसु.।१।
अदीन शत्रु कुरु देशमां रे, जितशत्रु पंचाल कहाय रे ।
जयन्तथी चवि ते सहु रे, इहां अवतार लहाय रे ।तेसु. ।२।
महाबल जीव तिहां थकी रे, पुण्यवंत परधान रे ।
फागुण सुदी चौथने रे, चविया श्री जयन्त विमान रे ।तेसु.३।
प्रभावती उर अवतर्यो रे, मास हुआ जब तीन रे ।
दोहलो एहवो ऊपन्यो रे. विन पूरयां रहे दीन रे ।तेसु. ।४।
जल थल उपन्या फूलनी रे, सोवुँ सेज बिछाय रे ।
पंचवरण फूलनो चंद्रवो रे, सुगन्ध स्वरूप सुहाय रे, ।तेसु.।५।
नवसरियो हार फूलां तणो रे, हुं पहिरूँ मनरङ्ग रे ।
वाणव्यन्तर तिहां देवता रे, पूरे तेह सुरङ्ग रे ।तेसु.।६।
मिगसर सुदि इग्यारसे रे, जाई पुत्री रत्न रे ।
अर्ध निशा वित्यां पछी रे, माताजी हरख्या मन्न रे ।तेसु. ।७।

---

## ॥ ढाल ३ ॥

छप्पन कुमारी आई तिहां हर्षे, जिनवर वन्दि पाय जी ।
जन्म महोच्छव करिय जुगतिसे, गई निजगृह मतिलायजी ॥
चौसठ इद्र तिके पिण आवी, मेरू शिखर न्हवराय जी ।
गीतम गुरी धुनि नाटक करके, मूकि गया निज ठाम जी ।१।
दिन परभात थयो कुम्भराजा, जन्म महोत्सव कीध जी ।
दशोटण बहु जनने जिमावी, मल्ली कुमरी नाम दीध जी ।२।
एकशत वरस थया केही ऊणा, अवधि प्रभु जी ताम जी ।
पूर्व भव छए मित्रा केरा, लहीये आगम नाम जी ।३।
ते मुझ रूपे मोह्य सवला, आसी इण हीज ठामजी ।
इम जाणी कुमरी गृहमाहे, कनक मूर्ति करि ताम जी ।४।
मस्तक भेदी कवल एक मूके, आप जीमे तिण वार जी ।
दिनम केतले दुर्गंध प्रगटी, मित्रा दिखाय उछाह जी ।५।
ते देखी छए मित्र प्रति बुझया, सहु गया निज निज गेह जी ।
हिवे मल्लि दीक्षा अवसर जाणी, दे वरसी दान नेह जी ।६।

## ॥ ढाल ४ ॥

मिगसर सुदी इग्यारस आविया, तीनसै नर लेई साथ ।
तीनसै नारी हो वली लीधी दीक्षा, छोड़ी सहु घर आथ ।टेर।

तिण हीज दिन संध्या समय थयां, लहियो केवल राज ।
तत्क्षण समवसरण देवा रच्यो, सीधा सगला ही काज ।१।

परषदा बारे हो मिल बैठी, तिहां सुणे धर्म धरि नेह ।
तिण समे छए मित्र पिण आविया, लिये दीक्षा तजि नेह ।२।

अट्ठावीस गणधर थाप्या जिनवरे, साधु सहस चालीस ।
साधवी सहस पंचावन जेहने, करे धर्म विश्वा वीस ।३।

सहस चौरासी इकलख श्रावका, श्राविका वलि लख तीन ।
सहस पैंसठ छे उपर जेहने, तप जप नहीं हेज दीन। ४।

सहस पंचावन आयू पालीने, उपशम धारय उदार ।
पर उपगारी हो श्री जिनवर तणो, नाम लियां निसतार ।५।

पांचसै साधु अढी से साधवी, लई साथे परिवार ।
समेत शिखरने श्री जिनवर, चालिया सुमति गुप्ति सुविचार ।६।

## ॥ ढाल ५ ॥

मल्लि हो समेत शिखर सिधाया,
गिरिवर देखी बहु सुख पाया।
सबला साथ रे मन भाया,
छोडी सकल संसारनी माया ॥टेर॥

पुढवी पट परमार्जण कीधा,
साथ रा मनवांछित सीधा।
डाभ संथारसु मन दीधा,
धर्म ध्यान शुक्ल ध्यान माथे लीधा ॥१॥

चौरासी लाख जीव खमाया,
पाप अठारे दूरे गमाया।
सिध्धि वधू मिलवा ऊमाया।
पडिलेही छोडी निज काया ॥२॥

साधवी अतरपर्षदा कहिये,
बाहिर पर्षदा साधुनी कहिये।
काउस्सग करिने काया दहिये,
सिद्ध ध्यानसुं शिवपद लहिये ॥३॥

ऋतु वसंत फागुण सुखदाई,
शुक्ल पक्ष बारस अति साई ।
अर्ध निशा जब भरणी आई,
तब मल्लि जिन मुक्ति श्री पाई ॥४॥

अविनाशी अविकार कहाई,
परम अतीन्द्रिय सुक्ख लहाई ।
समाधान सर्वाङ्ग सदाई,
परम रस सर्वाङ्ग सुहाई ॥५॥

सिध्ध बुध्ध अविरुध्ध कहिए,
आदि न कोई एहनी लहिए ।
जिन वचने करि सद्दहिये,
अनुपम सुख में सदाई रहिये ॥६॥

(कलश)

संवत् सत्तरहसै छप्पन्ने, आसु मास उदारए ।
प्रतिपदा तिथि शुक्ल पक्षे, जेसलमेर मझारए ॥
परधान पाठक श्री कुशल धीरे, गुरुनी सान्निध करी ।
ए स्तवन कीधो कुशल लाभे, धर्म राग मन में धरी ॥१॥

## ॥ एकादशी स्तवन ॥

समवसरण बेठा भगवंत, धर्म प्रकाशे श्री अरिहंत ।
बारे परषदा बेठी जुडी, मिगसिर शुदि इग्यारस वडी ॥१॥
मल्लिनाथना तीन कल्याण, जन्म दीक्षा ने केवल ज्ञान ।
अर दीक्षा लीधी रूअडी, मिगसिर सुदि० ॥२॥
नमिने उपन्युं केवल ज्ञान, पांच कल्याणक अति प्रधान ।
ए तिथिनो महिमा मोटडी, मिगशिर सुदि० ॥३॥
पांच भरत ऐरवत इमहीज, पांचकल्याणक हुवे तिण दीज ।
पच्चासनी संख्या परगडी मि० शु० ॥४॥
अतीत अनागत गिणतां एम, दोढसो कल्याणक थाये तेम ।
कुण तिथि छे ए तिथि जेवडी, मि० शु० ॥५॥
अनन्त चोवीसी इणि परे गिणो, लाभ अनन्त उपवास तणो ।
ए तिथि सहु तिथि शिर राखडी. मि० शु० ॥६॥
मौनपणे रह्या श्री मल्लिनाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ ।
मौन तणी परिधृत इम पडी मि० शु० ॥७॥
आठ पहोर पोसो लीजिये. चौविहार विधि सुं कीजिये ।
पण परमाद न कीजे घडी. मि० शु० ॥८॥
वरस इग्यारे कीजे उपवास. जाव जीव पण अधिक उल्लास ।

ए तिथि मोक्ष तणी पावडी, मि. शु. ॥९॥
ऊजमणुँ कीजे श्रीकार, ज्ञानना उपगरण इग्यार इग्यार ।
करो काउस्सग गुरु पाये पडी, मि. शु. ॥१०॥
देहरे स्नात्र कीजे वली, पोथी पूजी जे मनरली ।
मुक्ति पुरी कीजे ढुंकडी, मि. शु. ॥११॥
मौन इग्यारस महोटुं पर्व आराध्यां सुख लहिये सर्व ।
व्रत पच्चखाण करो आखडी, मि. शु. ॥१२॥
जेसल सोल इक्यासी समें, कीधुं स्तवन सहू मन गमे ।
समय सुंदर कहे करो ध्यावडी, मिगशिर सुदि० ॥१३॥

## ॥ रोहिणी जी का स्तवन ॥

शासन देवतां स्वामिनी ए, मुझ सान्निध्य कीजे,
भूल्यो अक्षर भल भणिए, समझाई दीजे ।
मोटो तप रोहिणी तणोए, तिणरा गुण गावुं,
जिम सुख सोहग संपदाए, वांछित फल पाऊं ॥१॥
दक्षिण भरते अङ्ग देश, छे चंपा नयरी,
मघवाराजा राज्य करे, तिण जीत्या वयरी ।
पाट तणी राणी रूवडी ए, लक्ष्मी इण नामे,

आठ पुत्र जाया तिणे ए, मन में सुख पामे ॥२॥
रोहिणी नामे पुत्रिकाए, सहुकुं सुखकारी,
आठा पुत्रा ऊपरे ए, तिण लागे प्यारी ।
बीज चन्द्र तणी कला ए, जिम पख अजवाले,
तिम ते कुंवरी धायमाय पांचे प्रत पाले ॥३॥
यौवन रूपे रूवडी ए, घर आंगण बेठी,
दीठी राजा खेलती ए, मन चिंता पेठी ।
तीन भुवन माहे सुन्दरी ए, नहीं कोई बीजी नारी,
रंभा पदमा गौरी गंगा ए, इण आगल हारी ॥४॥
पुरुष न दीसे कोई इसो ए, जिणने परणाउं,
थाशां आपण आल पंपे ए, जिम चैन न पाउं ।
इम विचारी चितवे ए, राजा स्वयंवर मंडाव्या,
देश देशना राजवी ए, तेडण मेलाव्या ।
स्वयंवर महाई आप करी, नरपति तिहां आव्या ॥५॥
वीत शोक राजा तणो ए, छे पुत्र सोभागी ।
[illegible] केरी आगळी ए, [illegible] केरी नागी,
[illegible] देखी [illegible] मौर, [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible], [illegible] ॥६॥

देव अने देवाङ्गना ए, जंपे जय जयकार.
रलियायत थयो देखिने ए, सारो संसार ।
कर जोडीने लोक कहे, वर कन्यारो जोड़ो.
वीतशोकनो कुंवर थयो, शिर ऊपर मोड़ो ॥७॥
इम विवाह थयो भला ए. दीधा दान अपार ।
घरे आव्या परणी करीए, हरख्यो परिवार ।
वीतशोक राजा पुत्र भणी, आपणो पाटज दीधो,
आपण संजम आदरी ए, जगमें जस लीधो ॥८॥

---

## ॥ ढाल २ ॥

(हवे भवियणरे ? पंचमी ऊजमणो सुणो)

तिण नयरीरे चित्रसेन राजा थयो,
सुख मांही रे केटलो काल वही गयो ।
एण अवसर रे आठ पुत्र हुआ भला,
चढते पखरे चंद्र जैसी चढती कला ॥१॥
त्रोटक—चढती कला हवे राय बेठो पास बेठी रोहिणी,
सातमी भूमि कंत सेती करे क्रीडा अति घणी ।
आठमो बालक गोद उपर रंगशुं-राणी लियो,

पुत्र ने प्रीतम आस आगल देखतां हरखे हियो ॥२॥
ढाल–एक कामिनी रे गोखे चढी दृष्टी पडी,
शिर पीटे रे रोवे रीके बापडी ।
बूढा पणेरे मन गमतो बालक मूओ,
हूंतो एकजरे तिण अधिकेरो दुख हुवो ॥३॥
त्रोटक–दुख हुवो देखी, रोहिणी इम कहे प्रीतम भणी,
एह नार नाचे अने कूदे कहो किम मोटा धणी ।
एहवो नाटक आज तांइ मैं कदी देख्यो नहीं,
मुझने तमासो अने हांसो, देखतां आवे सही ॥४॥
ढाल– इण वचने रे रीसाणो राजा कहे,
तूँ तो पापिणीरे, परनी पीडा नवि लहे ।
ए दुखिणीरे पुत्र मुओ तड फड करे,
जब बीते रे वेदना जाणीजे तरे ॥५॥
त्रोटक–जाणीजे तरे तूँ बात दुखनी गर्वघेली कामिनी,
एम कही राजा हाथ झाल्यो, तेहना बालक भणी ।
सातमी भूमिथी तले नाख्यो तिसे हाहारव थयो,
रोहिणी हसती कहे प्रीतम, पुत्र नीचे किम गयो ॥६॥
ढाल–हवे राजा रे पुत्र तणे शोके करी,

थयो मूर्च्छित रे रोवे छे आंखे भरीभरी।
पडतो मुनने रे शासन देव ते झालियो,
कञ्चनमय रे सिंहासने बेसाड़ियो ॥७॥
त्रोटक–बेसाड़ियो कर जोडी आगे करे नाटक देवता,
गोद खिलावे केई हंसावे पाद पङ्कज सेवता।
उलज्यो भूपतिने अचंभो देखी ए कारण किसो,
जो कोई ज्ञानीगुरु पधारे पूछिये संशय इसो ॥८॥
ढाल–चिंतवंता रे चारित्रिया आव्या इसे,
राजा पिण रे पहोंच्यो वन्दन ने तिसे।
सुणी देशना रे पूछे प्रश्न सोहामणो,
कहो स्वामी ? रे पूरव भव बालक तणो ॥९॥
त्रोटक–बालक तणो भव भूप पूछे कहे राणी परे केवली,
रोहिणी राणीनो भवान्तर, अने राजानो वली।
श्री सुगुरु भाखे पाछले भव, रोहिणी तप आदर्यो,
तप तणी सक्ते साधु भक्ते तुमें भवसायर तर्यो ॥१०॥
ढाल–कहे राजा रे किम रोहिणी तप कीजिये,
विधि भाखो रे, जिम तुम पासे लिजिये।
तब मुनिवर रे, विधि रोहिणीना तप तणी,

इम जंपे रे चित्रसेन राजा भणी ॥११॥
त्रोटक-राजा भणी निधि एह जपे, चन्द्र रोहिणी आविये
उपवास कीजे लाभ लीजे भली भावना भाविये।
वारमा जिनवर तणी प्रतिमा पूजिये मन रंगशु,
एम सात वरसां लगे कीजे, तजी आलस अङ्गशु ।१२।

---

## ॥ ढाल ३ ॥

महेली ए आवो मोरियो ॥एशी॥

तप करिये रोहिणी तणो, भली करिये हो,
ऊजमणो एमके, तप करता पातिक टले ॥टेर॥
निर्मल कीजे हो तप सेती प्रेम के ॥तप.॥१॥
देव जुहारी देहरे, जिन आगे हो कीजे वृक्ष अशोक के,
गुणणो वारमा जिन तणो ।
भला नैवेद्य हो धरिये बहु थोक के ॥तप.॥२॥
केसर चंदन घसिये, जिन आगे हो आठे
महानीद के विविधे पुष्पके पूजिये ।
नो भक्ति हो निरखुं बहु नीर के ॥तप ॥३॥

सेवा कीजे साधुनी वली दीजे हो,
मुंह मांग्या दान के संतोषी जे साधर्मी।
मन रङ्ग हो करी करी पकावान्न के ॥तप.॥४॥
पाटी पोथी पूँजणी मसी लेखण हो,
झिलमिल सुजगीश के नवकार वाली वींटणा।
गुरु आगे हो धरो सत्तावीश के ॥तप.॥५॥
चोथुं व्रत पण तिण दिने।
इम पाले हो मन आणी विवेक के।
इण विधि रोहिणी आदरे।
ते पामे हो आनन्द अनेक के ॥तप.॥६॥

---

## ॥ ढाल ४ ॥

इम महिमा रोहिणी तणी श्री ज्ञानी गुरु प्रकाशे रे।
चित्रसेन ने रोहिणी, वासुपूज्य तिर्थङ्कर पासे रे।
इम महिमा रोहिणी तणी ॥टेर॥१॥
इणी परे रोहिणी आदरी,
ऊपर ऊजमणो कीधो रे।
चित्रसेनने रोहिणी।
मन शुद्ध संजम लीधो रे॥इम.॥२॥

आठे पुत्र आदरी, दीक्षा बारमा जिन आगे रे।
वली नानाविध तप आदरे, जिन धर्म तणी मती जागे रे ।३।
करी अनशन आराधना, लही केवल शिवपद पायो रे।
जिनवाणी आणि हिये, प्रभु चरणे चित्त लायोरे ।।इम.।।४।।
मन मोहन महिमा निलो, मे स्तवियो शिवपुर गामीरे ।
मन मान्या माहिबतणी हवे पुण्ये सेवा पामी रे ।।इम।।५।।

(कलश)

इम गगन इन्दु मुनिचंद (१७१०) वरसे, चोथ श्रावण सुदिमनी
मे करी गेहिणी तणो महिमा, सुगुरु मुखे जिम सामली ।
वासुपूज्य इम यथा प्रगत्र श्रमने, चितनी चिन्ता टली।
श्री सार जिन गुण गावता हवे, सकल मन आशा फली ।।१।।

॥ वासु पूज्य स्वामी का स्तवन ॥

लाज राखो प्रभु मारी दयालु देवा, लाज राखो प्रभु मारी ।
बहु भव भटकी मारो आव्यो श्री वासु पूज्य तमारी,
दयालु देवा लाज राखो प्रभु मारी ॥ १ ॥

काल अनंतो नरक निगोदे, भमियो बहु दुःख भारी ॥२॥
परमाधामी देव मुजने त्रास पडाव्यो अपारी ॥द.॥३॥
तिरिय गति पण महा पापकारी, वध बंधन करनारी ।द.।४।
सुरनर गतिमां कामे विटंब्यो, कर्म करी किकियारी ।द.।५।
एके गतिमां शाता न पाम्यो, शी कहुं कथनी हुँ मारी ।द.।६।
तारकता तुज सांभली आजे, आव्यो छुं आशा धारी ।द.।७।
मोह पिंजर थी छोडावो मुजने, आपनो हुँ छुं आभारी ।द.।८।
दीन दशामां बाकी न राखी, बनी गयो छुँ लाचारी ।द.।९।
नियमिक थई भवसागर थी, लेजो मुजने उगारी ।द.।१०।
शुद्ध बुद्ध चाली गई छे मारी, हिम्मत गयो छुँ हुं हारी ।द.।११।
दयाना सिंधु करुणा करीने, सेवकने ले जो तारी ।द.।१२।
सूरि नीतिना बाल उदय ने, मेलवजो शिवनारी ।द.।१३।



## ॥ वासु पूज्य स्वामी का स्तवन ॥

धरशो ना दिलमां रीश जिणंदजी, धरशो ना दिलमां रीश ।
तुं दायक ने हुं मांगण छुं, मांगण तो मागीश ।
हठील थई हठ मांडीश, धरशो ना दिलमां रीश ॥१॥

आज काल कही कही ललचायो, दीधुं ना हाथथी दान ।
फरी फरी फेरा फरी थाक्यो. तोये ना दीधुं दान ॥
हवे घरघर घरगुं घलीश, जिणंदजी घरशोना दिलमा रीश ।२।
मोको नथी हमणा देवानो, एम मुखे कहेतां शुं थाय ।
सुटी नच्चे मोपारी आगी एवो नवो छे न्याय ॥
छतालीना विना नहीं जाईश, जिणदजी धरशो० ॥३॥
ना कहेता मान न रहे, देता ना चाले जीव ।
दातारथी पण कजुग मागे, ना कहीं आपे सदैव ॥
हवे खाली केम काढीस, जिणद जी घरशो० ॥४॥
ओछु थई जाशे एवा भयथी, देता करो छो विचार ।
माग जे मागे आपु तुजने, ते केम कर्यो उच्चार ॥
हवे तु मुजने शुं आपीश, जिणद जी धरशो० ॥५॥
दायक बिरुद धरीने बेठा, कल्पतरु नी जेम ।
हवे याचकनु वाछित देता, मुडा गारो छो केम ॥
जगपति बिरुद केम पालीश, जिणद जी धरशो० ॥६॥
वार्याथी तने थोडु आपीश, काढीश नहीं निराश ।
आटलुं पण नवि मुखथी बोलो, शुं अम भरशे आश ॥
वली मुज दारिद्र शु गाळीश, जिणद जी धरशो० ॥७॥

तु ं दारिद्र दावानल समाववा, समजी मेघ समान ।
वर्ष वर्ष कहेतां हुं मुखथी, धरु ं छु ं ताहरू ं ध्यान ॥
छतां मने क्यां सुधी तु ं तपावीश, जिणंद जी धरशो० ॥८॥
वीतराग पद पामी पोते, भक्तने राजी कीध ।
रागीने शु ं आपे विरागी, हवे में समजण लीध ॥
मुनीश्वर इच्छाने वालीश, जिणंद जोध रशो० ॥६॥
नरपति चंपानगरी नो वासी, वासुपूज्य परमेश ।
चतुर विजय किंकर कहे छे, दर्शन तारु ं भलो हमेश ॥
मुज उमेद दिल राखीश, जिणंदजी धरशो नां दिलमां रीश।१०।

---

## ॥ अमावस्या स्तवन ॥

वीर सुणो मोरी विनति, कर जोडी हो कहुँ मननी वात ।
बालकनी परे वीनवुँ, मोरा स्वामी हो तुमें त्रिभुवन तात ।टेर।
तुम दरिशण विण हुँ भम्यो, भवमांहे हो स्वामी समुद्र मझार
दुक्ख अनन्ता में सह्या, ते कहितां हो किम आवे पार ।१।
पर उपकारी तु ं प्रभु, दुख भांजे हो जग दीन दयाल ।
तिण तोरे चरणे हुं आवियो स्वामी मुझने हो निज नयण निहाल २

अपराधी पिण उद्धर्यां, ते कीधी हो करुणा मोरा स्वाम ।
परम भक्त हुँ ताहरो, तिणे तारो हो नहीं ढीलनो काम ।श्री.।३
शूलपाणि अनिरुभक्ष्यो, जेणे कीधा हो तुजने उपसर्ग ।
डंक दियो चण्डकोशिये, ते दीधो हो तसु आठमो स्वर्ग ।श्री ।४
गोशालो गुण हीनडो, जेणे बोल्या हो बोल अवरण वाद ।
ते बलतो ते राखियो, शीतलेश्या हो मूकी सुप्रसाद ।श्री.।५
ए जुग छे इन्द्र जालियो, इम कहे तो हो आयो तुम तीर ।
ते गौतम ने ते कीयो, पोतानो हो प्रभुतानो वजीर ।श्री.।६
वचन उत्थाप्या ताहरा, जे भगडयो हो तुम साथ जमाल ।
तेहने पिण पनरे भवे, शिवगामी हो ते कीधो कृपाल ।श्री.।७
आरमतो ऋषि जे रम्यो, जल मांहे हो बांधी माटीनी पाल ।
तिरतो मूकी काचली, ते तार्यो हो तेहने तत्काल ।श्री।८।
मेघकुमर ऋषि दूहव्यो, चित चूको हो चारित्र थी अपार ।
एकावतारी तेहने, ते कीधो हो करुणा भंडार ।।श्री.।।९।।
हार वरस वेश्या घरे, रह्यो मूकी हो संयमनो भार ।
नंदिषेण पिण उद्धर्यो, गुणधारी हो दीधो अधिकार ।।श्री.।१०।
एम अनेक उद्धारिया, गुरुवासे हो गणिया तस नाम ।
ते जिम सार करावजे मांगो हो तोरो पद धर्मा ।श्री.।११।

ते तो प्रणमीने मन हंस, जात्रीड़ा जात्रा० ॥७॥
पंचे पांडव इण गिरि आया रे, सिद्धा नवनारद ऋषिराया रे।
वली साम्ब प्रद्युम्न कहाया, जात्रीड़ा जात्रा० ॥८॥
ए तीरथ महिमा वन्त रे, जिहां सिद्धा साधु अनन्त रे।
इम भाखे श्री भगवंत, जात्रीड़ा जात्रा० ॥६॥
उज्ज्वल गिरि समो नहीं कोय रे, तीरथ सघला माहि जोय रे।
जे फरस्यां पावन होय, जात्रीड़ा जात्रा० ॥१०॥
एकल आहारीने सचित्त परिहारी रे, पदचारीने भूमीसंथारी रे।
शुद्ध समकितने ब्रह्मचारी, जात्रीड़ा जात्रा० ॥११॥
एम छहरी जे नर पाले रे, बहु दान सुपात्रे आले रे।
ते तो जन्म मरण भय टाले, जात्रीड़ा जात्रा० ॥१२॥
धन्य धन्य ते नरने नारी रे, भेटे विमलाचल इक तारी रे।
जाऊं तेहनी हुँ बलि हारी, जात्रीड़ा जात्रा० ॥१३॥
श्री जिनचन्द्र सूरि सुपसाये रे, जिनहर्ष हिये हुलसाये रे।
इम विमलाचल गुण गाये, जात्रीड़ा जात्रा० नवाणुं करिये रे १४



## ॥ श्री महावीर सप्त विंशति भव वर्णन का स्तवन ॥

### ॥ दोहा ॥

श्री महावीर जिनेंद्र को, नमन करु चित्त लाय ।
भव सत्तावीस म कहुँ, सुख कर गुरु सुपसाय ॥

---

### ॥ ढाल १ ॥

॥ वर्धमान जिनवर तणा जी चरण नमु चित्तलाय ॥ (देशी)

भविकजन वीर चरित्त चित्तधार,
वरलो समकित सार ।भ. ॥टेर॥

पश्चिम महा विदेह मे जी, "नयसार" नाम सुथार ।
काष्ठ कारण रण मे गयो जी, लागी भूख अपार ।भ.।१।
भोजन करने के लिए जी, बैठा तरुवर छांह ।
ततखिण मन परिणति हुई जी, पामी हर्ष उछाह ।भ.।२।
अतिथि जो आवे इहा जी, होवे आतम शुद्ध ।
भाग्य उदय हो माहरो जी, देऊं दान विशुद्ध ।भ.।३।
मारग सनमुख देखतेजी, बेठा श्री "नयसार"
भाग्य सयोगे भेटियाजी, पथ चूके अणगार ।भ.।४
मन मे हर्ष धर्ग करी जी, पहुँच्यो मुनिवर पास ।

धन्य घडी दिन आज है जी, पूरो मुझ मन आस ।म.।५।
भाव देव "नयसार" के जी, आये मुनि महाराज ।
शुद्ध माल आहार को जी, लेवे संयम काज ।म.।६।
भव्य जीव तब जानके जी, देवें गुरु उपदेश ।
समकित मोती उपज्यों जी, सीप स्वाति जल लेश ।म.।७।
द्रव्य भाव मारग लहे जी, साधु श्री नयसार ।
साधु संगे साधुताजी, प्रकटत है निर्धार ।म.।८।
भव पहिले समकित लह्यो जी,बीजे भव "देव लोक"
पहिले एक पल्योपमें जी, हरि सुख पावे अशोक ।म.।९।



## ॥ दोहा ॥

सौधर्म सुर लोक में, भोगवी सुख अपार ।
"दक्षिण" भरते अवतर्यो, श्री नयसार सुधार ॥
अरणिक मुनिवर चाल्या गौचरी ॥देशी॥
विनिता नगरी रे 'चक्रि भरत के' के घर में लियो अवतार जी
नाम दियो शुभ मरिची तात ने उत्सव पूर्वक सारजी ।
देखो देखो रे करम तणी गति, भुलादेवे निज भानजी ॥टेर॥

बाल कालको रे छोड युवा भयो, करे अनेक विलास जी।
एक दिन वन्दन आदि जिनद गयो, पायो बोध विकास जी
देखो देखो रे करम तणी गति ॥१॥
वैराग रगे रे दीक्षा ले सदा, सेवे श्री जिन नाथ जी।
तीव्र तपस्या शरीर सहे नहीं, जाणी छोडे साथ जी।
देखो २ करम तणी गति ॥२॥
हो एकाकी मनमे चिंतवे, मैं करू नूतन चालजी।
हाथ कमडलु शिर छत्री धरे, पग चाखडी गले माल जी।
देखो २ रे करम तणी गति ॥३॥
हाथ त्रिदंड रे भगवा वेष मे, राजि हुआ जिण चित्तजी।
मु ड मु डावे रे चोटी शिर धरे, राखे यज्ञो पवित्तजी।
देखो २ रे करम तणी गति ॥४॥
स्नान करे और जाप जपे सही, आदि जिनंद त्रिकालजी।
कन्द मूलका रे नित भक्षण करे, करे समकित संभालजी।
देखो २ रे करम तणी गति ॥५॥
प्रभुजी के पीछे रे पीछे रहे सदा, विचरे देश विदेश जी।
समवसरण रच सुरपति जब करे, बैठे बाहिर प्रदेश जी।
देखो २ रे करम तणी गति ॥६॥
आवे कोई रे वदन कारणे, दे सच्चा उपदेश जी।

संयम रंगे रे रंगी भाव से, भेजे प्रभु जी के पास जी।
देखो २ रे करम तणी गति ॥७॥
करते पावन अवनितल प्रभु, आवे नगरी "विनिता जी"।
भरतादिक सब नर सुर वर मिलि, वंदन करे इक चित्ताजी।
देखो २ रे करम तणी गति ॥८॥
वंदन करके रे निज थानक प्रति, बैठे भरत सनूर जी।
बार परषदा बैठी देख के, पूछे भूप पंडूर जी।
देखो २ रे करम तणी गति ॥९॥
आप समान रे कोई जीव है, समवसरण मझार जी।
भाषे प्रभुजी रे बाहिर है सहि, मरिची नाम कुमार जी।
देखो २ रे करम तणी गति ॥१०॥
चोथे आरे के होगा अन्त में, "चोवीसमो श्री वीरजी।
"क्षत्रिय कुंडे" 'सिद्धारथ" घरे, त्रिशला नन्दन वीरजी।
देखो २ रे करम तणी गति ॥११॥
श्री मुख वाणी रे भरत सुणी करी, पाया हर्ष अपारजी।
मरिचि निकट में रे जावे प्रेम से, बोले वचन उदारजी।
देखो २ रे करम तणी गति ॥१२॥
तूँ वासुदेव रे पहिलो भरत में, मुका विजये चक्कीजी।

फिर तूं होगा रे जिन चोवीसमो, महावीर नामे नरकीजी।
देखो २ रे करम तणी गति ॥१३॥
पहिली दूजी रे पदवी को नहीं, नाहीं त्रिदंडी वेशजी।
श्री तीर्थङ्कर पद को मैं नमुं, सुन श्री जिन उपदेश जी।
देखो २ रे करम तणी गति ॥१४॥
वन्दन करके रे भरत घरे गयां, सुन कर नाचे मरिचीजी।
धन २ मुझको रे धन मुझ वंशको, धन मुझ करणी ऊंचीजी।
देखो २ रे करम तणी गति ॥१५॥
मेरे दादा रे तीर्थंकर हुवे, तात हुए मुझ चक्री जी।
उन दोनोंसे रे अधिका मैं हुआ, वासुदेव पद चक्रीजी।
देखो २ रे करम तणी गति ॥१६॥
तीर्थंकर की रे पदवी मुझको, होगी विसवा वीसजी।
तीनों पदवी को मैं भोग के, लूंगा मुक्ति जगीशजी।
देखो २ रे करम तणी गति ॥१७॥
नाच कूद के रे कुल को मद कयों, बांध्यो कर्म को नधजी।
हरि कहे तातें रे होगा देखना, नीच गोत्र सम्बधजी।
देखो २ रे करम तणी गति ॥१८॥

---

इग्यारमें भव सुर भयो, तीजे स्वनत् कुमारजी ।
च्यव श्वेताम्बी नगरी में, भारद्वाज द्विज सारजी ।प०।१३।
चालीस लाख पूरव भलो, बारमें त्रिदण्डी जाणजी ।
मरके चौथे महेन्द्र में, तेरम भवगुण खाणजी ।प०।१४।
राजगृह में द्विज हुवो, थावर लाख चोत्रीशजी ।
पूर्व आयु त्रिदण्डीयो, चौदवें सव सुजगीशजी ।प०।१५।
पनरस ब्रह्म में अवतर्यो, सोलम विश्वभूति जीवजी ।
'विशा नन्दी' घर जन्मियो 'धारणी' कुक्षी से दीवजी ।प०। १६
वीर चरित्त शुभ भाव से, हरि गावे गुण धामजी ।
सार विचार सुधारके, पायो शिव आरामजी ।प०।१७।



॥ दोहा ॥

बाल कालको छोडके, भयो युवान कुमार ।
बाडी में सुख भोगवे, नित प्रति सुर समसार ॥१॥
देखी राजकुमार मन, उपज्यो द्वेष कराल ।
जाय पिताको यों कहे, दो बाडी तत्काल ॥२॥
शांत करे निज पुत्र को, सोचे भूप उपाय ।

शिरनभतिको भेजता, वश कारण सिंह राय ॥३॥
जीत पकड लाया दिया, निज चाचा के हाथ।
वाडीमे जाने लगा, जब कीरति के साथ ॥४॥
द्वारपाल तब यो कहे, रहते राज कुमार।
नहीं जा सकते आप अब, नव जाने छल सार ॥५॥
पुनः क्रोध से वह कहे, सुन लेना नर नार।
वश अंश म ना करूँ, नहीं तो क्या है भार ॥६॥
चरे वृन्त कपीठका, देकर मुष्टि प्रहार।
निज दुश्मन को चरते, लगे जु इतनी वार ॥७॥



## ॥ ढाल ४ ॥

माला फाटे रे लाला जीवका (रंगी)

तुम देखो भाई गहन गति रे, गति चार की ॥टेर॥
सभूति गुरु पासमें रे, जा कर दीक्षा लीध।
तपस्या कर निज काय सुकाई, वर्ष हजार प्रसिद्धजी।
तुम देखो भाई गहन गति रे, गति चार की ॥१॥
विचरता अवनीतले रे, म थुरा पुरम जाय।
मांस ज्यो गोचरी फिरने को पाट डाटी गायजी ।तुम ॥२॥

विशाखनन्दी भाई चचेरा, हंस कर बोले वानी ।
कवीठ फल बल गया कहां कह, अरे महा अभिमानीजी ।३।
सुन कर साधु परिणति पलटी. क्रोध हुवा विकराल ।
गाय धुमाई सींग पकड़ कर, छोड़ दिई संभालजी ।तुम।४।
देखा बल अब तप फल हो तो, पूरव भव निर्धार ।
मारू मैं तुझको यों कहते, विश्वभूति अणगारजी ।तुम।५।
कर निदान अनशन करी रे, महा शुक्र में जाय ।
सतरह में भवमें सुख विलसे. उत्कृष्ट स्थिति पायजी ।तुम।६।
पोतनपुर नृप प्रजापति की. पुत्री रतन कुक्षी ।
भव अष्टादश में वह जनमा, सप्त सुपन की साक्षी जी ।७।
त्रिशाखनन्दी जीव सिंह को, मारी वासुदेव ।
त्रिपृष्ट नामे हुवा भरतमें, करता सुर नर सेव जी ।तुम।८।
पाप पुष्ट उन्नीसमें भव में, सप्तम नरके जाय ।
बीसमें भवमें भीम भयङ्कर, सिंह हुवा वन रायजी ।तुम।९।
इक्कीसमें भव चौथी नरक से, निकल फिरे संसार ।
बाईसमें भव साधारण नर, पुण्य क्रिया व्रत धाराजी ।१०।
तेईसमें भव राय धनञ्जय, धारिणी कुखे आय ।
चौद सुपन सूचित अवतरिया, प्रिय मित्र चक्रीरायजी ।११

पोट्टिला चारज से दीक्षा, शिक्षा युत ले पाले।
वर्ष कोटि संयम आराधी, पाप पुंजको गालेजी ।तुम।१२।
महाशुक्र में चौवीस भव, सुर पदवी सुखकारा ।
पचवीसमें भवम फिर होवे, नन्दन राज कुमाराजी ।तुम।१३।
दीक्षा पोट्टिलसूरि से ले, बीस पदों को ध्यावे ।
तीर्थङ्करवर नाम बंधन कर, भावदया दिल भावेजी ।तुम।१४।
लाख वर्ष चारित्र पालते, यावज्जीव उदारा ।
मासखमणसे करे पारणा, क्षमा सहित हितकाराजी ।तुम।१५।
वर्ष लाख पचवीसका रे, आयुष अपना भोगी ।
'हरि' कहे नित नंदु नंदन, महा तपस्वी योगी रे ।तुम।१६।



## ॥ दोहा ॥

प्राणत नामक स्वर्ग में, पुष्पोत्तर सुविमान ।
छब्बीसमें भवमें रहा, सुर सुरनाथ समान ॥१॥
देवलोक सुख भोगते, करते पुण्य निधान ।
जिन यात्रा स्नात्रादि में, नित्य रहे गुलतान ॥२॥
बीस सागर आयु स्थिति, पूर्ण भई जब सार ।

च्यवन दुःख नहीं जानते, तब च्यवते निर्धार ॥३॥
च्यवन कल्याण के समय, भुवन भयो कल्याण ।
पुण्यवान जावे जहां, प्रकटे वहां निधान ॥४॥



## ॥ ढाल ५ ॥

गुजराती गरबा पद्धति (देशी)

भवियां वीर चरित्र पवित्र हृदय में धारना रे ।
भीषण भव सागर से कैसे पावे पार ॥
इसका वीर चरित्र में खूब किया विस्तार ।
आतम परिणति कर निज कर्म विचारना रे ॥टेर॥
साखी-पूर्व गोत्रमद करने से, नीच गोत्र कर बन्ध ।
सत्तागत उस कर्म से, हुवा उदय संबंध ॥
सत्तावीस में भव ब्राह्मण कुल में अवतारना रे ।भ०।१।
साखी-ब्राह्मण कुण्ड सु गांव में, ऋषभदत्तवर नाम ।
देवानंदा ब्राह्मणी, तस गृहिणी गुण धाम ।
करती चौद सुपन लख, दिव्य गरभ प्रति पालना रे।भवि० २।
साखी-शक्र सिंहासन थर हर्यो, जाने च्यवन सुरिंद ।
सात आठ पग सामने, जा वन्दे जिन चन्द ।
शक्रस्तव की सविनय शक्र करे, उच्चारना रे ।भवि०।३।

साखी-पूर्वाभिमुख सिंहासने, वदन करके इन्द ।
बैठ सचिन्त विचारता, पुरुष शलाका वृन्द ॥
भिक्षादिक नीच कुल में जन्म न ले निरधारना रे ।भवि०।४।
साखी-हरिणगमेषी देव को, हुकम करे सुर राय ।
क्षत्रिय कुण्ड सुगाम में, श्री "सिद्धारथ" राय ॥
त्रिशलादेवी कुक्षि श्री जिनको संचारना रे ।भवि० ।५।
साखी-हरिण गमेषी देव तब, दिव्य गति को धार ।
देवानन्दा कुख से, करे प्रभु अपहार ॥
दूजा गर्भ हरण कल्याणक शास्त्र धारना रे ।भवि० ।६।
साखी-सिंहादिक चौदह सुपन, देखे परम उदार ।
त्रिशला निज पतिसे तदा, सुनती स्वप्न विचार ।
होगा चक्री वा तीर्थंकर सुत सुखकारना रे ।भवि०।७।
साखी-बीते नौं महीने उपर, दिन जब साडे सात ।
हस्तोत्तर नक्षत्र में, जनमे त्रिभुवन तात ॥
तीजा जन्म कल्याणक, तीन भुवन जयकारना रे ।भवि०।८।
साखी-छप्पन दिशा कुमारिया, सूति कर्म कर जाय ।
सुरपति सुर सह सुरगिरि स्नात्र, महोत्सव ठाय ॥
सुरपति शक्र स्वामी करते दूर निवारना रे ।भवि० ।९।

द्र सामानिक संगम सुर मन, छाया तब अभिमान ।
पापी शौचे कैसे न चलते ?
देखूँ करके निदान ॥नमो० ॥३॥
दृढ भूमि पेढालोद्याने, पोलास नामक थान ।
वीर प्रभु पर वीस महा ।
उपसर्ग करे अज्ञान ॥ नमो० ॥ ४ ॥
उपसर्गों की दारुणता लख, सुर पति शोक प्रधान ।
सुर सुख भोग तजे मन चिंते,
धन धन धन भगवान ॥नमो रे नमो० ॥५॥

---

## ॥ ढाल २ ॥

भेखरे उतारो राजा भरथरी (देशी)

रे मन प्रभु गुणमें रमो, प्रभु हैं तारण हार ॥टेर॥
संगम सुर उपसर्ग में, अनुपम आतम ध्यान ।
धारे वीर प्रभु नमो, भक्ति भाव प्रधान ॥रे मन० ॥१॥
धूली वर्षा सुर करे, भरे निज मन पाप ।
वज्रमुखी करे चीटियें, पर प्रभु निर्मल आप ॥रे मन०॥२॥

मच्छर डांस घिमेल से, चटकावे प्रभु अंग ।
छोडे बिच्छु नेवला, चूहे काले भुजंग ॥रे मन० ॥३॥
हाथी हथिणी मद भरे, काटे व्याघ्र कराल ।
अट्टहास्य करे अरे, होकर दुष्ट वेताल ॥रे मन०॥४॥
तेज हवा तलवारसी, और आंधी अपार ।
फैलावे सुर पर प्रभु, आतम गुण अविकार ॥रे मन०॥५॥
सिद्धारथ त्रिशला बनें, करे करुण विलाप ।
पर प्रभु आतम ध्यान में, परमातम पद छाप ॥रे मन. ॥६॥
प्रभु अंगे पंछी पींजरा, बांधे बने चंडाल ।
प्रभु पदमें अगनी धरे, ज्वाला जारे विशाल ॥रे मन॥७॥
छोडे गोला लोहका, सहस भार प्रमाण ।
प्रभु सिर पे आकाश से, धसे जानु प्रमाण ॥रे मन०॥८॥
सूर्योदय दिखला कहे, विचरो हे आर्य ।
पर प्रभु जाने कर रहा, माया देव अनार्य ॥रे मन०॥९॥
निज ऋद्धि दिखला कहे, हुवा हूँ तुष्टमान ।
जो मांगो सो दूं तुम्हे, पर प्रभु निश्चल ध्यान ।रे मन.।१०।
बीस करे उपसर्गयों, एक रात मे हंत ।
आखिर देव ही थक गया, जय जय जिन जयवंत ।रे मन.।११

अन्तिम चउमासी प्रभु पावन, "पावापुरी" पधारे।
सोलह प्रहर-तक उपदेशामृत, वर्षे अखंडित धारे रे।भ०।४।
कर्म विपाकोदय प्रभुजी के, भविजन पुण्य सहाई।
कारण योगे कारज प्रकटे, यह अनुभव चिर थाई रे।भ०।५।
चौदश में गुणठाणे स्वामी, पुद्गल बन्ध वियोगी।
शैलेसी करणे करी होते, शिव रमणी के भोगी रे।भ०।६।
काती अमावस स्वाति नक्षत्रे, कल्याणक निर्वाणी।
मिश्रित भावे उत्सव करते, इन्द्र तथा इन्द्राणी रे।भ०।७।
भावोद्योत जिनेश्वर के बिन, थी अम्मावस काली।
गणराजा विचरत तव जगमें, द्रव्योद्योत दिवाली रे।भ०।८।
आदिम गौतम गणधर स्वामी, वीर प्रभु पटधारी।
देव मुखे निर्वाण सुने, तब शोच करे अति भारी रे।भ०।९।
मोह दशा रजनी क्षय होते, परम महोदय शाली।
केवलज्ञान रवि तब प्रगट्यो, प्रकटी अद्भुत लाली रे।१०।
आय हरि उत्सव तब रचते, करते जय जय कारी।
गौतम वीर प्रभु नित नमते, संघ में मंगलाचारी रे।११।



## (कलश)

अति स्वच्छ खरतर गच्छ में सवेग रंग 'विराजते ।
श्री सदगुरु सुख सिंधु, त्रिभु भगवान सागर गाजते ॥
तस शिष्य "हरि सागर गणी", उन्नीस से त्यासी समे ।
वेरावले श्री वीर स्तव गाते, विजय हो सवमे ॥

---

## ॥ छह मासी का स्तवन ॥

### ॥ ढाल १ ॥

॥ नमो रे नमो मगलमय महावीर ॥ (देशी)

नमो रे नमो वर्धमान भगवान,
शासन नाथ महान ॥नमो० ॥टेर॥
देव सभा मे देवपति करे, वीर प्रभु गुणगान ।
त्रिभुवन विजयि भाव अकम्पित,
धारें आतम ध्यान, नमोरे नमो० ॥१॥
सागर वर गभीर धीर प्रभु, अविचल मेरु समान ।
सुर असुर समरथ नही प्रभुका,
तोड सके शुभ ध्यान ॥नमो० ॥२॥

## ॥ ढाल ३ ॥

थोडीसी जिंदगी के काज क्या तुम कडवा बोलो (देशी)

महावीर स्वामी जैसे वीर जग में और नहीं है ।

धीर वीर गंभीर, ज्ञानी और नहीं है ॥टेर॥

मन वच तनु तीनों योग, जिनके आतम योगी ।

शाश्वत सुखमें लीन, दुखका नाम नहीं है ।महावीर ॥१॥

संगम सूर उपसर्ग, करता नाना भांति ।

छह महीना महावीर, मन में शोच नहीं है । महा०।२।

वह थक गया सुरलोक सुरपतिने धिक्कारा ।

धन प्रभु वीर महावीर, मन में क्रोध नहीं है ।महा० ।३।

इच्छा रोधन योग, प्रभु तप धारी भारी ।

छहे मासी उपवास, विषय की आश नहीं है ।महा०।४।

सुखसागर भगवान सुर गणपति हरि वंदे ।

महावीर स्वामी जैसे वीर जगमें और नहीं है ।महा।५।



## (कलश)

शासन पति महावीर स्वामी दीर्घ तप धारी प्रभो ।
पावन तपोबल दीजिये दानी गुणी ज्ञानी विभो ॥
सुख सिन्धु हे भगवान हे हरि पूज्य मैं सेवूँ सदा ।
जय हो विजय हो आपकी गुण–कीर्तियां गाउं मुदा ॥

---

## ॥ हालरडुं ॥

माता त्रिशला झुलावे पुत्र पालणे,
गावे हालो हालो हालरवानां गीत ।
सोना रूपाने वली रत्ने जडियुं पालणुं,
रेशम दोरी घुघरी वागे छुम छुम रीत ।
हालो हालो हालो मारा नन्द नें ॥१॥
जिनजी पार्श्व प्रभूथी, वरस अढीसे अन्तरे,
होसे चोवीशमो तीर्थंकर जिन परमाण ।
केशी स्वामी मुखथी एवी वाणी सांभली,
साची साची हुई ते, मारे अमृत वाण, हालो ॥२॥
चौदे स्वप्ने होवे चक्री के जिनराज ।

वीता बारे चक्री, नहीं होवे चक्रीराज ।
जिनजी पार्श्व प्रभुना श्री केशी गणधार,
तेहने वचने जाण्या चोविशमा जिनराज ।
मारी कूखे आव्या, तारण तरण जहाज,
मारी कूँखे आव्या, त्रण भुवन शिरताज ।
मारी कूँखे आव्या, संघ तीर्थनी लाज,
हूं तो पुण्य पनोती, इन्द्राणी थई आज ।हालो. ।३।
मुझने दोहलो उपन्यो, बेसुँ गज अंबाडिये,
सिंहासन पर बेसुं, चामर छत्र धराय ।
ए सहु लक्षण मुझने, नन्दन ताहरा तेजना,
ते दिन संभारुने, आनन्द अंग न माय ।हालो. ।४।
करतल-पगतल लक्षण, एक हजारने आठ छे,
तेहथी निश्चय जाण्या, जिनवर श्री जगदीश ।
नन्दन जमणी जांघे, लच्छन सिंह बिराजतो,
मैं पहिले सुपने, दीठो विश्वावीस ।हालो० ।५।
नन्दन नवला बंधव, नन्दी वर्धनना तमे,
नन्दन भोजाईयोना देवर छो सुकुमाल ।
हंसी भोजाईयो कहेशे, देवर माहरा लाडका,

हसशे रमसेने वली चूँटी खणसे गाल,
हमशे रमशेने वली ठूँसा देसे गाल ।हालो० ।६।
नन्दन नवला चेडा राजाना भाणेज छो,
नन्दन नवला पाचशे, मामीना भाणेज छो ।
नन्दन मामलियाना, भाणेजा सुकुमाल,
हमी हाथ उछाले, कहीने न्हाना भाणजा ।
आव्यो आजीने वली, टनकुँ करशे गाल ।हालो. ।७।
नन्दन मामा मामी, लावशे टोपी आगलां,
रतने जडिया झालर, मोती कशुंबी कोर ।
नीला पीलाने राता, मखे जातिना,
पहेरावशे मामी, म्हारा नन्द किशोर ।हालो. ।८।
नन्दन मामा मामी, सुखडली सहू लावशे,
नन्दन गजुवे भरशे, लाडू मोतीचूर ।
नन्दन मुखडा जोईने, लेशे मामी भामणा,
नन्दन मामी कहेशे, जीवो सुख भरपूर ।हालो ।६।
नन्दन नवला चेडा, मामानी साते सती,
मारी मर्याजाने, धंन तमारी नन्द ।
ते पण गजुवो भरवा, लाखण साई लावशे,

तुमने जोई जोई, होशे अधिको परमानन्द ।हालो.।१०।
रमवा काजे लावशे, लाख टकानो घूघरो,
वली सूडा मेना, पोपटने गजराज ।
सारस हँस कोयल, तीतरने वली मोरजी ।
मामी लावशे रमवा, नन्द तमारे काज ।हालो. ।११।
छप्पन कुमरी अमरी जल कलशे नवरावित्र्या,
नन्दन तमने अमने, केली घरनी मांय ।
फूलनी वृष्टि कीधी योजन एकने मण्डले,
बहु चिरंजीवो, आशिष, दीधी तुमने त्यांय ।हालो.।१२।
तमने मेरु गिरिवर सुरपति ये नवरावीत्र्या,
तमने निरखी हरखी सुकृत लाभ कमाय ।
मुखडा ऊपर वारूँ, कोटि कोटि चन्द्रमा,
वली तन पर वारु, ग्रहगणनो समुदाय ।हालो.।१३।
नन्दन नवला भणवा, नीशालें पण मूँकशुँ,
गज पर अम्बाडी, बेसाडी म्होटे साज ।
पसली भरशु श्रीफल-फोफल नागर वेलशु,
सूखडली पण लेशु, निशालीत्र्याने काज ।हालो।१४।
नन्दन नवला म्होटा थाशोने परणावशु,

वहुवर सरखी जोडी, लावशु राजकुमार ।
सरखा वेवाई वेवाणुंने पधरावशु,
वर बहु पोंखी लेशुं जोई जोई ने दीदार ।हालो. ।१५।
पीअर सासर मारा, वेहु पखे नन्दन ऊजला ।
माहरी कूखे आव्या, तात पनोता नन्द ।
माहरे आगणे वूठा, अमृत दूधे मेहुला,
माहरे आगण फलिया, सुरतरु सुखना कन्द ।हालो.।१६।
इणि परे गायु माता, त्रिशला सुतनुं पालणुं ।
जे कोई गाशे लेशे, पुत्र तणा साम्राज ।
बीलिमोरा नगरे, वर्णव्युं वीरनुं हालरुं,
जय जय मङ्गल होजो, दीप विजय कविराज-।हालो।१७।

## ॥ नन्दीश्वर द्वीप का स्तवन ॥

नन्दीसर बावन जिनालय, शाश्वता चौमुख सोहे रे ।
ऋषभानन चन्द्रानन वारिषेण, वर्धमान मन मोहे रे ।न।टेर।
आठमो द्वीप नन्दीसर अद्भुत, वलयाकार विराजे रे ।
तेहने मध्ये चिहुँ दिशि शोभित,
अञ्जन गिरिवर छाजे रे ॥न ॥२॥

जोयण सहस चउराशी ऊंचा ऊँचपणे अभिरामा रे।
मूले पृथुल सहस दश जोयण ।
उवरि सहस इक श्यामा रे ॥नं ॥२॥
ते ऊपर प्रासाद प्रभुना, अति उत्तुङ्ग उदार रे ।
साधु जंघा विद्याचारण, वांदे विविध प्रकारा रे ॥नं ३॥
चैत्ये चैत्ये एकशो चोवीश, बिंब संख्या सत्रि दाखी रे ।
ध्यात्रो सेवो भविजन भक्ते, शुद्ध आगम करि साखी रे ।नं४।
ऊंचपणे सहु जोयण बहुत्तर, सो जोयण आयामा रे ।
पिहुल पणें पचास जोयणना, प्रभु प्रासाद सुठामारे ।नं५।
धनुष पांचशे आयत प्रभुनी, विविध रतन मय काया रे ।
जिन कल्याणक उच्छव करवा, सुरपति भगते आया रे ।नं६।
अंजन अंजन चिहुँगिरि ऊपरे, चौमुख वावि विशाला रे।
वावि वावि विच इक इक पर्वत, राजत रङ्ग रसाला रे ।नं७।
चौसठ सहस जोयण उत्तङ्गे दश सहस सम पिहुला रे ।
चिहुं दिशि सोलह सोहे दधिमुखगिरि,
तिहां प्रासाद सुविमला रे । नं८ ।
वावि वाविने अन्तर विदिशे, रतिकर पर्वत रूड़ा रे ।
दोय दोय संख्या जगदीशे, कह्या नहीं ए कूड़ा रे ।नं९।

जोयण सहस मान दश ऊंचा, दश सहस विस्तारा रे ।
झल्लीरसम मठाण जगतगुरु निश्चय ए निरधारा रे ।न१०।
ते ऊपर प्रासाद सतोरण, अजनगिरि परिमाणे रे ।
जिन प्रतिमानी सख्याते हिज, श्री जिनराज वखाणे रे ।११
इम प्रासाद प्रभुना बावन, नन्दीसर वर द्वीपे रे ।
द्रव्य भाव विधि पूजा करता, मोह महा भड जीपे रे ।१२।
प्रवचन सार उद्धार प्रकरणों, जीवाभिग में जाणो रे ।
इम अधिकार छे ग्र थ अनेके, इहा शंका मत आणो रे ।१३।
जिम सुरपति विरचे तिहा पूजा, ते अनुभव इहां लावो रे ।
ध्यावो जिम पावो परमातम, जैनचन्द्र गुण गावो रे ।१४।

---

## ॥ पर्यूषण स्तवन ॥

कर लो कर लो रे थे भविजन प्राणी,
शिव सुख वर लो रे पजूषण कर लो रे ॥टेर॥
सब सुरवर मिल निज निज भक्ते, द्वीप नदीश्वर जावे रे ।
आठ दिवस अट्ठाई महोत्सव, कर सुख पावे रे ।पजू. ।१।
तिम भवि प्राणी आतम शक्ते, धार्मिक कार्य आराधो रे ।
जिनवर जी की पूजा करके, शिव सुख साधो रे ।पजू।२।

विविध प्रकारे पूजा रचावो, समकित निर्मल कर लो रे।
आंगी भावना मन शुद्ध करके भवजल तर लो रे।पजू.।३।
आठ दिवस अट्ठाई तपस्या, करके काज सुधारो रे।
जैन धर्म की महिमा करके, वान वधारो रे।पजू.।४।
हाथी घोड़ा और पालखी, रथ की तैयारी करावो रे।
वस्त्राभूषण सजकर भविजन, मंगल गावो रे।पजू.।५।
वाजे गाजे सब मिल गोरी, गुरु के पासे जावो रे।
कल्पसूत्र को लेकर माथे, हाथ धरावो रे।पजू.।६।
घर ले जावो रात्रि जगावो, ज्ञानकी भक्ति करावो रे।
सर्व शहर में फिर कर गुरु के पासे लावो रे। पजू.।७।
कल्पसूत्र की पूजा करके, वाँचना नवको सुन लो रे।
मधुरी वाणी गुरु मुख प्राणी, अमृत पीलो रे।पजू.।८।
जिन चरित्रने और पटावलि, सामाचारी भावे रे।
तीन अधिकार आदि से सुने, वो मुक्ति में जावे रे।९।
अट्ठाई उपवास करो भवि, वड़े कल्प को वेलो रे।
संवत्सरी को तेलो करके, बारे सौ झेलो रे।१०।
मूल पाठ को एक चित्त सुणिने, चैत्य प्रवाडी जावो रे।
मोहन मुद्रा जिनवर निरखी, अति हरखावो रे।११।

अभय अमारी पडह बजावो, दान सुपात्रे देवो रे।
अनुकम्पा कर जीवों ऊपर, प्रेम जगावो रे ।१२।
नवविध ब्रह्म गुप्ति को धारो, भावना शुद्ध मन भावो रे।
दोय टक पडिकमणा करिने, पाप भगावो रे।१३।
संवत्सरी पडिकमणो करिने, जीव चौराशी खमावो रे।
अपराधी को माफी देकर, अति हर्षावो रे।१४।
तिंवरी ग्राम चोमासो रह कर, पर्व पजूषण ध्याया रे।
संवत्त उन्नीसे अस्सी वर्षे, 'हरि' गुण गाया रे।१५।

---

## १ ॥ नवपदजी का स्तवन ॥

। महावीर तुमारी मोहन मूरति देखी मन ललचाय ॥देशी॥

मनवा धरले नवपद ध्यान, अभयपद तुझको आन वरे।
नवपद की महिमा भारी, है तीन भुवन निस्तारी।
कहते नहीं आवे पारी, सुर गुरु मन मे खेद धरे।म.॥१॥
पूरन नव अंक परा है, अनुपम भाव भरा है।
निजरूप न और धरा है, गिनती कितनी क्यों न करे।२।
है योग असंख्य गिनाये, अक्षय पद प्राप्ति उपाये।
नवपद ही मुख्य दिखाये, उनसे गौण सुनो मिगरे।३।

पहले पद हैं अरिहंता, निज द्रव्य-भाव-अरिहंता ।
है उपकारी जयवंता, सेवा सुरपति नित्य करे ॥४॥
सब लोकालोक विलोके, निज केवल ज्ञानालोके ।
ऐश्वर्य अनन्त विशोके, तेरम गुणठाणे विचरे ॥५॥
शठ आठ करम क्षयकारी, आत्मिक गुण आठ प्रकारी ।
शैलेसी करण निर्धारी, सिद्ध शिला पर जाय ठरे ॥ ६ ॥
निज जन्म मरण भय टारी, अजरामर भाव विहारी ।
हैं सिद्ध परम सुखकारी, सञ्चित् ज्योति से ज्योति भरे । ७ ।
जिनशासन थंभ समाना, छत्तीस परम गुणवाना ।
आचार विचार प्रधाना, आचारज भवरोग हरे ॥८॥
श्री उपाध्याय पदवासे, मूरख मति बोध विकासे ।
अज्ञान तिमिर भर नाशे, सूत्र अरथ का भान करे ॥६॥
जो द्रव्य भाव मुण्डित हैं, अनगार हुवे पण्डित हैं ।
की मोह चमू खंडित है, जिनने वे हैं साधु खरे ॥१०॥
जिन देशित तत्व विचारें, श्रद्धान अटल चित्त धारें ।
परभाव हृदय से टारें, दर्शन दुःख को दूर हरे ॥ ११ ॥
तब मोह तिमिर भर त्रासे, अनहद आनंद विलासे ।
भुवन त्रय नाटक भासे, जब वर ज्ञान कला प्रसरे ॥१२॥

आत्मिक गुण रमण निदानं, कृत परमातम पद दानं।
चारित्र पवित्र निधान, जिससे कर्म सभी विखरे ॥१३॥
जहा भाव रहे अविकारी, निज इच्छा रोधन कारी।
तप द्वादश विध जयकारी, नवमें पद सन्ताप हरे ॥१४॥
ये नवपद शिव पद दाता, ध्यावो मिले सुख साता।
तोडो जगत से नाता, चउगति चक्कर जासु टरे ॥१५॥
उन्नीस सत्यासी साले, आसो तेरस उजियाले।
जयपुर में नव पद ध्यावे, कीर्ति हरि कवीन्द्र उचरे ॥१६॥

---

## २ ॥ नवपद जी का स्तवन ॥

रामचन्द्र के बाग मे दोय नारंगी पाकी रे लो ॥देशी॥

सुरमणि सम सद्गु मंत्रमा, नवपद अभिरामी रे।
अहो नवपद अभिरामी रे लोक।
करुणा सागर गुणनिधि, जग अतरजामी रे लोक अहोजग।
त्रिभुवन जन पूजित सदा, लोकालोक प्रकाशी रे लोक।
एहवा श्री अरिहंत जी, नमृ चित्त उलासी रे लोय ।२।
अष्ट करम दल चयकारी, थया सिद्ध सरूपी रे लोय।

सिद्ध नमो भवि भावथी, जे अगम अरूपी रे लोय, ॥३॥
गुण छत्तीसे शोभता, सुन्दर सुखकारी रे लोय, ।
आचारज तीजे पदे वन्दू अविकारी रे लोय अहो वन्दूं ॥४॥
आगम धारी उपशमी, तप दुविध आराधी रे लोय ।
चौथे पद पाठक नमो, संवेग समाधिरे लोय, अहो सं ।५।
पंचाचार पालनपरा, पंचाश्रव त्यागी रे लोय, अहो पं. ।
गुणरागी मुनि पांच में, प्रणमुँ वडभागी लोय ॥ ६ ॥
निज पर गुणने ओलखे, श्रुत श्रद्धा आवेरे लोय ।
छठे गुण दरिशण नमो, आतम शुभ भावे रे लोय ।७।
ज्ञान नमो गुण सातमे, ने पंच प्रकारे रे लोय ।
स्वपर प्रकाशक दिनमणि, अज्ञान निवारे रे लोय । ८ ।
आठमे चारित्र पद नमो परभाव निवारी रे लोय ।
खांत्यादिक दश धर्मनो, जेह छे अधिकारी रे लोय ।९।
नवमे वली तपपद नमो, बाह्याभ्यंतर भेदे रे लोय ।
बांध्या काल अनंतना, जे कर्म उछेदे रे लोय ॥ १० ॥
ए नवपद बहुमान थी, ध्यावे शुभ भावे रे लोय. ।
नृप श्रीपाल तणी परे, मनवंछित पावे रे लोय. अ. ।११।
आसो चैत्र मासमां, नव आंबिल करिए रे लोय. अहोनव ।

नव ओली विधि युत करी, शिव कमला वरिए रे लोय, ।१२।
सिद्ध चक्रनी बहु परे, वर महिमा कीजे रे लोय, अहो वर ।
श्री जिनलाभ कहे मदा, अनुपम जस लीजे रे लोय,
अहो अनुपम जस लीजे रे लोय. ॥ १३ ॥

## ३ ॥ नवपदजी का स्तवन ॥

राग—धनासरी

शिवसुख के दातार, सेवो भवि ! नवपद जग सुखकार ।
बारे गुण कर शोभे जिनेश्वर, करते जग उपकार ।
घन घातिको दूर हटावे, केवल ज्ञान उदार, सेवो । १ ।
अलख निरंजन सर्व शिरोमणि, निर्मल गुण भंडार ।
सिद्ध शिला पर सिद्ध विराजे, महिमा अपरपार । से. ।२।
गच्छ थंभण आचारज सेवो, पाले पंचाचार ।
अवधारे छत्तीस छत्तीसी, ते सबके आधार ।सेवो। । ३ ।
चौथे पद पाठक निज्ञानी, आगम अगम विचार ।
संघ सकल को वाचना देवे, संशय छेदनहार ।सेवो. ।४।
पंच महाव्रत उत्कृष्ट पाले, गुण सत्तावीस धार ।
तप जप ध्यान सज्झाय करत हैं, वन्दो भवि अणगार ।५।

सम्यग् दर्शन सम्यग् धारो, हो जावो भवपार ।
जब लग समकित हाथ न आवे, भटके भव संसार ।६।
सम्यग् ज्ञान सुरत्न चिन्तामणि, दर्शन चरण आधार ।
तीन लोकमें दिव्य दिवाकर, वन्दो वारम्वार । सेवो. ।७।
अष्टम पद पूजो भवि हर्षे, चरण शरण मनुहार ।
आगम रीते जो भवि पाले, सफल गिनो अवतार ।८।
अन्तिम पद में शोभे तपस्या, कर्म निकन्दन हार ।
द्वादश विध जो ध्यावे दिलधर, पावे शिवपद सार ।९।
सेवो वन्दो ! भाव धरिने नवपद जग जयकार ।
मनवांछित फल पावोगे जिम, श्री श्रीपाल कुमार ।१०।
सुखसागर भगवान महामुनि, त्रैलोक्य गुरु दिलधार ।
आनंद से आनंद गुण गाया, आनंद आनंदकार सेवो ।११।

## ४ ॥ नवपदजी का स्तवन ॥

श्री सिद्धचक्र आराधो, मनवांछित कारज साधो रे ।
भवियां श्री सिद्धचक्र आराधो ॥ टेर ॥
पद पहिले अरिहंत ध्यावो, जेम अरिहंत पदवी पावो रे ।१।

पद दूजे सिद्ध मनावो, जिम सिद्ध सरूपी होई जावो रे ।२।
सूरि तीजे गुणवंता, जगनायक जग जयवंता रे ।३।
चौथे पद उवझाया, जिनमारग आण बताया रे ।४।
साधु सकल गुणधारी, पद पंचमे जग हितकारी रे ।५।
दरिशण पद छट्ठे वन्दो, जेम कीरति होय चिर नन्दोरे ।६।
ज्ञान पद सातमे दाख्यो, चारित्र पद आठमे भाख्योरे ।७।
तप पद नवमे आख्यो, जेम वीरजीने वचने राख्योरे ।८।
श्रीपाल ने मयणा लीधो, नवमे भवे कारज सीधो रे ।९।
इम नवपद महिमा जाणी, जिनचन्द्र हिये मन आणीरे।१०।

---

## ॥ नवपद जी की ढाल ॥

### ढाल ॥१॥

जीहो कुंवर बेठा गोखडे ॥देशी॥

जीहो प्रणमु दिन प्रते जिनपति ।लाल॥
शिव सुखकारी अशेष ॥ जीहो ॥
आसोज चैत्री तणी ।लाल॥ अट्ठाई विशेष,
भविक जन । जिनवर जग जयकार ॥१॥
जीहो जिहा नवपद आधार, भ० । टेर ।

जीहो तेह दिवस आराधवा, नंदीश्वर सुर जाय ।
जीहो जीवाभिगम मांहे कह्युँ, करे अठदिन महिमाय. ।२।
जीहो नवपद केरा यन्त्रनी, पूजा कीजेरे जाप ।
जीहो रोग शोक सवि आपदा, नाशे पापनो व्याप. म. ।३।
जीहो अरिहंत सिद्ध आचारजा, उवज्झाय साधु ए पंच ।
जीहो दंसण नाण चारित्र तवो, ए चऊ गुणनो प्रपंच ।४।
जीहो ए नव पद आराधतां, चंपापति विख्यात ।
जीहो नृप श्रीपाल सुखियो थयो, ते सुणजो अवदात. ।५।



## ॥ ढाल २ ॥

कोईलो पर्वत धूंधलोरे ॥देशी॥

मालवपुर उज्जेणियेरे लो, राज्य करे प्रजापाल रे,
सुगुण नर ! सुरसुन्दरी मयणा सुन्दरी रे लो,
बे पुत्री तस बालरे सु. श्री सिद्ध चक्र आराधिए रे लो. ।१।
जेम होय सुखनी मालरे, पहिली मिथ्या श्रुत भणी रे ।
बीजी जिन सिद्धांत रे सु. बुद्धि परीक्षा अवसरे रे ।
पूछे समस्या तुरन्तरे सु. श्री. ॥२॥

तूठो नृप वर आपवा रे पहिली करेने प्रमाण रे मु. ।
बीजी कर्म प्रमाणथी रे. कोप्यो ते वर नृपभाण रे ॥३॥
कुष्टीनर परणावियो रे, मयणा वरे धरी नेहरे ।
रामा हजिय निचारीए रे, सुन्दरी विणसे तुज देहरे ॥४॥
श्रीसिद्ध चक्र प्रभावथी रे, नीरोगी थयो जेहरे ।
पुण्य पसाये कमला लही रे, वाध्यो घणो समनेहरे ॥५॥
माउले वात ते जब लही रे, वादवा आव्या गुरु पासरे ।
निज घर तेडी आवियो रे, आपे निज आवासरे ॥६॥
श्रीपाल कहे कामिनी सुणो रे, हुं जाउं परदेश रे ।
मालमता बहु लावशुं रे, पूरशुं तुम तणी खतरे ॥७॥ ।
अवधि करि एक वर्षनी रे, चाल्यो नृप परदेश रे ।
शेठ धवल साथे चल्यो रे, जलपथे सुविशेष रे ॥८॥

—

## ॥ ढाल ३ ॥

इडर आंबा आंबली रे ॥ देशी ॥

परणी बब्बर पति सुतारे, धवल मूकाव्यो ज्याह ।
जिनवर राग उघाटने रे, कनककेतु बीजी त्याह ॥१॥
चतुर नर ? श्री श्रीपाल चरित्र परणी सुनारसुपालनी रे ।

समुद्र तटे आवंत मकर केतु नृपनी सुता रे, वीणावादे रीझंत ।२।
पांचमी त्रैलोक्य सुन्दरी रे, परणी कुब्जा रूप ।
छट्ठी समस्या पूरती रे, पंच सखीशूं अनूप ॥ ३ ॥
राधावेधे सातमी रे, आठमी विष उतार रे ।
परणी आव्यो निज घरे रे, साथे बहु परिवार ॥ ४ ॥
प्रजापाले सांभली रे, परदल केरी वात ।
खंधे कुहाडो लेई करी रे, मयणा हुई विख्यात ॥ ५ ॥
चंपा राज्य लेई करी रे, भोगवी कामित भोग ।
धर्म आराधि अवतर्यो रे, पहोंतो नवमें सुरलोग ॥ ६ ॥

---

## ॥ ढाल ४ ॥

कंत तमाकू परिहरो ॥ देशी ॥

एम महिमा सिद्धचक्रनो, सुणी आराधे सुविवेक ।
मोरे लाल, श्री सिद्धचक्र आराधिए ॥ १ ॥ टेर ॥
अष्टदल कमलनी थापना, मध्ये अरिहंत उदार ।
चिहुँ दिशे सिद्धादिक चउ, वक्र दिशे चतु गुण धार ॥२॥
बे पडिक्कमणां जंत्रनी, पूजा देववंदन त्रिकाल ।
नवमे दिन सविशेष थी, पंचामृत कीजे पखाल ॥ ३ ॥

भूमिशयन ब्रह्मविधि धारणा, करवी गयो त्रण जोग ।
गुरु वैयावच कीजिए, धरो सद्दहणा योग ॥ ४ ॥
गुरु पडिलाभी पारीए, साहमी वच्छल पण होय ।
उजमणा पण नव नवा, फल धान्य रयणादिक टोय ॥५॥
इह भव मांहि सुखसंपदा, परभवे मांहि सुख थाय ।
पंडित शान्ति विजय तणो, कहे मान विजय उवझाय ॥६॥

---

## ॥ नवपदजी का स्तवन ॥

देवरा दो नणगोर भँवर ? माने देवरा दो गणगोर ॥देशी॥

धरलो निर्मल ध्यान भविक जन ! धरलो निर्मल ध्यान
शिवसुख के सनेही भविक जन ! धरलो निर्मल ध्यान ।टेर।
चार कर्म को क्षय करीने, होते अरिहंत रूप ।
बारे गुण के धारक जिनवर, सेवो शुद्ध स्वरूप ॥ १ ॥
अगम अगोचर अलख निरंजन, बीजे पदमें सिद्ध ।
आठ कर्मके मारक मारक, गुणके आठ प्रसिद्ध भविक ॥२॥
गुण छत्तीसे गाजे गणधर, त्याजे विषय कषाय ।
पंचाचारको पाले पलावे अतिशय चार सुहाय ॥३॥
पाठक शिक्षा नित प्रति देते, गुण पच्चीस लो मान ।
ज्ञान कुठारको हाथ में लेके, छेदे मोह अज्ञान ॥४॥

निग्रन्थ अणगार अनुपम, गुण हैं सत्तावीस ।
सम परिणामे निहारे जगत को, तारे बीस्वा बीस ॥५॥
भव संताप के दूर हरण को, मानो औषधि एक ।
मूल पांच गुण हैं अति सुन्दर, समकित शुद्ध विवेक ॥६॥
ज्ञान विज्ञान महान मनोहर, पांच प्रकार प्रमाण ।
लोका लोक विलोकन कारण, दीपक मान सुजाण ॥७॥
दस प्रकार गुणों का आकर, चारित्र गुण मणिमाल ।
आश्रव अवगुण रोध करीने, संवर गुणको संभाल ॥८॥
तप दोय भेद जिनेश प्ररूपे, कठिन कर्म दे बाल ।
ध्यान पवन के जोग करीने, शुद्ध करे तत्काल भविक ॥९॥
ये नव पद के ध्यान करण से, पावो सुख भरपूर ।
रोग शोक संताप विपत्ति सब, कष्ट वियोग हो दूर ॥१०॥
विधि संयुत गुरु मुख से पद के, आराधो शुद्ध भाव ।
आसोज चैत्री दोय वर्ष में, करिये हर्ष उच्छाव. ॥११॥
साढा चारवर्ष में होवे, इक्यासी आँबिल सार ।
व्रत उजमणो करिये भविजन, तरिये भवजल पार ॥१२॥
संवत्त उन्नीसे इक्यासी वर्षे, जोधनगर के मांय ।
चैत सुदी नवमी रवि पुष्ये, हरि गावे हरषाय ॥१३॥

## ॥ नवपद मण्डन स्तवनम् ॥

नवपदनो ध्यान धरीजे, सिद्धचक्र रजत मय कीजे हो ।
सदगुरु उपदेशे, पूर्व दिशी गुणनो करिजे ।
नव दिन लग लक्ष जपीजे हो ॥ १ ॥
सदगुरु पूरा अक्षर सभारो, पर निन्दा दूर निवारो हो ॥२॥
जिमतिम मुख झूठन भाखो, जिन शाखे निजव्रत राखो हो ।
आयंबिल नव दिन शुभ वेला, प्रतिक्रमण दोनो वेला हो ।३।
त्रण चार देव वदीजे, नवकार वाली चित्त दीजे हो ।
साहमीने उठमो दीजे, मानव भव सफल करीजे हो ॥४॥
पाटा पर रात्रिये सोवे, इम करता जयणा होवे हो ।
नित प्रति जिन पूजा, भावना भावे नव दूजा हो ॥५॥
स्तवना करो विध सेती, अट्ठोत्तर सौ करि जेती हो ।
काउस्सग्ग करी लोगस्स वारे, नवकार कहीने पाले हो ॥६॥
मन में क्रोध न कीजे, खोटो पण आलन दीजे हो ।
रमत हँसी किम करीये, व्रत दूषणथी डरिये हो ॥७॥
धन्य पुण्यवन्त नर नारी, सिद्ध चक्रनी बात विचारी हो ।
त्रिकरण वश कर ब्रह्मचारी, इम जाप जपे सुविचारी ॥८॥
गुरु वचन सुधारस पीजे, जिन राज कथन चित्त दीजे हो ।

धर्मी जन मन एम पतीजे, कुमती जन देखी खीजे हो ॥९॥
तप पारणा भक्ति करीजे, गुरु गुरुणी प्रति लाभीजे हो ।
स्वामी वात्सल्य कीजे, लच्मीनो लाहो लीजे हो ॥१०॥
श्रावक कोटी ध्वज थावे, दुर्गति दुःख दूर पलावे हो ।
भव भवना पातिक नाशे, कीर्ति कमला घर वासे हो ॥११॥
हेमसूरि मलयगिरि सूरी, देवेन्द्र सुगुरु मति पूरी हो ।
सिद्धसेन दिवाकर जाणो, यह फल सिद्धचक्र वखाणो ।१२।
संघवी श्रीपाल सुहाई, सिद्धचक्र नी वात चलाई हो ।
गच्छपति जिनराज सवाई, नवपद नी रीत दिखाई हो ॥१३॥
नवपद नव निधि सिद्धि पूरे, सघली चित्त चिन्ता चूरे हो ।
वाचक कनककीर्ति गुरु बोले. सिद्ध चकने कोई न तोले हो ।१४।

---

## ॥ दीवाली का स्तवन ॥

दीवाली दिन वीरजीरे, पहुंच्या मुक्ति धामरे ।
आंखडी आंसु भरी ॥ टेर ॥
सूना दिवस सूनी रातडीरे, सूनो आ भारत देश रे ॥१॥
वीर प्रभु निर्वाण जाणीने, देव देवी आवे तत्काल रे ॥२॥
शोक छवायो चिहुँ दिशी रे, वीर वीर करे पुकार रे ।३।

देशना कोलाहल साभलीरे, मुर्छित थया गौतम स्वाम रे ।४।
हा हा प्रभु तमे शुं कर्युं रे, मुकी गया गौतम बाल रे ।५।
गौतम २ कही कोण बोलावशे, कोण करशे सार सभालरे ।६।
अत समय दूरे कर्योरे, जाएयुं के आवशे साथ रे ।७।
घडी त्तण नवि विसारतारे, मुकी गया केम तात रे ।८।
निराधार बालक हुं थयोरे, केम जाशे दिन रात रे ।९।
प्रश्न किहां जई पूछशुंरे, कोण देशे जवाब रे ।१०।
हुं रागी थई भूलियोरे, वीर हता वीतराग रे ।११।
महावीर स्वामी मोच्चे पधार्या गौतम केवल ज्ञान रे ।१२।
वल्लभ सहुने लागतारे, ओच्छव करे इन्द्र आय रे ।१३।

---

## ॥ दीवाली का स्तवन ॥

मारग देशक मोच्चनोरे, केवल ज्ञान निधान ।
भाव दया सागर प्रभुरे, पर उपकारी प्रधानो रे ।
वीर प्रभु सिद्ध थया, सघ सकल आधारो रे ।
हिव इण भरतमा कुण करशे उपगारो रे ।
वीर प्रभु सिद्ध थया, नाथ विहूणी सैन्य ज्युं रे ।
वीर विहूणो रे सघ, साधे कुण आधारथी रे

परमानंद अभंगो रे ॥ ३ ॥ वीर ॥

सात विहुणा बाल ज्यूं रे, अरहा परहा अथडाय ।
वीर विहुणा जीवडारे, आकुल व्याकुल थायेरे ॥४॥ वीर॥
संशयछेदक वीरनोरे, विरहते केम खमाय ।
जे दीठें सुख ऊपजेरे, ते विण किम रहिवायरे ॥५॥ वीर॥
निर्यामक भवसमुद्रनारे, भव अटवी सारथ वाहरे ।
ते परमेसर विन मिल्यांरे, किम वाधे उच्छाहोरे ॥६॥ वी.॥
वीर थकां पिण श्रुततणोरे, हुंतो परम आधार ।
हिवणां श्रुत आधार छेरे, एह जिन आगम सारोरे ॥७॥
इण काले सहु जीवनेरे, आगमथी आनंद ।
ध्यावो सेवो भविजनारे, जिन पडिमा सुख कंदोरे ॥८॥
गणधर आचारज मुनिरे, सहुने इण परि सीध ।
भव भव आगम संगथीरे, देवचंद्र पद लीधरे ॥९॥

---

## ॥ दिवाली का स्तवन ॥ भास ॥

श्री जिनवर जी ना गुण गावो, पूजो चरण पखाली ।
भर मुक्ताफल थाल वधावो, अङ्गी रची लटकाली है ।

आज म्हारी अजर अमर दीवाली ।
नेह भर निजर निहाली हे, आज ॥टेर॥

काती वदि तेरस के दिन से, वाधे मंगल माला ।
धन धन दीरो धन तेरस को, रिद्धि लहे मतवाली हे ।१।
रूप चउदस आई जिन पूजो, केसर चन्दन घोली ।
नर नारी मिलि पौषध कीजे, बैसीने धर्मशाली हे ।२।
अमावसरो अवसर आयो, पर्व थई दिवाली ।
घर घर दीपक ज्योति झिगमिग, जिन सुंदर ज्योत मवाई हे ।३।
पाछली राते वीर प्रभुजी, मोक्ष गया सुखकारी ।
चौसठ इन्द्रा महोत्सव कीनो, रात थई उजवाली हे ।४।
गुरु गौतमजी पाम्या केवल, सकल लोक रलिआई ।
चौसठ सुरपति, महिमा कीनो, गुरु की भक्ति सभाली हे ।५।
पहेर पोशाक के सब मिल गोरी, गुरु वन्दन ने चाली ।
हिलमिल टोली वाली भोली, जय जय करता चाली हे ।६।
लटक लटक गुरु चरणे लागी, लू छना ले सुखकारी ।
सुनी देशना मन में हर्षे, गावे भाम रसाली हे ।७।
पडवारे दिन घर घर नोरता, दीसे झाक झमाली ।
ओच्छव रङ्ग वधाई कीजे, मने मनाइ मेली हे ।८।

काती सुदी द्वितीयारे दिवसे, आई बीज पण चाली ।
पांच दिवस तक थई दिवाली, रोग शोक सब टाली हैं ।९।
निशदिन गुरुनी भक्ति करीने, श्रावकना व्रत पाली ।
भट्टारक नी सीख सुणीने, उदय रतन अघटाली है ।१०।

---

## ॥ १ ॥ अक्षयनिधि विधि स्तवन ॥

॥ सीता माता की गोदी में हणुमत डारी मुदड़ी ॥देशी॥

सुखकर समवशरण में शासन स्वामी देवें देशना ।
अमृत पदवी पावें भवि सुन, अमृत अधिकी देशना ।टेर।
आतम कर्ता कर्म विधान, भवमें भटके दुःख प्रधान ।
धर्माराधनसे सुख पावे, स्वामी देवें देशना ॥१॥
दानादिक हैं चउविध धर्म, तप–पद काटे कलुषित कर्म ।
आत्म स्वभाव सुनिर्मल होवे, स्वामी देवे देशना ॥२॥
आगममें तप विविध प्रकार, अक्षयनिधि तप सुख भंडार ।
आराधक अक्षयनिधि पावें–स्वामी देवें देशना ॥३॥
पर्यूषण संवत्सर पर्व, पनरह दिन पहिले हो अगर्व ।
अक्षय निधि विधि साधक साधें–स्वामी देवें देशना ॥४॥
स्वस्तिक ज्ञानकी पूजा करना, मंगलघट अक्षत से भरना ।

भक्ति द्रव्य भाव चित्त धरना, स्वामी देवें देशना ।५।
आवश्यक प्रति दिन सुखकारा, पालो ब्रह्मचर्य अविकारा।
आतम परमातम लय लाना, स्वामी देवें देशना ।६।
सुरभित धूप दशाग उदारा, दीपक ज्योति अखंडित धारा।
सुरभित ज्योतिर्मय जीवन हो, स्वामी देवें देशना ।७।
चाढो विकसित सुन्दर फूल, चाढो सुमधुर फल बहुमूल।
विकसित सुमधुर जीवन होवे, स्वामी देवें देशना ।८।
पूजा प्रभावना इक चित्त, करना देव वदन भी नित्त।
हरना पाप ताप सभारा, स्वामी देवें देशना । ६ ।
ध्याओ निज आतम गुण ज्ञान, उत्सव हय गय रथ मडान।
गाजे बाजे प्रभुको भेटो, स्वामी देवें देशना । १० ।
अक्षयनिधि तप एकासनसे, पूरण करना तन मन धन से।
गावें जिन हरि जय जय कारा, स्वामी देवें देशना ।११।

---

## ॥ अक्षय निधि तप का स्तवन ॥

ओ पछी नागरिया ॥देशी॥

परमातम गुण गाओ, तपस्वी तन मन से ।
आतम में लय लाओ, तपस्वी तन मन से ।टेर।

अक्षय निधि तप इच्छा रोधन, करनेसे हो आतम शोधन।
कर्मों को दूर भगावो तपस्वी तन मन से ॥ १ ॥
जघन्य मध्यम यह उत्कृष्टा, इकदो तीन वरस में पुष्टा
निज गुण ज्ञान उपावो, तपस्वी तन मन से ॥ २ ॥
श्रुत देवीको चौथे वरसे, अक्षय निधि विधि साधन हरसे।
भाव अक्षय निधि लाओ, तपस्वी ॥ ३ ॥
निज निजका मंगल घट ठावो, अक्षत धोवा नित्य भरावो।
उत्सव ठाठ रचावो, तपस्वी तन मन से ॥ ४ ॥
समवशरण में प्रभु पधरावो, कल्पसूत्र पूजा विरचावो।
अखंड ज्योति जगावो, तपस्वी तन मन से ॥५॥
धूप दशांग फूलों की माला, भर भर फल नैवेद्य के थाला।
भक्ति में प्रेम लगावो, तपस्वी तन मन से ॥६॥
पंच शब्द वाजित्र बजावो, हय गय रथ सिंगार सजाओ।
शासन शोभा बढावो, तपस्वी ।७।
पूजा और प्रभावना करके, पुण्य भंडारा अपना भरके।
जीवन में हुलसावो. तपस्वी तन मन से ।८।
सामायिक पडिक्कमणा करके, देववंदन गुरुवंदन करके।
रत्नत्रय प्रगटाओ, तपस्वी तन मन से ।९।

सोलह दिन तक तप आराधो, संवत्सरी दिन पूरण मावो ।
प्रभु गुण गान जगाओ, तपस्वी तन मन से ।१०।
अक्षय निधि अनशन निधि खोले, जिन हरि पूज्य वीर प्रभु बोले
जय जय नाद गुंजाओ, तपस्वी तन मन से ।
परमातम गुण गाओ तपस्वी तन मन से ।११।

★○★

## ॥ अक्षय निधि ध्यान स्तवन ॥

सोना तरा भूल आये ॥ देशी ॥

ॐ अर्हं पद प्यारा, हमारे मन भा गया ।
ॐ अर्हं पद प्यारा ॥ टेर ॥

ॐ अर्हं पद आतम अनुपम, गुण अक्षय निधि सारा ।
इस भव अक्षय निधि तप से, है यह लक्ष हमारा ।१।
पर पुद्गल परिणति को तज कर, मिथ्या भाव मिटाया ।
ज्ञान दर्शन करें आतम, आतम में ठहराया ।२।
ज्ञानादिक गुण पर्यायों का, आतम पिण्ड हमारा ।
पर द्रव्यों में सुख नरना, भ्रमभाव निवारा ।३।
हम [illegible] नहीं हैं मना, जैन [illegible] ।
[illegible] ।४।

हेय ज्ञेय सारी दुनियां में, कोई नहीं हमारा ।
आतम ही आतम का है, यह उपादेय अविकारा ॥५॥
द्रव्यालंबन भावाभिमुख, वृत्ति आज हमारी ।
भाव रूप अक्षय निधि आतम, ध्यान विधि विस्तारी ।६।
शुद्धात्तम बुद्धि अभिवृद्धि, सिद्धि समृद्धि विधाना ।
समझ समझ कर आराधन यह, हमने मनमें ठाया ।७।
मन मंगल घट हुवा हमारा, देवगुरु सतसंगी ।
गुण अक्षय निधि भरते जीवन, पावन यह सरवंगी ।८।
कल्पसूत्र कल्पद्रुम जैसा, सुमनस पूजा चंगी ।
ज्ञान प्रदीप अखंडित ज्योति, धूप घटा गुण रंगी ।९।
वर्द्धमान आतम सुखसागर, शासन जय जय कारी ।
परमगुरु भगवान शरण में, श्रद्धा बढ़ी हमारी ।१०।
जिन 'हरि' पूज्य परम पुरुषोत्तम, अक्षयनिधि अधिकारी ।
आतम परमातम पद पावें, कर्म कलंक निवारी ।११।



## ॥ अभिनंदन जिन का स्तवन ॥

तुम जो जो जो जो रे, वाणीनो प्रकाश ॥टेर॥
उठे छे अखड ध्वनि जो जने ममलाय, नर तिरिय देव ।
आपणी सहु भाषा ममजी जाय ॥१॥
द्रव्यादिक देखी करीने, नय निक्षेप जुत्त ।
भगतणी रचना घणी काइ, जाणे सहु अद्भुत ॥२॥
पय सुधाने इक्षु वारि, हारि जाए सर्व ।
पाखडी जन साभली ने, मूकी दीए गर्व ॥३॥
गुण पात्रीस अलकरी, अभिनदन जिन वाणी ।
सशय छेदे मनतणा, प्रभु केवल ज्ञाने जाणी ॥४॥
वाणी जे नर सांभले ते, जाणे द्रव्यने भाव ।
निश्चयने व्यवहार जाणे जाणे निज परभाव ॥५॥
साध्य साधन भेद जाणे, ज्ञानने आचार ।
हेय ज्ञेय उपादेय जाणे, तत्वा तत्व विचार ॥६॥
नरक सरग अपवर्ग जाणे, थिर व्यय ने उतपात ।
राग द्वेष अनुबध जाणे उत्सर्गने अपवाद ॥७॥
निज स्वरूपने ओलखीने, अवलबे स्वरूप ।
चिदानंदघन आतमाते थाये निज गुण भूप ॥८॥

विनयथी जिन उत्तम केरा अवलंबे पद पद्म ।
नियमाते परभाव तजीने पामे शिवपुर सद्म ॥६॥

---

## ॥ अक्षय तृतीया स्तवन ॥

केशरिया थाँसु प्रीत करीरे ॥ देशी ॥

म्हारी रस सहेलडी, आज आदीश्वर कियो पारणो ।
म्हारी सुगुण सहेलडी, पहिला तीर्थंकर कियो पारणो ।
सुतीने सुपनो आवियो सिरे, आंगण आई जहाज ।
वस्तु भर्या आविया सरे, जाग्या श्रेयांस कुमार रे ॥१॥
दादा कहीये दीपता सरे, जोग लियो जिनराज ।
भरत नरेश्वर पाटवी सरे, सार तणा परिवार रे ॥२॥
घड़ा एकशो आठ सेलडी, रस भर्या छे नीका ।
उलट भावसे श्रेयांस वहिरावे, मांड दिया प्रभु बुकारे ।३।
देव दुंदुभि बाज रही है सो नैया की वर्षा ।
बारे मास से कियो पारणो, भूख गई सब तिरसारे ।४।
रिद्धि सिद्धि कारज मनो कामना, घर घर मंगलाचार ।
दुनियां हर्ष वधामणा सरे, आखातीज त्योहार रे ।५।
श्री शेत्रुँजे सिद्ध क्षेत्र, जे उत्तम कहिये धाम ।

श्री संघना वांछित पुरो, पुरो मोटा म्हाम रे ।६।
सकट काटो विघन निवारो, राखो हमारी लाज ।
बे कर जोडी नान्हूँ कहता, ऋषभदेव महाराज रे ।७।

---

## ॥ श्री केवल ज्ञान कल्याणक स्तवन

जावो जावो हे मेरे साधु, रहो गुरु के संग ॥देशी॥

हितकारी प्रभुजी लेवे, संयम सुखद अपार ।
अविकारी आतम गुण थानक, पावे परम उदार ॥टेर॥
अप्रमत भावो में विचरे, जगपति जगदाधार ।
कर्म प्रकृति जडमूल खपावे, भाव अपूरव धार ॥१॥
अनिवृति आतम गुण उज्जवल-सुक्ष्म कषाय निकार ।
क्षीण मोह होते हो जाता, नाम शेष संसार ॥२॥
यथा ख्यात चारित्र रमणता, क्षायिक भाव प्रचार ।
घाती चार कर्म क्षय होता, पावें अनंते चार ॥३॥
अनंत केवल ज्ञान अनुपम, केवल दर्शन सार ।
वर अनंत चारित्र विराजित, वीर्य अनंत अपार ॥४॥
मिल देवगण जिनवर रचते, समवसरण बलिहार ।
रजत स्वर्ण वर रत्न गढों में, चार तोरण विस्तार ॥५॥

अशोक वृक्ष सुर पुष्प वृष्टिवर–तीन छत्र मनुहार ।
चामर युग भामण्डल, मणिमय–सिंहासन श्रीकार ॥६॥
दिव्य ध्वनि राजित प्रभु राजे, चार दिशा मुख चार ।
देव दुंदुभी नाद सुखद ये, प्रतिहारज जयकार ॥७॥
ज्ञानातिशय पूजातिशय–वचनातिशय धार ।
अपायां पगमातिशय श्री–अरिहंत गुण अधिकार ॥८॥
केवल ज्ञान कल्याणक होते, होवे जग उपकार ।
समवसरण में बारह परिषद्-बोध सुने दिल धार ॥९॥
पुण्य कर्म तीरथ सुख सागर-भविजन तारणहार ।
प्रकटत प्रकटे पुण्य महोदय, आतमगुण भंडार ॥१०॥
तीर्थंकर भगवान प्रभु "जिन–हरि पूज्येश्वर सार ।
सर्वज्ञातम नमो नमो नित मङ्गल मालाकार ॥११॥

## ॥ बीस स्थानक का स्तवन ॥

तीर्थंकर वन्दो तारे दुख वारे तिहुं काल में ॥टेर॥
अनुपम आतम दर्शन योगे, परमातम पद ध्याने ।
जलमे कमल रहे ज्यों जीवन, साधक पद सनमानेरे ।१।
महा मोहमति मूढ जगत जन हों, जिन शासन रागी ।

आधि व्याधि उपाधि मुक्त हो, भाव सुखी बड भागीरे ।२।
तीन भुवन उपकार भाव, कल्याण मित्र जयकारी ।
पुण्य महोदय गुणी महाशय, अधिकारी अवतारी रे ।३।
बीस स्थानक महा साधना, साधक निज भव तीजे ।
उत्तरोत्तर मुक्त सुख भोगी, प्रभुता गुणरस भीजेरे ।४।
सघ चतुर्विध तीर्थ थापते, अदभुत अतिशय धारी ।
तीर्थंकर नर नाम कर्म को, सफल करे बलिहारी रे ।५।
जनम मरण जीवन कल्याणी, जग कल्याण विधाता ।
तीर्थंकर दर्शन धन पाऊँ, धन दिन पुण्य प्रभाता रे ।६।
प्रभु दरशन परमारथ पूरण, जो कर पावे प्राणी ।
ज्योतिर्मय जगमें यह पावन, खोले निज गुण खाणीरे ।७।
अरिहंतादिक बीस पदोंकी, सेवा शिव सुखकारी ।
अप्रमत साधक भविजन, पावें पद अधिकारीरे ।८।
आठसिद्धि नवनिधि निज घरमें, प्रगटे परमोदारी ।
तीन लोक साम्राज्य संपदा, दासी बने विचारीरे ।९।
बीस स्थानक विधि जिन आगम, गुरु समझे नरनारी ।
आराधे साधे निज सिद्धि, अजरामर पद धारीरे ।१०।
गुणसागर भगवान महोदय, जिन हरि पूजित स्वामी ।
बीस स्थानक गुणी गुण गाऊं, सादर सदा नमामिरे ।११।

## ॥ गौतम विलाप का स्तवन ॥

आशुं सुण्युँ रे प्रभु आपने ।
महावीर आपज गौतम केरा अमुल्य आधार ।
देवशर्माने प्रतिबोधवा मोकली मने दुर कर्योशुँ प्रभुजी प्राणाधार
मुक्यो अटुलो मने आखरे ।
गौतम गौतम अमृत वाणे करशे कोण पोकार ॥२॥
कोणे भदंत कहीने वंदु ।
तारा विना प्रश्न करुं क्या, शंकाना हरनार ॥३॥
शिष्यो घणा तारे मुज समा ।
मारा अंतरे तारा प्रेमनो संधायो छे तार ॥४॥
स्वार्थी थया मोक्ष पामवा ।
पारख्युं ना मैं आपनुं हैयुं तुच्छ मारो अवतार ॥५॥
मिथ्यात्वी घुवड समा गर्जसे ।
अज्ञान मांहे डुबेलाने काढशे कोण बहार ॥६॥
भानुसमा तमे तेजमां ।
भारत शोभा नष्ट थई छे, आपज सघलो सार ॥७॥
चरणे डस्यो चंडकोशियो ।
समता आपी आपे उगार्यो, मोकल्यो स्वर्ग मोझार ॥८॥

चदन बालानी तोडी बेडीओ ।
अडदनाकुला स्वीकारीने, मुक्ति दीधा निरधार ॥९॥
मोक्षे जता न लीधो साथमा ।
ओल्छु अेमा थात शु आपनु, भुली गया सहु प्यार ॥१०॥
छेल्ली पले निरख्या नहीं ।
अहीया आवी जोवु त्यारे लागे बधे अधकार ॥११॥
आशु थयु ममता भयु ।
तु वितरागीने हुँ छु रागी समज्यो नहीं लगार ॥१२॥
वितराग कयु चित्तने क्षपकश्रेणी आरोहीने ।
पाम्या पूर्ण प्रकाश ॥१३॥
क्षीणमोही गौतम थया ।
प्रातः काले केवल ज्ञाने प्रकाश्या अपार ॥१४॥
इन्द्रे स्थाप्या प्रभु स्थानमा ।
अमृत जेवी वाणी जेनी बोध पाम्या, नर नार ॥१५॥
गौतम समरे प्रभातमा ।
होशथी पामे मीठा मेवा थाये पछी भवपार ॥१६॥
अजित ज्ञानी गौतम ।
मुनि हेमेन्द्र भजे शुभ भावे, खोलो अंतर द्वार ॥१७॥

समाप्त

ॐ

# एक महान् समय
(तर्जः– तेरे पूजन को)

समय वह था धन एक महान्, हुये जब वर्द्धमान भगवान् ।स्था.।

प्रकाश जगत ने पाया, आनन्द विश्व में छाया ।
मिला था दिव्य सुदर्शन दान ॥हुये०॥१॥

अहिंसा पावन धर्म बताया, हिंसा महा अधर्म मिटाया ।
पिला कर बोध सुधा का पान ॥हुये०॥२॥

सब को साम्यभाव सिखलाया, जीवन का सब खेद हटाया ।
दिखाया शासन सुखद विधान ॥हुये०॥३॥

सुखसिन्धु को सहज बनाया, अपना पद वह आप हि पाया ।
अपुनर्भव भावी निरवान ॥हुये०॥४॥

कार्त्तिक अमावस तम छाया, देव दिवाली उत्सव मनाया ।
पाये 'कवीन्द्र' गौतम ज्ञान ॥हुए० ॥५॥



## ॥ पौषध स्तवन ॥

### ॥ दोहा ॥

जेशलमेर नगर भलो, जिहां श्री पार्श्व जिनन्द,
प्रह उठीने प्रणमता, आपे परमानन्द ॥१॥
तासु चरण प्रणमी करी, पौषध विधि विस्तार ।
पभणिस श्रावक हितभणी, आगमने अनुसार ॥२॥
पौषध पौषध सहु करे, पौषध करे सहु कोय ।
पण पौषध विधि सामलो, जिम निस्तारो होय ॥३॥



### ॥ ढाल ॥

प्रभु प्रणमु रे पार्श्व जिनेश्वर स्थम्भणो (देशी)

पहिले दिनरे साफ समय उपकरण सहु,
पडिलेहिरे, स्थंडिल परे रागे बहु ।
पाञ्जलि रातेरे, साधु समीप आवी करी ।
गई प्रायश्चित्तरे, प्रथम करे, मन संवरी ।
उज्वालो सगति श्रावक करे,
पौषध अष्ट प्रहरि गुरुमुखे ।

ऊचरे दंडक तीनवेला सामायिक पण तिणरुवे ।
पछे करे प्रतिक्रमणो आंतरणी, साधु वंदे तिहांकणे,
कर्मभूमी अट्ठावयं, मंगलिक कुलक भणे ॥४॥
प्रतिलेखनारे, अंग ओही सगली करे ।
उपाश्रयरे पुँजी काजो उद्धरे ।
ईरियावहीरे, स्थापना आगे पडिकमे ।
करे स्वाध्यायरे, साधु सहुने पायनमे ॥चा.॥
पायनमे सगला साधुकेरा, सुणे सुगुरु वखाणए ,
ध्यान करे अथवा गुणे प्रकरण, कहे अर्थ सुजाणए ।
पूण प्रहर पडिलेहण करिने, मात दियोपडि लेहए,
जलघडा लोटा वाटका, पडिलेहवा वलि तेहए ॥५॥
गुरु साथेरे, चैत्य प्रवाडी करे खरी,
देव वन्दे रे शक्र स्तव पांचे करी ।
उपाश्रयरे आवी ईरियावहि पडिक्कमे,
आगमणोरे, आलोही नीचानमे । चाल ।
नीचानमें बेसणे बेसे, मिच्छामि दुक्कडं देइने,
तिविहार होतो पाणिहारे, मुहपत्ति पडिलेहिने ।
नवकार गुणतां पाठ भणतां प्रहर तीजे दिन रहे ।
पडिक्कमी इरियावही पहली बेउ प्रतिलेखना करे ॥६॥

धर्मशालारे, पूँजी इरियावहि पडिकमे,
थे पालोरे स्थापना पडिलेहे समे ।
मुहपत्तिरे पडिलेही उभोथई,
करे गुरु मुखरे पच्चखाण मनगह गई ।
गहगही आठे देइ खमासण, वस्त्र सघला आपणा,
पडिलेहवा मात्रा, तिणपरी, चरवले पूजण तणा ।
देहनी चिंता काज जातों, करे भगवन् आवस्सही ।
मारगे इरिया समिति शोधे, आवतो कहे निस्सही ॥७॥



॥ ढाल ॥
वेकर जोडी विनवु जी सुण स्वामी शुभ दीसए (देशी)
हिव भवियण तुमे सामलोजी, गुरुने नमावो शीस ।
सामायिक पौषध तणाजी, दूषण टालो बत्रीश ॥चाल॥
बत्रीश दूषण, बार तनुना, सार वेसे पालठी,
अति अथिर आसन, दृष्टि चचल, करे काया एकठी,
करे काम सावद्य, लेउगणा, आलस, कटकडा मोडए,
सणेपाज, वीसामण करावे, अधकरे, मलछोडए,



॥ ढाल ॥

वचन तणां दूपण दशे जी जाणो इणं प्रकार,
कुवचन बोले लोकनेजी दे दूपण सहसात कार.
सहसात कूड कलंक दे वलि आपछंदे बोलए
संक्षेप सुत्र करे आलावो कलह करे नीटोलए
उपहास करिने करे विकथा मांडी न राखे पद संपदा
आवो वेठो उठो एहवि कहे भापा सर्वदा



॥ ढाल ॥

दश दूपण हिव मनतणा जी, सांभलजो मन एक ।
न्यून अधिक न लहे क्रिया जी मनसे नहीं विवेक
चाल सुविवेक जग, धन लाभ, वांछे करे पौपध वीहतो
पौपध करीने करे नियाणो, पुत्र प्रमुखने ईहतो
अभिमान रीसे करे पौपध, धरे फल संदेहए
वली विनय विवेक, लगार न करे, मन दूपण दश एहए



॥ ढाल ॥

काया वचन मन तणाजी, दूषण एह बत्रीश ।
टाले दूषण तेहनाजी पोषध निरवाचीस ॥चाल॥
निरवाचीस बोले नहि वलि उघाडे मुख आपणे ।
छुटा गृहीसु वात न करे, पांच दूषण परिहरे ॥
उपवास करीने दिवस पोषध, कीधो नहीं तो निशि करे ।
इक पव छोडे नहीं, उत्तराध्ययन अनुसरे ॥

★

॥ ढाल ॥

चउपर्वी पोषध कह्योजी, सूत्र सिद्धांत विचार ।
हरिभद्र सूरि विवरे कह्योजी, चारीस सहस्री सार ।
चारीस सहस्री सार बोले दिवस प्रति करवो नहीं ।
पोषध अतिथि संविभाग, पर्व दीवस करवा सही ।
उद्दिष्ट शब्द तणो अर्थ सीनाम चारित्र फले ।
चार पर्व पर्व कल्याणक तिथी परोण आदरे ॥१७॥

★

॥ ढाल ॥

उपधाने पौषध कह्योजी, महानिशीथ प्रमाण ।
तिविहार चउविहार जीमणोजी, एक विगय घृत जाण ॥
घृत जाण आचरणा परंपरा पूर्वाचार्यें एक ही ।
भगवंत भाष्यो सत्य तेहिज खेंचाताण करवी नही ॥
तिविहार पौषध चार प्रहरी अष्ट प्रहरी सीमाकरी ।
तीन गच्छ तणी आचरणा, ऐविधी तेपिण आदरी ॥१३॥



ढाल ॥ ३ ॥

कपूर हुवे अति उजलोरे (देशी)

सांज समय स्थंडिला करेरे, वार वार मांहि वहार ।
ईरीयावही इम पडिक्कमेरे, जयति हुअण करे सार ॥१४॥
संवेगी श्रावक साचो पौषध एह, एतो भगवंत भाष्यो तेह ।
त्रिकरण शुद्ध करो तुमेरे, जिम पामो भवछेह ॥१५॥
अर्ध बिंब रवि आथमेरे, सुत्र कहो सुविचार ।
स्तवन कहे तिण हीज समयरे, तारा दीसे दो चार ॥१६॥
कालवेला इम पडीक्कमेरे, लांबी खमासमण देइ ।
शुद्ध क्रियानी खप करेरे, मन संवेग धरेइ ॥१७॥

जिनदत्त कुशल काउस्सग करे रे, प्रतिक्रमणाने छेह।
प्रतिक्रमण पुरो थयोरे, खरतरनी विधि एह ॥साज ॥१८॥
मधुर स्वरे राते करेरे, प्रहर सीम सझाय।
गीत गावे वैरागनारे, पातक दूर पलाय ॥सांज ॥१६॥



## ढाल ॥ ४ ॥

मारग देशक मोक्षनोरे (देशी)

वहुपडि पुना पारेसीरे, वादे देव उल्लास।
सथारा गाथा भणेरे, खामे जीवनी रासीरे ॥२०॥
ते नरनारिया, सफल करे अवतारो रे।
निशी पौषध करे, भावे भावना धारो रे॥ ते० ॥२१॥
पाप अठारे परीहरे रे चित्त धरे शरणा चार।
डाभ संथारो सथरे रे, ध्यान धरे शुभिचारो रे ॥२२॥
धर्म जागरिया, जागतो रे, करे मनोग्य एह।
संयम लेई जिन दिने रे, धन्य दिवस मुज तेहो रे ॥२३॥
गद श्रावक पौषध कर्यो रे, वीर वखाण्योरे तेह।
तिम परि तुमे पौषध करोरे, जिम पामो शिव गेहोरे ॥२४॥
वीत भय पाटणनो धणी रे, नामे उदायन राय।

तिण राते पौपध कीयोरे, वीरचंदन चित्त लायरे ॥२५॥
तुंगीया नगरी तणारे, श्रावक शुद्ध अनेक ।
जिण विधि ते पौपध कियोरे तिम करज्यो सुविवेक रे ॥२६॥
वलि श्रावक पौपध कियोरे, आनन्द ने कामदेव ।
वलि दृष्टान्त सुबाहुनोरे, मन धरज्यो नित मेवोरे ॥२७॥

●

## ढाल ॥ ५ ॥

महामुनीश्वर नित नमुंजी (देशी)

पाछलि राते उठिने हो श्रावक होय सावधान ।
राई प्रायश्चित्त काउस्सग करे हो, देव वांदे सुविधान ॥२८॥
संवेगी श्रावक, पौपधनी विधि एह ।
मिलती सुत्र सिद्धांतने हो, मति मन करज्यो संदेह ॥२९॥
उच्च स्वर बोले नहीं हो, दोप कह्या भगवंत ।
वलि सामायिक लेइने हो, प्रतिक्रमण करे तंत ॥३०॥
प्रतिलेखन क्रिया करे हो, सघली पूरवरीत ।
सहु सज्जाय किया पछे हो सुगुरु वंदे धरि प्रीत ॥३१॥
पहली पौपध पारिने हो, सामाइक पण पार ।
प्रतिलाभे अणगार ने हो, अतिथि संविभाग विचार ॥३२॥

विधि सेती पौषध करे हो, बहु फलदायक होय।
अविधि सघाते कीजता हो, काज सरे नहीं कोय ॥३३॥
पण विधिनी खप कीजता हो, अविधि हुवे जे काय।
मिच्छामि दुक्कड दीजता हो, छुटक वारो थाय। ॥३४॥
पौषध औषध कर्मनो हो, टाले दुर्गति दुःख।
अशुभ कर्म बहु क्षय करे हो, आपे शास्वत सुख ॥३५॥
उत्कृष्ट पौषध तणी हो, यह विधि कही विस्तार।
जेशलमेरी सघने हो, आग्रह करि सुविचार ॥३६॥
नोले से सिडसठ समय हो, नगर मरोट मझार।
मिगशिर सुदि एकम दिने हो, शुभ दिन सुर गुरुवार ॥३७॥
श्री जिनचंद्र सूरीश्वर हो, श्री जिनसिंह सूरीश।
सकल चंद सुपसायले हो, समय सुंदर भणे शीस ॥३८॥



## अट्ठाईस लब्धि का स्तवन

॥ दोहा ॥

प्रणमुँ प्रथम जिनेसरु, शुद्ध मने सुखकार।
लब्धि अट्ठावीस जिन कही, आगमने अधिकार ॥१॥
प्रश्न व्याकरणे प्रगट, भगवती सूत्र मझार।
पन्नवणा आवश्यके, चारु लब्धि विचार ॥२॥

आंबिल तप कर ऊपजे, लब्ध्यां अट्ठावीस ।
तेहिज परगट अरथसुँ, सांभलजो सुजगीस ॥३॥



ढाल ॥ १ ॥

सफल संसार (देशी)

अनुक्रमे हिव अधिकार गाथा तणें ।
लब्धिना नाम परिणाम सरिखा भणें ॥
रोग सहु जांय जसु, अंग फरस्यां सही ।
प्रथम ते लब्धि छे, नाम आमोसही ।४।
जासु मल मूत्र, औषध समा जाणिये ।
बीय विप्पोसही लब्धि वखाणीये ॥
श्लेष्म औषधि सारिखो जेहनो ।
तीजी खेलो सही नाम छे तेहनो ॥५॥
देहना मेलथी कोढ दूरे हुवे ।
चोथी जल्लोसही नाम तेहनो ठवे ॥
केश नख रोम सहु अंग फरसे सही ।
रहे नहीं रोग सव्वोसही ते कही ॥६॥

एक इंद्रिय करी पाच इंद्रिय तणा।
मेद जाणें तिका नाम संभिन्नणा॥
वस्तु रूपी सहू जाणियें जिणकरी।
सातमी लब्धि ते अवधि ज्ञाने करी॥७॥



ढाल॥ २॥
आव्यो तिहा नर इर (देशी)

हित्र आगुल अटीये ऊणो मानुष क्षेत्र।
संज्ञी पचेद्री तिहा जे वमय विचित्र॥
तसु मननो चिंतित जाणें थूल प्रकार।
ते ऋजुमति नामे आठमी लब्धि विचार॥८॥
सपूरण मानुष क्षेत्रे म जावंत।
पचेद्रिय जे छे तसु मन वाता तंत॥
सूक्षम परजायें जाणे सहु परिणाम।
ए नवमी कहीये विपुलमती सुभनाम॥६॥
जिण लब्धि प्रभावे उडी जाय आकाश।
ते जंघा विद्याचारण लब्धि प्रकाश॥
जसु वचन सराने खिण मे खेरु थाय।
ए लब्धि इग्यारमी आसी विष कहाय॥१०॥

सहु सूक्षम वादर देखे लोकालोक ।
ते केवल लब्धि वारमिये सहुथोक ॥
गणधर पद लहिये तेरमी लब्धि प्रमाण ।
चवदम लब्धे करी चवदे पूरव जाण ॥११॥
तीर्थंकर पदवी पामें पनरमी लब्धि ।
सोलम सुखदाई चक्रवर्ति पद रिद्धि ॥
बलदेव तणो पद लहिये सत्तरमी सार ।
अट्ठारमी आखी वासुदेव विस्तार ॥१२॥
मिसरी घृत खीर मेल्यां जेह सवाद ।
एहवी लहे वाणी उगणीसमी परसाद ॥
भणीयो नवि भूले सूत्र अरथसु विचार ।
ते कुष्टिक बुद्धि वीशमी लब्धि विचार ।१३।
एक पद भणीने आवे पद लख कोड ।
इक्कवीशमी लब्धि पायाणु सारणी जोड ॥
एक अरथें करी उपजे अरथ अनेक ।
बावीसमी कहीये वीज बुद्धि सुविवेक ॥१४॥

★

ढाल ॥ ३ ॥

कपूर हुवे अति ऊजलोरे (देशी)

सोलह देश तणी सहीरे, दाहक सगति वखाण ।
तेह लब्धि तेवीसमीरे, तेजो लेश्या जाण ॥१५॥
चतुर नर सुणज्यो एसु विचार ।
आगमनें अधिकार चारु लब्धि विचार ॥चतु०॥
चवदह पूरव धर मुनि वरूरे, उपजता सदेह ।
रूप नवो रचि मोकलेरे, लब्धि आहारक एह ॥१६॥
तेजो लेश्या अग्निनेरे, उपशमवा जलधार ।
मोटी लब्धि पचवीशमीरे, शीतो लेश्या जाण ॥१७॥
जेण सगतिसुं निकुरवेरे विविध प्रकारे रूप ।
सदगुरु कहे छव्वीसमीरे, वैक्रिय लब्धि अनूप ॥१८॥
एकण पात्रे आदमीरे, जीमावे केई लाख ।
तेह अक्षीण महाणसीरे सत्तावीसमी साख ॥१९॥
चूरे सेना चक्रीसनीरे, संघादिकने काज ।
तेह पुलाक लब्धि कहीरे अट्ठावीशमी साज ॥२०॥
तेज शीत लेश्या विहुं रे तेम पुलाक विचार ।
भगवती सूत्र में भाखियोरे, ए त्रिहुंनो अधिकार ॥२१॥

चक्रवर्ती बलदेवनीरे, वासुदेव त्रण एह ।
आवश्यक सूत्रे अछे रे नहिं इहां संदेह ॥२२॥
पन्नवणा आहारनीरे कल्पसूत्र गणधार ।
तीन तीन इक इक मिलीरे, वारू आठ विचार ॥२३॥
प्रष्णा व्याकरणें कहीरे, वाकी लवध्यां वीस ।
सांभलतां सुख ऊपजेरे, दोलत हुवे निशदिश ॥२४॥



॥ कलश ॥

वत्त सत्तरसें छवीसे मेरू तेरस दिन भले ।
श्री नगर सुखकर लूण करणसर आदि जिन सुपसाउले ॥
वाचना चारज सुगुरु सांनिध विजय हरख विलासए ।
श्री धर्मवर्द्धन स्तवन भणतां प्रगट ज्ञान प्रकाशए ॥२५॥



## दश पच्चखाण का स्तवन

॥ दोहा ॥

सिद्धारथ नंदन नमूं । महावीर भगवंत ।
त्रिगडे बेठा जिनवरु, परपद बार मिलंत ॥१॥
गणधर गौतम तिण समे, पूछे श्री जिनराय।
दश पच्चक्खाण किसा कह्या कियां कवण फल थाय ।२।

## ढाल ॥ १ ॥

सीमधर करज्यो मया (देशी)

श्री जिनवर इम उपदिशे, सामल गोयम स्वाम ।
दश पच्चक्खाण क्रिया थकी, लहिये अविचल ठाम ।३।
नवकारसी बीजी पोरसी, साढ पोरसी पुरिमुड्ढ ।
एकासण नीवी कही, एकलठाण देवड्ढि ॥४॥
दात आंबिल उपवासही, एहीज दश पच्चक्खाण ।
एहना फल सुण गोयमा ! जूजूवा करूं वखाण ॥५॥
रतनप्रभा शर्कराप्रभा वालुका तीजी जाण ।
पंकप्रभा तिम धूमप्रभा, तमप्रभा तम तम ठाम ॥६॥
नरक सात कहीए सही, करम कठिन कर जोर ।
जीव करम वस ते सही, उपजे तिण हीज ठोर ॥७॥
छेदन भेदन ताडना भूख तृषा वलि त्रास ।
रोम रोम पीडा करे, परमाधम्मी तास ॥८॥
रात दिवस क्षेत्र वेदना, तिल भर जिहां नहीं सुक्ख ।
किया करम जे भोगवे, पामे जीव बहु दुक्ख ॥९॥
एक दिनरी नवकारसी, जे करे भाव विशुद्ध ।
सो वरस नरकनो आउखो, दूर करे ज्ञान शुद्धि ॥१०॥
नित्य करे नवकारसी, ते नर नरक न जाय ।
न रहे पाप वलि पाछला, निरमल होवेजी काय ॥११॥

## ढाल ॥ २ ॥

श्री विमलाचल सिरतिलो (देशी)

सुण गौतम पोरसी कियां महामोटो फल होय ।
भावसुं जे पोरसी करे, दुरगति छेदे सोय ॥१२॥
नरक मांहे जे नारकी, वरषें एक हजार ।
करम खपावें नरक में, करता बहुत पुकार ॥१३॥
एक दिवसनी पोरसी, जीवकरे इक तार ।
करम हणें सहस एकना, निश्चयसुं गणधार ॥१४॥
दुरगति मांहे नारकी दश हजार प्रमाण ।
नरक आयु खिण एक में, साढ पोरसी करे हांण ॥१५॥
पुरमड्ढ करे नित जीव जे, नरके ते नवि जाय ।
लाख वरष करमने दहे, पुरमड्ढ करम खपाय ॥१६॥
लाख वरष दश नारकी, पामें दुःख अनंत ।
इतरा करम एकासणे, दूर करे मन खंत ॥१७॥
एक कोडी वरषां लगे, करम खपावे जीव ।
नीवीय करतां भावसुं, दुरगति हणें सदैव ॥१८॥
दश कोड़ी वर्ष नरक में, जितरो करे कर्म दूर ।
तितरो एकल ठाणीय, करे सही चकचूर ॥१९॥
दात करंतो प्राणीयो, सो कोडी परमांण ।
इतरा वरष दुरगति तणा, छेदे चतुर सुजाण ॥२०॥

आनिल नो फल मह कह्यो, कोडी एक हजार।
कम्म खपावे रण परे, भाव आनिल अधिकार ॥२१॥
कोडि सहस दश वरस ही, सहे दुःख नरक मझार।
उपवास करे इक भावसु, तो पामे मुक्ति मझार ॥२२॥



ढाल ॥ ३ ॥
येनेइ वर लावो (देशी)

लाख कोडी वरसा लगे, नरके करता रीव रे।
गौतम गणधारी छठ तप करता थका,
सही नरक निवारे जीव रे ॥२३॥
नरके वरष कोड लाख ही, जीव लहे तिहां दुःख रे।
ते दुःख अट्ठम तप हुंती, दूर करी पामे सुक्ख रे ॥२४॥
छेदन भेदन नारकी, कोटा कोटि वरसांइ रे।
दुगति कुमतिने परिहरो, दशमं एतो फल होइ रे ॥२५॥
नितकाय जल पीवता, कोटा कोटी वरषनो पाप रे।
दूर करे गिण एक में, निश्चे होय निःपाप रे ॥२६॥
धनि य विशेषे फल कह्यो, पांचम करे उपवास रे।
पामे ज्ञान पांचे भला, करता त्रिभुवन परकास रे ॥२७॥

चवदश तप विधिसुं करे, चवदह पूरव होइ धाररे ।
इम अनेक फल तप तणा कहेतां वलि नावे पार रे ॥२८॥
मन वचने काया करी, तप करे जे नर नार रे ।
इग्यारे वरष एकादशी करतां लहे भवपार रे ॥२९॥
आठम तप आराधतां, जीव न फिरे संसार रे ।
अनंत भवानां पापथी, छूटे जीव निरधार रे ॥३०॥
तप हुंती पापी तर्या निसतरीयो अरजुन माली रे ।
तप हुंती दिन एकमें, शिव पाम्यो गज सुकुमाल रे ॥३१॥
तपना फल सूत्रे कह्यां पच्चक्खाण तणा दश भेद रे ।
अवर भेद पिण छे घणा, करता छेदे त्रय वेद रे ॥३२॥



॥ कलश ॥

पच्चक्खाण दशविध फल प्ररुप्या, महावीर जिण देव ए ।
जे करे भवियण तप अखंडित तासु सुर पय सेव ए ॥
संवत निधि गुण अश्वराशि वलि पोष सुद दशमी दिने ।
पद्म रंग वाचक सीस गणिवर रामचंद्र तप विधि भणें ॥३३॥



## उपधान तप स्तवन

श्री महावीर धरम परकाशे, बेठी परषदा बारजी ।
अमृत वचन सुणी अति मीठा, पामें हरष अपारजी ॥१॥

सुणो रे श्रावक उपधान वह्यां विन, किम सूझे नवकारजी ।
उतराध्ययन बहु श्रुत अध्ययनें एह भरायो अधिकारजी ॥२॥
महानिशीथ सिद्धांत मांहे पिण, उपधान तप विस्तार जी ।
अनुक्रम सुद्ध परपर दीसे, सुविहित गच्छ आचारजी ॥३॥
तप उपधान वह्या विन किरिया, तुच्छ अल्प फल जाणजी ।
जे उपधान वह्या नरनारी तेहनो जनम प्रमाणजी ॥४॥
तप उपधान कह्यो सिद्धांते, जो नवि माने जेहजी ।
अरिहत देवनी आण विराधे, भमस्ये भव भव तेहजी ॥५॥
यतञ्या घाट समा नरनारी, निण उपधाने होयजी ।
किरिया करतां आदेश निरदेश, काम सरे नहीं कोयजी ॥६॥
इक घेवरने वलि खाडे भरियो, अति घणो मीठो थायजी ।
एक श्रावक उपधान वहेतो, धन धनते कहेवायजी ॥७॥

✱

ढाल ॥ २ ॥

नवकार तणो तप पहिलो वीसह जाण ।
इरियावहीनो तप बीजो वीसइ आण ।
इण विद्द उपधाने निश्चे नाण मडाण ।
धारे उपनागे गुरुमुख त्रे त्रे नाणि ॥८॥

पैंत्रीसड त्रीजो नमोत्थुणं उपधान।
त्रिण वायण ओगणीस तप उपवास प्रधान।
अरिहंत चेई तप चोथो चोकड एह।
उपवास अढाई वायण एक गुणगेह ॥९॥
पांचमो लोगस्स तप अट्ठावीसड नाम।
साढा पनरह उपवासे वायण त्रिण ठाम।
पुक्खर वरदी तप छट्ठो छक्कड सार।
साढा त्रण उपवासे वायण एक सुविचार ॥१०॥
सिद्धाणं बुद्धाणं सातमो उपधान माल।
उपवास करे इक चौविहार ततकाल।
एक वायण करे वलि गुरुमुख सरस रसाल।
गच्छ नायक पासे पहिरे माल विशाल ॥११॥
माल पहिरण अवसर आणी मन उछरंग।
घर सारू वारू खरचे धन बहु रंग।
अति उच्छव कीजे राती जोगो दिल खोल।
गीतगान गवावे पात्रे अति रंगरोल ॥१२॥

★

ढाल ॥ ३ ॥

ए साते उपधान, विधि से जे वहे,
ते सुधी किरिया करे ए ।
छिण न करे प्रमाद, जीव जतन करे,
पु जी पु जी पगला भरे ए ॥१३॥
न करे क्रोध-कषाय हड हड हसे नहीं,
मरम केहने नवि कहे ए ।
नाणें धरनो मोह, उत्कृष्टी करणी करे,
साधु तणी रहणी रहे ए ॥१४॥
पहुर सीम सज्झाय करे पोरसी भणी,
ऊ चे स्वर बोले नहीं ए ।
मन माहे भावे एम, धन धन ए दिन,
नरभव माहि सफल सही ए ।१५।
जे साते उपधान, विधि सेवी वहे,
पहिरे माल सोहामणी ए ।
तेहनी किरिया शुद्ध, बहु फलदायक,
करम निरजरा अतिघणी ए ॥१६॥
परभव पामे रिद्ध देवतणा सुख,
बत्रीश बद्ध नाटक पडे ए ।

लाभे लीलविलास, अनुक्रम शिवसुख,
चढती पदवी जे चडेए ॥१७॥



॥ कलश ॥

इम वीर जिणवर भुवण दिणयर मात त्रिशला नंदणो ।
उपधानना फल लहे उत्तम भविय जण आणंदणो ॥
जिणचंद जुग परधान सदगुरु सकलचंद मुणीसरो ।
तसु शीश वाचक समयसुंदर भणें वंछित सुखकरो ॥१८॥



## १४ पूर्व का स्तवन

॥ ढाल ॥

वेकर जोडीताम (देशी)

जिनवर श्री वर्धमान,
चरम तीर्थंकर प्रह उठी प्रणमुं मुदा ए ।
श्रुतधर श्री गणधार,
सूरि शिरोमणि, नमतां नवविध संपदा ए ॥१॥
चवदे पूरव नाम, सूत्रे जूजुवा,
वीर जिणंदे भाखिया ए ।

तेहिज सुगुरु पसाय, वरण वस्तु इहां,
आगम में जिम उपदिश्या ए ॥२॥

पहिलो पूरव उत्पाद, दूजो आग्रायणी,
वीर्य प्रवाद तीजो नमूं ए।

अस्ति नास्ति प्रवाद सत्ता जाणीये,
नाणप्रवाद पंचम गिणु ए ॥३॥

छट्ठो सत्य प्रवाद, सत्तम आतम,
कर्म प्रवाद अट्ठम गिणो ए।

प्रत्याख्यान प्रवाद, नामे नवम,
विद्या प्रवाद दशमो कह्यो ए ॥४॥

इग्यारम नाम अवन्ध्य प्राणायाम बारसो,
क्रिया विशाल तेरम भणो ए,

बिंदुसार इण नाम, चवदे ए कह्या,
शास्त्र थकी में संग्रह्या ए ॥५॥



ढाल ॥ २ ॥

श्री विमलाचल सिर तिलो (देशी)

उत्पाद पूर्व सोहामणो, कोटी पद परमाण।
षट्भावे प्रगट छे ते जिहां, त्रिपदी भाव निर्वाण ॥१॥

सर्व द्रव्य पर्याय तणो, जीव विशेष प्रमाण ।
दूजो पूर्व आग्रायणी, छिन्नू लख पद जाण ॥२॥
पद लख सित्तर जेहनी, संख्या परगट एह ।
वीर्य प्रबलता जीवनी, भाखी तीजे तेह ॥३॥
चोथे पूर्वे जे कह्यो, अस्ति नास्ति प्रवाद ।
पद संख्या साठ लाखनी, सप्त भंगी स्याद्‌वाद ॥४॥
ज्ञान प्रवाद पद पंचमो, सूत्रे आण्यो जोड ।
मत्यादिक पण भेदशुं, पद संख्या इक कोड ॥५॥
सत्य प्रवाद छट्ठो कहुँ, भाखु सत्य स्वरूप ।
संख्या पद इक कोडनी, भाखी अगम अनूप ॥६॥
नित्या नित्य पणो इहां, आतम द्रव्य सुभाव ।
छव्वीस पद क्रोड जेहना, सूत्रे आण्या भाव ॥७॥
कर्म प्रवाद तणो हिवे, प्रगटपणे अधिकार ।
लाख असी पद जेहना, कोडी इग निरधार ॥८॥
नवमो पूर्व कहुं हवे, नामे प्रत्याख्यान ।
लाख चोरासी जेहना, पद संख्या चित्त आन ॥९॥
अतिसय गुण संयुत भणी, साधन साध्य निदांन ।
विद्या अनुपम सातसे, कोडी दस लख जान ॥१०॥
अवन्ध्य कल्याण नाम इग्यारमो, छव्वीस कोड प्रमाण ।
ज्योतिः शास्त्र विचारणा, चौविह देव कल्याण ॥११॥

प्राणायाम पद बारमो, छप्पन्न लख इग क्रोड ।
प्राण निरोधन ने क्रिया, शास्त्रे आख्यो जोड ॥१२॥
कायिक्यादिक जे क्रिया, छद क्रिया सुनिशाल ।
पद सख्या नव कोडनी, तेरमो किरिया विशाल ॥१३॥
लोकसार बिंदु चवदमो, नामे अरथ निहाल ।
पद सख्या इक कोडनी, लाख पचीश समाल ॥१४॥
लोक प्रत्यय देसख भणी, संख्या गज परिमाण ।
सोल सहस अरु तीनशे, अरु तेंयासी जाण ॥१५॥
पूरन संख्या एक ही, गुण मालाथी देख ।
आगे बुधजन सोध जो, बाकी देश विशेष ॥१६॥



ढाल ॥ ३ ॥

वीर जिनेसर इम उपदिशे (देशी)

सूत्रे गूथें गणधारा, अरथे श्री अरिहंत भाखे रे ।
ते श्रुत ज्ञान नमुं सदा, पापतिमिर जिम नाशे रे ॥१॥
वाणीरे वीरजिणंदनी, सुणज्यो चित्त हित आणी रे ।
तत्त्व रमणता अनुसरे, संपूरण गुण खाणी रे ॥२॥
विषय कषाय तजी करी, ज्ञान भगति उर धारी रे ।
विधि सयुत्त जिन मंदिरे, प्रभु गुरु पास जुहारी रे ॥३॥

तप जप संयम आदरी, श्री श्रुत ज्ञान निधानो रे ।
सद्गुरु चरण नमी करी, संवर जोग प्रधानो रे ।।४।।
अक्षत लेई ऊजला, गुंहली सुंदर कीजे रे ।
नाण दंसण चारित्रनी, ढिगली तीन धरीजे रे ।।५।।
चवद पूर्व व्रत इण परे, सुगुरु संजोग लेई रे ।
विधिसुं पुस्तक पूजीये, चित्त अति आदर देई रे ।।६।।
इम तप संपूरण थयां, ऊजमणो हिव कीजे रे ।
घर सारू धन खरचने, नरभव लाहो लीजे रे ।।७।।
पूठा परत विटांगणा, पूरव नाम प्रमाणो रे ।
नवकर वाली कोथली, लेखण ठवणी जाणो रे ।।८।।
देहरे देव जुहारने, आरती मंगल कीजे रे ।
सनात्र पूजा वलि साचवी, तत्व सुधारस पीजे रे ।।९।।
इण पर तप आराधतां, दुरगति कारण छेदे रे ।
चवदह रज्जु सिरोमणि, जीव अक्षय गति वेदे रे ।।१०।।
तप आराधन विधि भणी, आगम वचने जोई रे ।
भवियण पिण तुमे आदरो, ज्यूं भव भ्रमण न होई रे ।११।



॥ कलश ॥

इम सयल सुखकर गच्छ खरतर तपे रवि जिम कांत ए।
सोभाग्य सूरि मुणिंद इण पर कह्यो पूर्व वृतात ए॥
सतत अठारे वरश छिन्नू नयर श्री वालूचरे।
ए स्तवन भणता श्रवण सुणता सयल मन वाछित फले॥१२॥



## पैंतालीस आगम का स्तवन

॥ दोहा ॥

चोवीशे श्री तीर्थपति, नमू देव अरिहत।
अर्थ प्रकाशे गणधरपुरे, द्वादश अग महत॥१॥
त्रिपदी लही गणधर रचे, सूत्र अर्थ सजोग।
अक्षर रूपे शारदा, प्रणमू त्रिकरणयोग॥२॥
टीका कर्ता जगत गुरु, सूत्र करे गणधार।
पचागी श्रुत विस्तरे, नय निक्षेप विचार॥३॥
दुषम काल दुर्भिक्षमें, भूले बारम अंग।
कंठ पाठमें लिखतकर, रचना रची अभग॥४॥
स्कदिल अरु देवर्द्धिगणि, आचारज सय पंच।
चोराशी आगम लिखे, कोटि ग्रथ तज खंच॥५॥

काल दोष से अब मिले, आगम पैंतालीस ।
ताको मुनि विवरण करे, मानो विसवावीस ॥६॥



ढाल ॥ १ ॥

जगत गुरु त्रिशला नंदन जी (देशी)

आचारांग पहिलो कह्योजी, मुनि आचार विचार ।
सुयगडांग दूजो अछे जी, पाखंडी निरधार ।
जगतगुरु भाखे वीर जिनंद ॥१॥
दश ठाणा ठाणांग मेंजी, समवायांग संख्यात ।
सहस छत्तीस भला प्रश्ननोजी भगवई अंग विख्यात ॥२॥
धर्म कथा ज्ञाता भणीजी दश श्रावक व्रतधार ।
दशा उपासक दशा सातमोजी, अंग कह्यो निरधार ॥३॥
अंतगड केवली जे थयाजी, वरणन अष्टम अंग ।
पंचानुत्तर जे गयाजी, अणुत्तरो वाई चंग ॥४॥
अंगुष्ठादिक प्रश्ननोजी, प्रश्न व्याकरण नाम ।
सुख दुखना फल भाषियाजी, सूत्र विपाके ताम ॥५॥
अढार सहस आचारंग मेजी, पद संख्या परिमाण ।
वर्ण संख्याते पद हुवेजी, ठाण दुगुण सब जाण ॥६॥

उववाई उपांगमेजी, कोणिक अंवडरूप।
वर्णन नगरी आदि देजी, साभल' भविजन चूंप ॥७॥
सूरियाभ पूजा करीजी, जिन प्रतिमा नवरग।
द्रव्य भाव बिहुं भेदसु जी, राय प्रश्नीय चित्त चग ॥८॥
जीवतणो अभिगम सहीजी, विजय देव प्रस्ताव।
जीवाभिगमे तीजो कह्यो जी, सुरकृत बहुविध भाव ॥९॥
पन्नवणा मे जाणज्योजी, जीवाजीव विचार।
जबुद्वीपनी वर्णनाजी, नाम थकी गुणधार ॥१०॥
सूरचद्र विग्रह गतीजी, पन्नती बिहुं जाण।
कप्पिया कप्पवडिंसियाजी, पुप्फिया नामे वखाण ॥११॥
पुप्फचुलिया जाणीयेजी, वन्हिदशा इण नाम।
नामथी अर्थ पिछाण ज्योजी, साभलता सुखधाम ॥१२॥



ढाल ॥ २ ॥

ख्याली लाल अणनट रग लागो (देशी)

छेदतणा प्रायश्चित्तनाजी, छेद छए एजाण।
बृहत्कल्प व्यवहारमेंजी, भाख्यो भगवत ज्ञान।

सुज्ञानी लाल इणसुं नित राचो।
राचो रांचोरे भविक दिल धार।
इणसुं नित राचो ॥ सुज्ञानी ॥१३॥
महानिशीथे भाखियोजी, जिन पूजा बिहुं भेद।
श्रावक द्रव्य भावसुंजी, मुनिवर भाव उमेद ॥१४॥
जीतकल्प वलि निशीथ छेजी, और दशा श्रुतस्कंध।
दश पयन्ना जाणियेजी, चौसरण संथार प्रबंध ॥१५॥
तंदुल वेयाली चंदा विज्जायजी, गणिविज्जा अभिधान ।१६।
ज्योतिष करंड महापच्चखाणजी, चार सूत्र छे मूल।
आवश्यक दश वैकालिकजी, उत्तराध्ययन अमूल ॥१७॥
चारे अनुयोगे करीजी, रचना सूत्रे जाण।
तेह नय निक्षेपथीजी, अनुयोग द्वार प्रधान ॥१८॥
द्रव्यानुयोग छए द्रव्यनीजी, चर्चा विधि विस्तार।
चरण करण अनुयोग में जी, मुनि श्रावक आचार ।१९।
गणितानुयोग गणनाकरीजी, पृथ्वी नग विमाण।
वर्ग मूल धन मूलथी जी, जाणो चतुर सुजाण ॥२०॥
धर्मकथा अनुयोग में जी, धर्मकथा दृष्टांत।
ए चारों विस्तारियाजी, पैंतालीस सिद्धांत ॥२१॥

ढाल ॥ ३ ॥

सागानेर विराजे (देशी)

सुण, सुण गौतम वाणी, इम वीर वदे गुण खाणी रे ।
भविया आगमसु मन लावो, मन कल्पित वात मा गावो रे।२२।
नंदी सूत्र चिरनंदो, यामें पंच ज्ञानने वंदो रे ।
ज्ञानना भेद वखाण्या, मति अठावीसे आण्या रे ॥२३॥
श्रुत चवदे वीसां भेदे, ए मिथ्या मतने छेदे रे ।
अवधि छ असरय प्रकारे, मनपर्यव दुय भेद धारे रे ॥२४॥
केवल एक प्रकाशे, ए सब विधि नंदी भासे रे ।
ए तो सहु आगमनी मूंद, स्यादवाद गंगनी बूंद रे ॥२५॥
अंग उपांगनी टीका, कर्त्ताने नमूं निरभीका रे ।
प्रथम हरिभद्र शीलाकाचारी, श्री अभय देव बलिहारी रे ।२६।
मलयगिरी गुरु स्वामी इत्यादिकने शिरनामी रे ।
सामान्य विशेषे भाखी निश्चय व्यवहार छे साखी रे ॥२७॥
उत्सर्ग वचन छे केइ, अपवाद वचन ने लेइ रे ।
इक मनसु आराधो, मनवाछित सगला साधो रे ॥

★

ढाल ॥ ४ ॥

मंगल कमला कंदए (देशी)

पैंतालीश आगम तणी ए, हिव तपविधि सुणजो हित भणी ए।
दूज पांचम एकादशी ए, ज्ञान तिथि तपथी कर्म जाय खसी ए।२६।
शक्ति छते उपवास ए, आंबिल निवीथी उल्लास ए ।
एकासण अथवा करे ए, इम पैंतालीस दिन आचरे ए ॥३०॥
जाप करे दो हजार ए, देव वंदन पूजन सार ए।
प्रतिक्रमण करे दोनुँ टंक ए, आगम सुणे अर्थ निसंक ए।।३१।।
ऊजमणो हित चित करे ए, गुरुभक्ति चित्तसुं आदरे ए।
भक्ति करे साहमी तणी ए, जे पढे पढावे ते भणी ए ॥३२॥
अन्न वस्त्र पुस्तक करे दान ए, तिण मनुष्य जनम परिमाण ए।
ते पामे श्रुत ज्ञान ए, क्रमथी लहे पद निर्वाण ए ॥३३॥

●

॥ कलश ॥

शुभ नंद शर निधि चंद्र वरषे, माघ सुदि पंचम दिने ।
वर नयर बिकानेर सुन्दर बृहत् खरतर गण घणे ।
गणधार कीर्ति सरिंद पाठक रामगणि ऋद्धि सार ए।
इम करिय स्तवना सुय महोदय सदा जय जय कार ए ॥३४॥

# इरियावही का स्तवन

प्रभु प्रणमु रे पास जिणेसर थभणो (देशी)

पद पकज रे प्रणमी वीर जिनदना ।
त्रिकरण सुधरे करि मुनि वर पय वदना ॥
अइमत्तेरे पडिकमी जिम इरीयावही ।
श्री वीरनी रे वाणी तहत्त करि सरदही ॥
उल्लालो सरदही वाणी मन सुहाणी चित्त आणी ते वली ।
मिच्छामि दुकड तणी सख्या कहिसु जिम कही केवली ॥
भू दग जलण तिम वाउ वणसइ विगल पण इद्री तणी ।
करता विराहण करम वध्या दूर ते करता भणी ॥



ढाल ॥ १ ॥

पुढवी दगरं तेऊ वाऊ वणस्सई ।
पण थावर रे बादर सुहुम दसे थई ॥
प्रत्येकजरे वणस्सई इग्यारे थया ।
बावीस रे पजत्तग अपजत्तया ॥उ॥
पज्जत्त अपजत्तग बखाणया बिगल तिय छह भाल ए ।
जल थल खेचर भुयग दुड पणइद्रिय तिरि अडियाल ए ॥

धम्मादि सातै नरक पुढ्वी नारकी तिहां सात ए ।
ते चवद भेदे करी जाणो पज्जत्त अपज्जत ए ॥२॥

॥ ढाल ॥

पनरह विधरे सुरगण परमाहम्मिया ।
किल विपियारे त्रिविध करम ते निम्मिया ।
जंभिय दस रे नव लोकांतिक जाणिये ।
सोलह विधरे व्यंतर देव वखाणिये ॥३॥
वखाणिये दस विध भुवन पतिना तार रवि शशि रिखगहा ।
चर थिर दसे विध जोइसी सुर वखाण्या जिणवीर जिहां ॥
बारह वैमानिक पण अणुत्तर नव ग्रैवेके नव भण्या ।
पज्जत्त अपज्जत्तग अठाणु अधिक सत संख्या गण्या ॥

॥ ढाल ॥ २

सेव आगम सही ए (देशी)

पंच भरत वलि ए रवत पंच ए, पंच विदेह वर भूमिका ए ।
खेत्र ए पनरह करम भूमि जाणिए असिकसि मसिहि आजीविका ए ॥
हेमवंत चेत्र वलि हरिवर्ष, रम्यक एरण्यवत सही ए ।

मेरु पिण पाखती चार चार क्षेत्र ए दशकुरु अकरमक भूमि कहीए ।४।
हिमगिरि शिखराय दाट चिहुं आरिअ लवण समुद्र मांहि निस्तरीए
सात सात अतर दोय पासे द्वीप छप्पन अतर धरी ए ।
दोइसे भेद दुई आगला जाणिये मणुय पज्जत्त अपज्जत्तया ए ।
एकसो एक समुछिम भेद ए तीनसे तीन मणुआ थया ए ॥५॥



ढाल ॥ ३ ॥

हिव जनम्या जगगुरु जगत्र हुवो जयकार ए (देशी)

पणमय तेसठविध जीव सहू छे एह,
अभिहय आदिक दस गुणित करीजे तेह ।
पण सहस छसे वलि तीस अधिकते जाण ।
ते रागे दोसे दुगुणा करी वखाण ॥६॥
हुई सहस इग्यारह दुइ सय साठ प्रमाण ।
ए प्रवचन वाणी जाणी हित उर आण ।
मन वच काया करि त्रिगुणा करि ते अक
तेतीस सहस सत सात असी निःसक ।७।
वलि करण करावण अनुमति त्रिगुणा कीध ।
इक लक्ख सहस इग तिसय चालीस प्रसिद्ध ।

अतीत अनागत वर्तमान वलि काल ।
जे थई विराधना तिणि त्रिगुण संभाल ।८।
तीन लाख सहस चार वीस अधिक ते थाय ।
अरिहंत प्रमुख छह साखे छ गुणा भाय ।
इम लाख अढारह वलि सहस चउवीस ।
इकसो वीसोत्तर हुई संख्या निसदीस ॥६॥

●

ढाल ॥ ४ ॥

चोपाईनी (देशी)

इणपरि मिछामि दुकडं देई, भविक तरया भवजल निधि केई ।
तरे अछे वलि आगल तरसी, निरमल केवल लच्मी वरसी ।१०।
इरियावही धरम गंगाजल, स्नान करि आतम करे निरमल ।
स्वमुख भाषें वीर जिनेसर, सूत्र करि गूँथे ते श्रुतधर ।११।
इम पडिकमी मुनिवर अइमत्तो, वीर सीस केवल पद पत्तो ।
त्रिकरण सुध तसु पय प्रणमी जे, मानव जन्म सफल इम कीजे ।१२।

●

॥ कलश ॥

इम वीर जिणवर ज्ञान दिणयर सयल लोय सुहंकरो ।
तिय लोय सामी सिद्धि गामी सुद्ध धरम धुरंधरो ।

उवज्झाय लक्ष्मी कीर्ति सीसे जैन वाणी मन धरी।
गणि लब्धि वल्लभ स्तवन भणे इम संथुणयो भावे करी ॥१३।

●

## चौद गुणठाणा का स्तवन

थभण पुर श्री पास जिणदो (देशी)

सुमति निणद सुमति दातार, वंदु मन सुध वारवार।
आणी भाव अपार, चौदे गुण स्थानक सुविचार।
कहिस्यु सूत्र अरथ मन धार, पामे जिम भवपार ॥ १ ॥
प्रथम मिथ्यात्व कह्यो गुणठाणो, बीजो सास्वादन मन आणो।
तीजो मिश्र वखाणु, चोथो अविरति नाम कहाणो।
देश विरति पंचम परमाणो, छट्ठो प्रमत्त पिछाणु ॥ २ ॥
अप्रमत्त सप्तम लहीजे, अट्ठम अपूरव करण कहीजे।
अनिवृत्ति नाम नवम्म, सूक्षम लोभ दसम सुविचार।
उपशांत मोह नाम इग्यार, खीण मोह बारम्म ॥ ३ ॥
तेरम सयोगी गुण धाम, चउदम थयो अयोगी नाम।
वरणु प्रथम विचार, कुगुरु कुदेव कुधर्म वखाणें।
एह लक्षण मिथ्या गुणठाणे, तेहना पंच प्रकार ॥ ४ ॥

●

ढाल ॥ २ ॥

सफल संसारनी (देशी)

जेह एकांत नय पक्ष थापी रहे ।
प्रथम एकांत मिथ्यामति ते कहे ।
ग्रंथ उत्थापि थापे कुमति आपणी,
कहे विपरीत मिथ्यामती ने भणी ॥५॥

जैन शिव देव गुरु सहु नमे सारिखा ।
तृतीय ते विनय मिथ्यामति पारिखा ।
सूत्र नवि सरदहे रहे विकलपवर्णो,
संसई नाम मिथ्यात चोथो भणे ॥६॥

समझ नहीं कांई निज धंध रातो रहे ।
एह अज्ञान मिथ्यात्व पंचम कहे ।
एह अनादि अनंत अभव्यनें ।
करिय अनादि तिथि अंत सुभव्यने ॥७॥

जेम नर खीर घृत खंड जीमने वमे ।
सरस रस पाय वलि स्वाद केहवो गमें ।
चोथ पंचम छट्ठे ठाण चढिने पड़े ।
किणहि कषाय वसि आय पहिले अडे ।८।

रहे विच एक समयादि षट आवलि ।
गहीय सासादने स्थिति इसी सांभली ।

हिव अहीं मिश्र गुणठाण त्रीजो कहे,
जेम उत्कृष्ट अंतर महुरत लहे ॥६॥



ढाल ॥ ३ ॥

चेकर जोडी ताम (देशी)

पहिला चार कषाय शम करि समकिती केतो सादि मिथ्यामती ए ।
ए बेहिज लहे मिश्र, सत्य असत्य जिहां सरदहणा वेउ छती ए ।१०।
मिश्रगुणा लय माहि मरण लहे नहीं आउ बंध न पडे नवो ए ।
केतो लहे मिथ्यात के समकित लहे मति सरखी गति परभवे ए ।११।
चार अप्रत्याख्यान उदय करी लहे मति तिण किहां समकित पणो ए ।
ते अविरति गुणठाण तेत्तीस सागर साधिक तिथि एहनी भणो ए ।१२।
दया उपशम सवेग निर्वेद आसता समकित गुण पाचे धरे ए ।
सहु जिन वचन प्रमाण जिन शासन तणी अधिक २ उन्नति करे ए ।१३।
केईक समकित पाय पुदगल अरधताईं उत्कृष्टा भवमें रहे ए ।
केईक भेदि गठी अतर महुरते चढते गुण शिवपद लहे ए ।१४।
चार कषाय प्रथम त्रिण वलि मोहनी मिथ्या मिश्र सम्यक्तनी ए ।
साते प्रकृति जास पग्ही उपशमे ते उपशम समकित धणी ए ।१५।
जिण साते खय कीध ते नर खायकी तिणहीज भव शिव अनुसरे ए ।
आगल बान्ध्यो आउ ताते तिहा थकी तीजे चोथे भव तरे ए ।१६।

## ढाल ॥ ४ ॥

इण पुर कंबल कोइ न लेसी (देशी)

पंचम देशविरति गुणठाण, प्रगटे चौकडी प्रत्याख्यान ।
जेण तजे बावीश अभक्ष, पाम्यो श्रावकपणो प्रत्यक्ष ॥१७॥
गुण इकवीश तिके पण धारे, साचा वारे व्रत संभाले ।
पूजादिक षट्कारक साधे, इग्यारे प्रतिमा आराधे ॥१८॥
आर्त रौद्र ध्यान हुवे मंद, आयो मध्य धरम आनंद ।
आठ वरस ऊणी पुव्वकोड, पंचम गुणठाणे थिति जोड ॥१९॥
हिव आगे साते गुणठाण, इक इक अंतर महुरत मान ।
पंच प्रमाद वसे जिण ठाम, तेण प्रमत्त छट्ठो गुण धाम ॥२०॥
थविर कल्प जिन कल्प आचार, साधे षट् आवश्यक सार ।
उद्यत चोथा चार कषाय, तेण प्रमत्त गुणठाण कहाय ॥२१॥
सूधो राखे चित्त समाधे, धरम ध्यान एकांत आराधे ।
जिहां प्रमाद क्रिया विध नाशे, अप्रमत्त सत्तम गुणभासे ॥२२॥

●

## ढाल ॥ ४ ॥

श्री शंखेसर पास जिनेसर भेटिये (देशी)

पहिले अंसे अट्ठम गुणठाणा तणे ।
आरंभे दोय श्रेणी संक्षेपे ते गिणे ।

उपशम श्रेणि चढे जे नर हुवे उपशमी ।
क्षपक श्रेणि क्षायक प्रकृति दश क्षय गमी ।२३।
तिहा चढता परिणाम अपूरव गुण लहे ।
अट्ठम नाम अपूरव करण तिणे कहे ।
शुक्ल ध्यानको पहिलो पायो आदरे ।
निरमल मन परिणाम अडिग ध्याने धरे ।२४।
हिव अनिवृत्ति करण नवमो गुण जाणिये ।
जिहां भाव थिर रूप निवृत्ति न आणिये ।
क्रोध मान ने माया सजल ना हणे ।
उदे नहीं जिहा वेद अवेद पणो तिणे ॥२५॥
जिहा रहे सुक्षम लोभ काढक शिन अभिलखे ।
ते सुक्षम संपराय दशम पडित देखे ।
शान्त मोह इण नाम इग्यारम गुण कहे ।
मोह प्रकृति जिण ठाम सहु उपशम लहे ।२६।
श्रेणि चढ्यो जो काल करे किणही परे ।
तो थाये अहमिंद्र अवर गति नादरे ।
चार वार सम श्रेणि लहे संसार में ।
एक भवे दोय श्रेणि अधिक न ह्ये किम ॥२७॥

चढि इग्यारम सीम समी पहिले पडे ।
मोह उदे उत्कृष्ट अरध पुदगल रडे ।
क्षपक श्रेणी इग्यारम गुणठाणो नहीं ।
दशम थकी बारम चढे ध्याने रही ॥२८॥



ढाल ॥ ६ ॥

एक दिन कोई मगध आयो पुरंदर पास ए (देशी)

खीणमोह नामे गुणठाणो बारम जाण ।
मोह खपायो नेडो आयो केवल नाण ।
प्रगटपणे जिहां चारित्त अमल यथा आख्यात ।
हिव आगे तेरम गुणठाणा तणी कहे वात ॥२९॥
घातिय चौकडी क्षय गई रहीय अघातिय एम ।
प्रकृति पच्यासी जेहने जूना कापड जेम ।
दरसण ज्ञान वीरज सुख चारित्त पंच अनंत ।
केवल ज्ञान परगट थयो विचरे श्री भगवंत ॥३०॥
देखे लोक अलोकनी ज्ञानी परगट वात ।
महिमावंत अढारे दूषण रहित विख्यात ।
आठे वरसे ऊणी कही इक पूरव कोडी ।
उत्कृष्ट तेरम गुणठाणे ए थिति जोडि ॥३१॥

कर शैलेसी करण निरूध्या मन वच काय ।
तेह अयोगी अंतमे सहु प्रकृति खपाय ।
पाचें लघु अक्षर उचरता जेहनो मान ।
पचम गति पामे शिवपद चउदम गुणथान ॥३२॥
त्रीजे वारमे तेरमे मांहे न मरे कोय ।
पहिलो बीजो चोथो परभव साथे होय ।
नारक देवनी गति मांहे लाभे पहिला चार ।
धुरला पाच तिरि माहे मणुए सर्व विचार ॥३३॥



॥ कलश ॥

इम नगर बाहडमेरु मडन सुमति जिन सुपसाउले ।
गुणठाण चौद विचार वरण्यो भेद आगमने वले ॥
सवत्त सत्तरसे छत्तीसे श्रावण वदि एकादशी ।
वाचक विजय श्रीहरप सानिध कहे मुनि इम धर्ममसी ।३४।



## २४ दंडक का स्तवन

ढाल ॥ १ ॥

आदर जीव समा गुण आदर ए (देशी)

पूर मनोरथ पास जिनेसर, एह करू अरदासजी ।
तारण तरण विरुद तुझ सामली, आयो हू धरि आसजी ।१।

इण संसार समुद्र अथागे, भमियो भवजल मांहिजी।
गिलगिचिया जिम आयो गिडतो, साहिब हाथे साहीजी ।२।
तु' ज्ञानी तो पिण तुझ आगे, वीतक कहिये वातजी।
चौवीस दंडक मांहू भमियो, वरणु' तेह विख्यातजी ।३।
साते नरक तणो इक दंडक असुरादिक दस जाणजी।
पांच थावर ने तीन विकलेन्द्रि उगणिस गिणती आणजी ।४।
पंचेन्द्रि तिर्यचने मानव, एह थया इकवीसजी।
व्यंतर ज्योतिषने वैमानिक इम दंडक चोवीसजी ॥५॥
पंचेन्द्रि तिर्यच अनेनर, पर्याप्ता जे होयजी।
ए चौविह देवां मा उपजे, इम देवा गति दोयजी ॥६॥
असंख्याते आऊखे नर तिरि, निश्चे देवज थायजी।
निज आउखे समके ओछे, पिण अधि के नवि जायजी ॥७॥
भवनपती के व्यंतर तांइ, संमूर्च्छिम तियँचजी।
सरग आठमे तांई पहुंचे, गर्भज सुकृत संचजी ॥८॥
आऊ संख्याते जे गर्भज, नर तिर्यच विवेकजी।
बादर पृथ्वी ने वलि पाणी, वनस्पति प्रत्येकजी ॥९॥
पर्याप्ता इण पांचे ठामे, आवी उपजे देवजी।
इण पांच मांहे पिण आगे अग्निकाई कहुं हेवजी ॥१०॥

तीजा सरग थकी माडी सुर, एकेन्द्री नवि थायजी ।
अट्ठमथी उपरला सगला, मानव माहे आयजी ॥११॥



ढाल ॥ २ ॥

आज निहेज्योरे दीसे नाहलो (देशी)

नरक तणी गति आगति इण परे, जीव भमे ससार ।
दोय गतिने दोय आगति जाणियें, चलिय विशेष विचार।१२।
सख्याते आऊ पर्याप्ता, पचेन्द्री तिर्यंच ।
तिमहिज मनुष्य एहिज वे नरक में, जाये पाप प्रपच ॥१३॥
प्रथम नरक लगि जाय असन्नियो, गोह नकुल तिम बीय ।
गृध प्रमुख पखी त्रीजी लगे, सिंह प्रमुख चोथीय ॥१४॥
पचमी नरके सीमा सॉपनी, छट्ठी लगे स्त्री जाय '
मातमिये माणस के माछलो, उपजे गर्भज आय ॥१५॥
नरक थकी आवे विहुं दड के, तिर्यंच के नर थाय ।
ते पण गर्भजने पर्याप्ता, सख्याती जसु आय ॥१६॥
नारकियाने नरकथी निसरया, जे फल प्राप्ती होय ।
उत्कृष्टे मागो कवि ते कहु, पिण निश्चे नहीं कोय ॥१७॥
प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्ती हुवे, बीजी हरि बलदेव ।
तीजी लगि तीर्थंकर पद लहे, चोथी केवल हेव ॥१८॥

पंचमी नारकीनो सर्व विरति लहे, छट्ठी देश विरत्त ।
सातमी नरकनो समकित ही लहे, न हुवे अधिक निमित्त ।१६।

●

## ढाल ॥ ३ ॥

करम परीक्षा करण कुमर चल्योरे (देशी)

मानव गति विण मुगति हुवे नहीं रे, एहनो इम अधिकार ।
आऊ संख्याते नर सहु दंडकेरे, आवी लहे अवतार ॥२०॥
तेऊ वाऊ दंडक बे तजीरे, बीजा जे बावीस ।
तिहांथी आया थाये मानवी रे, सुख दुख कर्म सरीस ॥२१॥
नर तिर्यंच असंख्य आउखेरे, सातमी नरकना तेम ।
तिहांथी मरिने मनुष्य हुवे नहीं रे, अरिहंत भाख्यो एम ।२२।
वासुदेव बलदेव तथा वली रे, चक्रवर्ती ने अरिहंत ।
सरग नरकना आया ए हुवे रे, नर तिरिथी न हुवंत ॥२३॥
चौविह देव थकी चवि ऊपजेरे, चक्रवर्ति बलदेव ।
वासुदेव तीर्थंकर एवे हुवे रे, वैमानिक थकी बेव ॥२४॥



## ढाल ॥ ४ ॥

नाभि अने मरुदेवा (देशी)

हिव तिर्यंच तणी गति आगति कहिये अशेष ।
जीव भमे इण परभव मांहे करम विशेष ॥

आउ संख्याती, जे नर तिर्यंच विचार।
ते सगला तिर्यंच मांहे लहे अवतार ॥२५॥
जिण तिरयंचा माहे आवे नारक देव।
ते कह्या पहिली तिण कारण न कहुं हेव ॥
पचेन्द्री तिरयंच सख्याते आऊखे जेह।
ते मरी चिहुंगतिमा जावे इहा नहीं संदेह ॥२६॥
थावर पाच तीने विकलेन्द्री आठे कहावे।
तिहांथी आऊ सख्याता नर तिरयंच में आवे ॥
विकल चवी लहे सर्व विरति पिण मुक्ति न पावे।
तेऊ वाऊथी आयो तेहने समकित नावे ॥२७॥
नारक वरजीने सगला ही जीव संसार।
पृथ्वी आऊ वनस्पती मांहे लहे अवतार ॥
ए तीने इहांथी चवि आवे दसे ठामे।
थावर विकल तिरि नर माहे उत्पत्ति पामे ॥२८॥
पृथ्वीकाय आदि देई दस ठकै एह।
तेऊ वाऊ मांहे आवी ऊपजे तेह ॥
मनुष्य विना नव मांहे तेऊ वाऊ थे जावे।
विकलेन्द्री ते दस मांहि जावे पुठांहि आवे ॥२९॥

एम अनादि तणो मिथ्याती जीव एकंत।
वनस्पती मांहे तिहां रहीयो काल अनंत॥
पुढवी पाणी अग्नि अने चोथो वलि वाय।
काल चक्र असंख्याता ताईं जीव रहाय॥३०॥
बेइन्द्री तेइंद्रि अने चौरिन्द्री मझारे।
संख्याता वरसां लगे भमियो कर्म प्रकारे॥
सात आठ भव लगतां नर तिरयंच में रहियो।
हिव मानव भव लहिने साधु ने वेष में रहियो॥३१॥
राग द्वेष छूठे नहीं किम होवे छूटकवार।
पिण छे माहरे मन सुधता हरो एक आधार॥
तारण तरण में त्रिकरण सुद्ध अरिहंत लाधो।
हिव संसार घणो भमियो तो पुद्गल आधो॥३२॥
तूं मन वंछित पूरण आपद चूरण सामी।
ताहरी सेव लहीतो में नवनिध सिध पामी॥
अवर न कांइ इच्छूं इण भव तुहीज देव।
सूधे मन एक होय जो भव भव ताहरी सेव॥३३॥

★

॥ कलश ॥

इम सयल सुखकर नगर जेशलमेर महिमा दिन दिने ।
संवत्त सत्तरे उगणतीसे दिवस दीवाली तणे ॥
गुण विमल चन्द्र समान वाचक विजय हरष मुनीस ए ।
श्री पासना गुण एम गावे धरमसी मुजगीस ए ॥३४॥



## मुहपत्ती पडिलेण का स्तवन

कपूर हुवे अति ऊजलोरे (देशी)

वरधमान जिनवर तणाजी, चरण नमू चित्त लाय ।
ज्ञान क्रिया जिण उपदिसेजी, शिवसुख तणो उपाय ॥१॥
भविकजन धर श्री जिन उपदेश, छूटे कर्म किलेस ।
पडिलेहण मुहपत्ति तणीजी, भाखी छे पचवीस ॥
तिहा ए भाव विचारिये जी, इम भाखे जगदीश ॥२॥
प्रथम वे पास विलोकियेजी, सूत्र अर्थनी दृष्टि ।
ए पडिलेहण दृष्टिनीजी, करे धर्मनी पुष्टि ॥३॥
समकित मिश्र मिथ्यातनी, मोहनी तीननो त्याग ।
कामराग स्नेहराग ने जी, तन रति निम दृष्टि राग ॥४॥

सीपवधूटक गुरु थकीजी, वाम हाथ करनाउ ।
नव अखोडा आदरोजी, नव पखोडा गमाउ ॥५॥

देवतत्व गुरुतत्व सुंजी, धर्मतत्व गृहीसार ।
कुगुरु कुदेव कुधर्मनोजी, तीन तणो परिहार ॥६॥

ज्ञान दरसण चारित्रनाजी, संग्रह तीन आचार ।
तजो विराधना तीन एजी, एह अर्थ अवधार ॥७॥

मन वचन कायानी सदाजी गुप्ती ग्रही जे शुद्ध ।
परिहरीये वलि जाणनेजी, तीने दंड विसुद्ध ॥८॥

पडिलेहण पचवीस एजी, मुहपत्तीनी सार ।
हिव पडिलेहण अंगनीजी, ते पिण चतुर सुविचार ॥९॥

हास्य रति अरति तीननेजी, सुद्ध करो वाम बांह ।
तजि भय शोक दुगंछनाजी, दक्षिण पिण करे साह ॥१०॥

धुग्ली लेश्या तीन एजी, ते शिरथी करि दूर ।
रिद्धि रस शाता गाखोजी, करि मुखथी चकचूर ॥११॥

काढ सल्य तीन उर थकीजी, माया नियाण मिथ्यात ।
चार कषाय वे वगलथीजी क्रोधादिक करि घात ॥१२॥

तज षट्काय विराधना जी, चरण वेहुं शुद्ध होय ।
ए पडिलेहण अंगनीजी पचवीसे तूं जोय ॥१३॥

इम पडिलेहण जे करेजी, धर मन ज्ञान विवेक ।
सकल कर्म दूरे करेजी, पामे सुक्ख अनेक ॥१४॥



मली ।
रली ॥
नग्रही ।
ही ।१५।

॥१॥

॥२॥

॥३॥

म थ प्रन्पे पक गज, ग्रही अवयर पनह ।
पडिवन नं पुंगज, भवयर मिती पनेर ॥४॥

संयुत सकल नये करी, जुगत जुगत सुधबोध ।
धन जिन शासन जग जयो, तिहां नहीं कोई विरोध ।५।



## ढाल ॥ १ ॥

असाउरी (देशी)

श्री जिन शासन जग जयकारी, स्याद्वाद शुद्ध स्वरूप रे ।
नय एकांत मिथ्यात्व निवारण, अकल अभंग अनूप रे ॥६॥
कोई कहे ए काल तणे वश, सकल जगत गत होय रे ।
काले उपजे विणसे काले, अवर न कारण कोय रे ॥७॥
काले गर्भ धरे जग वनिता, काले जनमे पूत रे ।
काले बोले काले चाले, काले झाले घर सूत रे ॥८॥
काले दूध थकी दही थाये, काले फल परिपाक रे ।
विविध पदारथ काल उपाये, अंतकरे वेवाक रे ॥९॥
जिन चउवीसे वारे चक्की, वासुदेव बलदेव रे ।
काले कवलित कोई न दीसे, जसु करता सुरसेव रे ॥१०॥
उत्सर्पिणि अवसर्पिणि आरा, छ छ जूजुय भांत रे ।
षट ऋतु काल विशेष विचारो, भिन्न भिन्न दिन रात रे ।११।
काले बाल विलास मनोहर, यौवन काला केश रे ।
वुढापणे हुय वलि वलि दुर्बल, शक्ति नहीं लवलेश रे ।१२।

ढाल ॥ २ ॥

गिरुआ गुण श्री वीरजी ए (देशी)

तव स्वभाव वादी वदेजी, काल किसुं करे एक ।
वस्तु स्वभावे नीपजेजी, विणसे तेमज निसक ॥१३॥
विवेकी जुओ जुओ वस्तु स्वभाव ।
छते योग जोवन वतीजी, वांझणी न जणे बाल ॥
मूंछ नहीं महिला मुखेजी, कर तल उगे न वाल ॥१४॥
विण स्वभाव नवि सपजेजी, किमही पदारथ कोय ।
अंब न लागे लींबडे जी, बाग वसते जोय ॥१५॥
मोर पींछ कुण चीतरे न जी, कुण करे सध्या रंग ।
अंग विविध सवि जीवनाजी, सुंदर नयन कुरंग ॥१६॥
कांटा बोर बंबूलनाजी, कुणे अणियाला कीध ।
रूप रंग गुण जूजआजी, तस फल फूल प्रसिद्ध ॥१७॥
विसहर मस्तके नित वसेजी, मणि हरे विस तत्काल ।
परवत थिर चल वायरोजी, उरध अगननी झाल ॥१८॥
मच्छ तुंब जलमां तरेजी, बूडे काग पाहाण ।
पंखी जाति गयणे फिरेजी, इण परे सहिज विनाण ॥१९॥
नाय मुंठथी उपसमेजी, हरडे करे विरेच ।
सींके नहीं कग कोरडुजी, सकल स्वभाव अनेक ॥२०॥

देश विदेश काठनोजी, सुयमां थाये पाखाण ।
संख अस्थिनो नीपजेजी, क्षेत्र स्वभाव प्रमाण ॥२१॥
रवि तातो शशि सीयलोजी, भव्यादिक बहुभाव ।
छए द्रव्य आप आपणाजी, न तजे कोई स्वभाव ॥२२॥



ढाल ॥ ३ ॥

कपूर हुवे अति ऊजलो रे (देशी)

काल किसु करे वापडो रे, वस्तु स्वभाव अकज्ज ।
जो न होइ भवितव्यताजी, तो किम सीभे कज्ज रे ॥२३॥
प्राणी म करो मन जंजाल, एतो भावी भाव निहाल रे ।
जलधि तरे जंगल फिरेजी, कोडि यतन करे कोय ॥
अण भावी होवे नहीं जी, भावि होयते होय रे ॥२४॥
आंबे मोर वसंतमांजी, डाले कोइ लाख ।
कर्या केई खांखटीजी, केई आंबा केई साख रे ॥२५॥
बांउल जिम भवितव्याजी, जिण जिण दिशे जाय ।
परवस मन माणस तणोजी, तृण जिम पूठे धाय रे ।२६।
नियत वसे विण चिंतव्यूँजी, आवी मले तत्काल ।
वरसां सोनु चिंतव्योजी, नियम करे विसराल रे ॥२७॥
आटमो चक्री सुभूम ते जी, समुद्र पड्यो विकराल ।

अम्रदल चखी नणाजी, नयन हरे गोवाल रे ॥२८॥
रोहडा कोयल करेजी, किम राखीगरे प्राण ।
आहेडी शर नाखियोजी, उपर ममे सिचाण रे । ॥२९॥
आहेडी नागे डस्योजी, बाण लग्यो सींचाण रे ।
रोहडो उडी गयोजी, जोयो नियति परमाण रे ॥३०॥
नहस हणवा संग्राममाजी, रान पड्या जीवन ।
मंदिर माहे मानवीजी, मरया हो न रहंत रे ॥३१॥

*

ढाल ॥ ४ ॥

मानी मनोहरनी (देशी)

दान [illegible] नियति मति [illegible], करम करे ते थाय ।
धर्मे नरक [illegible] गुर्[illegible], और मया नरे [illegible] ॥३२॥
[illegible] रे करम न छूटे [illegible] ।
[illegible] ॥

कर्मे वरस लगे रिसहेसर, उदक न पामे अन्न ।
कर्मे जिननें जोओ गमारे, खीला ठोप्यां कन्न ॥३५॥
कर्मे एक सुखपाल वेसे, सेवक सेवे पाय ।
एक हय गय चढ़्या चतुरनर, एक आगल ऊजाय ।३६।
उद्यममानी अंधतणी परि, जग हीडे हा हुतो ।
कर्म वली ते लहे सफल फल, सुख भर सेजे सूतो ॥३७॥
ऊँदर एके कीधो उद्यम, करंडियो कर कोले ।
मांहे घणा दिवसनो भूखो, नाग रह्यो डम डोले ॥३८॥
विवर करी मूषक तसु मुखमां, दीये आपणु' देह ।
मार्ग लहि वन नाग पधार्या, कर्म मर्म जोवो एह ।३६।



ढाल ॥ ५ ॥

तो चढियो घण माण गजे (देशी)

हिव उद्यमवादी भणे ए, ए चारे असमत्थतो ।
सकल पदारथ साधवा ए, उद्यम एक समरत्थतो ॥४०॥
उद्यस करतां मानवीए, स्यु' नवि सीझे काजतो ।
रामें रयणायर तरीए, लीयो लंका राजतो ॥४१॥
करम नियतिने अनुसरे ए, जेहमां सत्व न होयतो ।
देव्रल वाघ्र सुख पंखियाएं, पियु पेसंता जोयतो ॥४२॥

जिण उद्यम किम निकले ए, तिल माहेथी तेलतो ।
उद्यमथी उचो चढे ए, जोवो एकेन्द्रिय वेलतो ॥४३॥
उधम करता इक समेए, जेह न सीझे काजतो ।
तो फिर उद्यमथी हुवे ए, जो नवि आवे वाझ तो ॥४४॥
उधम करि उर्या विनाए, नवि रधाये अन्न तो ।
आवी न पडे कोलियोए, मुखमां खेपे जतन्नतो ॥४५॥
कर्म पूत उद्यम पिताए, उद्यम कीधा कर्म्मतो ।
उद्यमथी दूरे टलेए, जोओ कर्मनो मर्मतो ॥४६॥
दट प्रहारी हत्या करीए, कीधा पाप अनततो ।
उद्यमथी पट्मास माए, आप थया अरिहत तो ॥४७॥
टीपे टीपे सरवर भरे ए, कॉकरे कॉकरे पालतो ।
गिरि जेहवागढ नीपजे ए, उद्यम शक्ति निहालतो ॥४८॥
उद्यमथी जल बिंदु ओए, करे पाहणमा ठामतो ।
उद्यमथी विद्या भणे ए, उद्यम जोडे दामतो ॥४९॥



ढाल ॥ ६ ॥
" दिटी किहा राखी (देशी)

ए पाचे ही वाद करता, श्री जिन चरणे आवे ।
अमियरसे जिन वयण सुणीने, आणद अग न मावे रे ।५०।

समकित मति मन आणो रे,
नय एकांत म ताणो रे, ते मिथ्या मत जाणो रे ॥
ए पांचो समुदाय मिल्यां विण, कोई कारज न सीझे रे।
अंगुली जोगे कवल तणी परे, जे बूझे ते रीझेरे ॥५१॥
आग्रह आणी कोई एकनें, एहमां दिये वडाई।
पिण सेना मिल सकल रणांगण, जीते सुभट लडाई रे ॥५२॥
तंतु सभावे पट उपजावे, कालक्रमे वणाई।
भवितव्यता होय ते नीपजे, नहीं तो विघन घणाई रे ॥५३॥
तंतुवाय उद्यम भोक्तादिक, भाग्य सबल सहकारी।
ए पांचे मिल सकल पदारथ, उत्पत् जोवो विचारी रे ॥५४॥
नयति वसे हलु कर्म थईने, निगोद थकी नीकलियो।
पुण्ये मनुज भवादिक पामी सदगुरु ने जई मिलियो रे ।५५।
भवथितिनो परिपाक थयो तब, पंडित वीर्य उलसियो।
भव्य स्वभावे शिवगति गामी, शिवपुर जईने वसियो ॥५६॥
वर्धमान जिन इण परि वीनवो, शासन नायक गावो।
संघ सकल सुखदाई जेहथी, स्याद्वाद रस पावो रे ॥५७॥

★

॥ कलश ॥

इम धर्म नायक मुगति दायक वीर जिनवर संथुण्यो ।
मय सत्तर सनत्त वन्हि लोचन वर्ष हर्ष धरी घणो ॥
श्री विजय देव सूरिंद पटधर विजय प्रभु मुणिंद ए ।
कीर्ति विजय वाचक सीस इण परि विनय कहे आणंद ए ।५८।



## चौबीस तीर्थंकर का स्तवन

नयनों मे आकर बसना पारस बेकरार है (देशी)

मेरा एक ध्यान है, श्री चौबीसों भगवानों का ही एक ध्यान है।
श्री ऋषभ अजित जिन नामी ।
संभव अभिनन्दन स्वामी ॥
सुमति पदम सुपास है, चंदा प्रभुनंदो मावे मेरा एक ध्यान है ।१।
सुविधि शीतल श्रेयासा ।
वासुपूज्य विमल अवतंसा ॥
अनन्त धर्म नाथ है, शांति ॐ शांति शांति मेरा एक ध्यान है ।२।
कुन्थु अर मल्लीनाथा ।
मुनि सुव्रत शिवपुर साथा ॥
नमि अरिष्ट नेम है, पारस पावन रसधारी मेरा एक ध्यान है ।३।

शासन पति गुण गंभीरा ।
श्री वर्द्धमान महावीरा ॥
प्राणाधार सार हैं तीर्थंकर तारणहार ॥ मेरा० ॥४॥

वृष गज घोडा कपि जानो ।
है क्रौंच कमल परमाणो ॥
स्वस्तिक स्वस्तिकार हैं, आगम के अनुसार ॥ मेरा० ॥५॥

है चन्द्र मकर श्रीवत्सा ।
खड्गी महिष प्रशस्ता ॥
वराह स्येन वज्र है, मृग छाग नन्द्यावर्त ॥ मेरा० ॥६॥

घट कूर्म नीलकज शंखा ।
फणि सिंह सुलांछन चंगा ॥
इनसे भान होत है गुरु गम से यह सब जाना ॥ मेरा० ॥७॥

अरिहंत सिद्ध पदधारी ।
गम अगम रूप अवतारी ॥
मूर्त अमूर्त भाव हैं, प्रभु के पावन चरणों में ॥ मेरा० ॥८॥

दो श्वेत रक्त हैं ।
दोनों दो नील है काले दोनों ॥
कंचन वर्ण सोल हैं वीसस्थानक तप से होते ॥ मेरा० ॥९॥

हैं सुखसागर भगवाना ।
हरि-पूजित गुण परधाना ॥
गुण चार आठ हैं गुण और अनन्ते उनमें मेरा एक ध्यान है।१०।
सुकवीन्द्र कीरति गावें-
आतम परमातम भावें ॥
जय जय कार पार है, है भवसागर से दूर मेरा एक ध्यान है।११।



## श्री पुण्य प्रकाशनुं स्तवन

॥ दोहा ॥

सकल सिद्धि दायक सदा, चोवीसे जिनराय ।
सद् गुरु स्वामिनी सरस्वती प्रेमे प्रणमुं पाय ॥१॥
त्रिभुवन पति त्रिशला तणो, नंदन गुण गंभीर ।
शासन नायक जग जयो, वर्धमान वडवीर ॥२॥
एक दिन वीर जिणंदने, चरणे करी प्रणाम ।
भविक जीवना हित भणी, पूछे गौतम स्वाम ॥३॥
मुक्ति मार्ग आराधिए, कहो किण परे अरिहंत ।
सुधा सरस तव वचन रस, भाखे श्री भगवंत ॥४॥
अतिचार आलोइए, व्रत धरीए गुरु साख ।
जीव खमावो सयल जे, योनि चोराशि लाख ॥५॥

त्रिविधशुं वली वोसिरावीए, पापस्थानक अढार ।
चार शरण नित्य अनुसरो निंदो दुरिताचार ॥६॥
शुभ करणी अनुमोदिए, भाव भलो मन आण ।
अणसण अवसर आदरी, नवपद जपो सुजाण ॥७॥
शुभ गति आराधन तणा, ए छे दश अधिकार ।
चित्त आणीने आदरो, जिम पावो भव पार ॥८॥



## ढाल ॥ १ ॥

ए छिंडी कीहां राखी (देशी)

ज्ञान दरिशण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार ।
एह तणा इह भव परभवना आलोइए अतिचार रे ।
प्राणी ज्ञान भणो गुण खाणी, वीर वदे एम वाणी रे ॥१॥
गुरु ओलवीए नहि गुरु विनये, काले धरी बहुमान ।
सूत्र अर्थ तदुभय करी सूधां, भणीए वही उपधान रे ॥२॥
ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नवक रवाली ।
तेह तणी कीधी आशातना, ज्ञान भक्ति न संभाली रे ॥३॥
इत्यादिक विपरीत पणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ।
आभव परभव वली रे भवो भव, मिच्छामि दुक्कडं तेह ।
रे प्राणी, समकित ल्यो शुद्ध जाणी वीर वदे एम वाणी रे ।४।

जिनवचने शंका नवि कीजे, नवि परमत अभिलाप।
साधु तणी निंदा परिहरजो फल संदेह म राख रे ॥५॥
मूढपणु छडो परशंसा, गुणवंत ने आदरी ए।
साहम्मी ने धर्मे करी थिरता, भक्ति प्रभावना करीए रे ॥६॥
संघ चैत्य प्रासाद तणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो।
द्रव्य देवको जे विणसाड्यो, विणसता उवेख्यो रे। ॥७॥
इत्यादिक विपरीत पणाथी, समकित खंड्यु जेह।
आभव. मिच्छा. प्राणी, चारित्र ल्यो चित्त आणी ॥८॥
पांच समिति त्रण गुप्ति विराधी, आठे प्रवचन माय।
साधु तणे धर्मे प्रमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥९॥
श्रावकने धर्मे सामायिक, पोसहमां मन वाली।
जे जयणा पूर्वक ए आठे, प्रवचन माय न पाली रे ॥१०॥
इत्यादिक विपरीत पणाथी, चारित्र डोल्यु जेह आभव मि. ।११।
बार भेदे तप नवि कीधो, छते योगे निज शक्ते।
धर्ममन वच काया वीरज, नवि फोरवीउ भगते रे ॥१२॥
तप वीरज आचार एणी परे, विविध विराध्यां जेह ॥१३॥
वलीय विशेषे चारित्र केरा, अतिचार आलोइये।
वीर जिनेश्वर वयण सुणीने, पाप मैल मनि धोइये रे ।१४।

*

## ढाल ॥ २ ॥

पामी सुगुरु पसाय (देशी)

पृथ्वी पाणी तेउ वायु वनस्पति ।
एपांचे थावर कह्यां ए ॥१॥
करी करसण आरंभ, क्षेत्र जे खेडीया ।
कुवा तलाव खणावीया ए ॥२॥
घर आरंभ अनेक, टांका भोयरां,
मेडी माल चणावीआ ए ॥३॥
लींपण गुंपण काज, एणी परे परे परे ।
पृथ्वीकाय विराधीया ए ॥४॥
धोवण नाहण पाणी झीलण अपकाया ,
छोति धोति करि दुहव्याए ॥५॥
माठीगर कुंभार, लोह सोवनगरा ।
भाड भुंजा लिहालागरा ए ॥६॥
तापण शेकण काज, वस्त्र निखारण ।
रंगण रांधण रसवती ए ॥७॥
एणी परे कर्मादान, परे परे केलवी ।
तेउ वाउ विराधियाए ॥८॥

वाडी वन आराम वावि वनस्पति ।
पान फूल फल चूटीयां ए ॥६॥
पुख पापडी शाक, शेक्या सूकव्या ।
छेद्या छूद्या आथीया ए ॥१०॥
अलशीने एरंड घाणी घालीने ।
घणा तिलादिक पीलिया ए ॥११॥
घाली कोलु माहे, पीली शेलडी ।
कदमूल फल वेचिया ए ॥१२॥
एम एकेन्द्रीय जीव हण्या हणाविया ।
हणता जे अनुमोदिया ए ॥१३॥
आभव परभव जेह, वली रे भवोभवे ।
ते मुज मिच्छामि दुक्कड ए ॥१४॥
कृमी करमीया कीडा, गाडर गडोला ।
इयल पूरा अलसिया ए ॥१५॥
वाला जलो चुडेल विचलित रस तणा ।
वली अथाणा प्रमुखना ए ॥१६॥
एम वेइंद्रिय जीव, जे मे दुहव्या ।
ते मुज मिच्छामि दुक्कट ए ॥१७॥
उदेही जू लीख, माकट मकोडा ।
चाचड कीडी कुंथुआ ए ॥१८॥

गधरिआं घीमेल कान खजुरडा ।
गीगोंडा धनेरीयां ए ॥१९॥
एम तेइंद्रिय जीव जे में दूहव्या ।
ते मुज मिच्छामि दुक्कडं ए ॥२०॥
मांखी मछर डांस, मसा पतगीया ।
कंसारी कोलियावडा ए ॥२१॥
ढांकण विछु तीड, भमरा भमरीया ।
कोतां वग खडमांकडी ए ॥२२॥
एम चौरिंद्रिय जीव जेमे दुहव्या ।
ते मुज मिच्छामि दुक्कडं ए ॥२३॥
जलमां नाखी जाल, जलचर दुहव्या ।
वनमां मृग संतापिया ए ॥२४॥
पीड्या पंखी जीव, पाडी पासमां ।
पोपट घाल्या पांजरे ए ॥२५॥
एम पंचेन्द्रिय जीव जेमे दुहव्या ।
ते मुज मिच्छामि दुक्कडं ए ॥२६॥



ढाल ॥ ३ ॥

वाणी वाणी हितकारीजी (देशी)

क्रोध लोभ भय हास्यथी, बोल्या वचन असत्य ।
कूड करी धन पारकाजी, लीधां जेह अदत्तरे ।
जिनजी मिच्छामि दुक्कड आज, तुज साखे महाराज रे ।
जिनजी देइ सारु काज रे जिनजी ॥१॥
देव मनुज तिर्यंचनाजी मैथुन सेव्या जेह ।
विषयारस लपटपणेजी, घणु विडंब्यो देहरे जिनजी ।२।
परिग्रहनी ममता करीजी, भव भव मेली आथ ।
जे जिहानी ते तिहा रही जी, कोइ न आवे साथरे जि०।३।
रयणी भोजन जे कर्याजी, कीधा भक्ष अभक्ष ।
रसना रसनी लालचेजी, पाप कर्या प्रत्यक्ष रे ॥४॥
व्रत लेइ विसारियाजी, वली भाग्या पच्चखाण ।
कपट हेतु किरिया करीजी, कीधा आप वखाण रे ॥५॥
इण ढाल आठे दुहेजी, आलोया अतिचार ।
शिव गति आराधन तणोजी, ए पहेलो अधिकार रे ॥६॥

★

## ढाल ॥ ४ ॥

साहेलडीनी (देशी)

पंच महाव्रत आदरो साहेलडी रे, अथवा ल्यो व्रत बारतो ।
यथाशक्ति व्रत आदरो साहेलडी ए, पालो निरतिचार तो ।१।
व्रत लीधा संभारीए सा. हैडे धरिय विचारतो ।
शिवगति आराधन तणो सा० ए बीजो अधिकारतो ।२।
जीव सर्व खमावीये, सा. योनि चोराशी लाख तो ।
मन शुद्धे करी खामणां, सा. कोई शुं रोश न राखतो ॥३॥
सर्वे मित्र करी चिंतवो, सा. कोइ न जाणो शत्रु तो ।
राग-द्वेष एम परिहरो सा. कीजे जन्म पवित्र तो ॥४॥
साहमी संघ खमाविए, सा. जे उपनी अप्रीतितो ।
सज्जन कुटुंब करी खामणां सा. ए जिनशासननी रीततो ।५।
खमिए ने खमावीए सा. एहज धर्मनो सारतो ।
शिव गति आराधन तणो सा. ए त्रीजो अधिकारतो ॥६॥
मृषावाद हिंसा चोरी, सा. धनमूर्छा मैथुन तो ।
क्रोध मान माया तृष्णा, सा. प्रेम द्वेष पैशुन्यतो ॥७॥
निंदा कलह न कीजिए सा. कूडां न दीजे आलतो ।
रति अरति मिथ्या तजो सा. माया मोह जंजाल तो ॥८॥

त्रिविध त्रिविध वोसराविये सा. पापस्थानक अढारतो ।
शिवगति आराधन तणो, सा. ए चोथो अधिकारतो ॥६॥

●

ढाल ॥ ५ ॥

हवे निसुणो इहा आवीया (देशी)

जनम जरा मरणे करीए, ए ससार असारतो ।
कर्यां कर्म सहु अनुभवे ए कोइ न राखणहारतो ।
शरण एक अरिहंत नु ए, शरण सिद्ध भगवत तो ।
शरण धर्म श्री जैननो ए साधु शरण गुणवंततो ॥२॥
अवर मोह सवि परिहरि ए चार शरण चित्त धारतो ।
शिवगति आराधन तणोए ए पाचमो अधिकारतो ॥३॥
आभव परभव जे कर्याए, पाप कर्म केइ लाखतो ।
आतम साखे ते निंदीए ए, पडिक्कमिए गुरु साखतो ।४।
मिथ्या मति वर्तावियाए, जे भाख्या उत्सूत्र तो ।
कुमति कदाग्रह ने वशे ए, जे उथाप्यां सूत्र तो ॥५॥
घड्यां घडाव्या जे घणाए, घरटी हल हथीयारतो ।
भव भव मेली मूकियाए, करता जीव सहार तो ॥६॥
पाप करीने पोषियाए, जनम जनम परिवारतो ।
जनमान्तर पहोंत्यां पछीए, कोइए न कीधी सारतो ॥७॥

आभव परभव जे कर्यां ए, एम अधिकरण अनेक तो ।
त्रिविधे त्रिविधे वोसराविए ए, आणी हृदय विवेकतो ।८।
दुष्कृत निंदा एम करीए, पाप करो परिहार तो ।
शिवगति आराधन तणोए ए छट्ठो अधिकार तो ॥९॥



ढाल ॥ ६ ॥

आदि तुं जोइने आपणी (देशी

धन धन ते दिन माहरो, जीहां कीधो धर्म ।
दान शियल तप आदरी, टाल्यां दुष्कर्म ॥१॥
शेत्रुँजादिक तीर्थनी जे कीधी जात्र ।
जुगते जिनवर पूजिया, वली पोष्यां पात्र ॥२॥
पुस्तक ज्ञान लखावियां, जिनघर जिन चैत्य ।
संघ चतुर्विध साचव्या, ए साते क्षेत्र ॥३॥
पडिक्कमणां सुपरे कर्यां, अनुकंपा दान ।
साधु सूरि उवज्झायने, दीधां बहु मान ॥४॥
धर्मकाज अनुमोदिए, एम वारोवार ।
शिवगति आराधन तणो, सातमो अधिकार ॥५॥
भाव भलो मन आणीये, चित्त आणी ठाम ।
समता भावे भावीए, ए, आतमराम ॥६॥

सुख दुख कारण जीवने, कोइ अवर न होय।
कर्म आप जे आचर्या, भोगवियें सोय ॥७॥
समता विण जे अनुसरे प्राणी पुन्य काम।
छार उपर ते लीपणु झांखर चित्राम ॥८॥
भाव भली परे भाविए, ए धर्मनो सार।
शिवगति आराधन तणो, ए आठमो अधिकार ॥९॥



ढाल ॥ ७ ॥

रैवतगिरि उपरे (देशी)

हवे अवसर जाणी, करीए संलेखणा सार।
अणसण आदरीए, पच्चखी चारे आहार ॥
लुलुता सवि मूकी, छाडी ममता अंग।
ए आतम खेले, समता ज्ञान तरंग ॥१॥
गति चारे कीधा आहार, अनंत निशंक।
पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लालचियो रंक ॥
दुलहो ए वली वली अणसणनो परिणाम।
एहथी पामीजे शिवपद सुरपद ठाम ॥२॥
धन्य धन्ना शालिभद्र, खंधो मेघकुमार।
अणसण आराधी पाम्या भवनो पार ॥

शिवमंदिरे जाशे करी एक अवतार ।
आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥३॥
दशमे अधिकारे, महामंत्र नवकार ।
मनथी नवि मूको, शिव सुख फल सहकार ॥
ए जपतां जाये, दुर्गति दोष विकार ।
सुपरे ए समरो चौद पूरवनो सार ॥४॥
जनमांतर जातां जे पामे नवकार ।
तो पातक ग पामे सुर अवतार ।
ए नवपद सरिखो, मंत्र न कोइ सार ।
इह भवने परभवे, सुख संपत्ति दातार ॥५॥
जुवो भील भीलडी, राजा राणी थाय ।
नवपद महिमाथी, राजसिंह महाराय ॥
राणी रत्नवती बेहु, पाम्यां छे सुरभोग ।
एक भव पछी लेशे, शिववधु संजोग ॥६॥
श्रीमती ने ए वली मंत्र फल्यो ततकाल ।
फणीधर फीटीने, प्रगट थइ फूलमाल ॥
शिवकुमरे जोगी, सोवन पुरिषो कीध ।
एम एणे मंत्रे, काज घणानां सिद्ध ॥७॥

ए दश अधिकारे, वीर जिनेश्वर भाख्यो ।
आराधन केरो विधि जेणे चित्तमा राख्यो ॥
तेणे पाप पखाली, भव भय दूरे नाख्यो ।
जिन विनय करता सुमति अमृतरस चाख्यो ॥८॥

★

ढाल ॥ ८ ॥

नमो भवि भावशु (देशी)

सिद्धारथ राय कुल तिलोए, त्रिशला मात मल्हारतो ।
अवनितले तमे अवतर्याए, करवा अम उपकार ॥१॥
जयो जिन वीरजी ए
मे अपराध कर्या घणाए, कहता न लहुं पारतो ।
तुम चरणे आव्या भणीए जो तारे तो तार ॥ जयो. ॥२॥
आश करीने आवियोए, तुम चरणे महाराज तो ।
आव्याने उवेखशोए, तो केम रहेशे लाज ॥ जयो. ॥३॥
करम अलुजण आकराए, जनम मरण जंजाल तो ।
हु छुं एहथी उभग्यो ए, छोडावो देव दयाल । जयो. ॥४॥
आज मनोरथ मुज फल्याए, नाठा दुःख दंदोल तो ।
तुट्यो जिन चोविशमोए, प्रगट्या पुन्य कल्लोल ॥५॥
भव भव विनय तुमारडोए, भाव भक्ति तुम पायतो ।
देव दया करी दीजिए ए, बोधि बीज सुपसाय ॥ जयो ॥६॥

## ॥ कलश ॥

इम तरण तारण सुगति कारण, दुख निवारण जग जयो।
श्री वीर जिणवीर चरण थुणतां, अधिक मन ऊलट थयो ॥१॥
श्री विजयदेव सूरींद पटधर तीरथ जंगम एणी जगे।
तपगच्छ पति श्री विजयप्रभ सूरि, सूरि तेजे झगमगे ॥२॥
श्री हीर विजय सूरि शिष्य वाचक, कीर्ति विजय सुरगुरु समो।
तस शिष्य वाचक विनय विजये, थुण्यो जिन चोविशमो ।३।
सय सत्तर संवत्त ओगणत्रीशे, रही रांदेर चोमासए।
विजय दशमी विजय कारणे, कियो गुण अभ्यासए ॥४॥
नर भव आराधन, सिद्धि साधन, सुकृत लील विलासए।
निर्जरा हेते, स्तवन रचियुं, नामे पुण्य प्रकाशए ॥५॥



## ॥ पद्मावति ॥

हिव राणी पद्मावती, जीवरास खमावे।
जाणपणो जग दोहि लो, इण वेला आवे।
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं ॥१॥
अरिहंत नी साख जेमे जीव विराधिया, चोराशीलाख ।२।
सात लाख पृथ्वीतणा, साते अपकाय।
सात लाख तेऊकायना, साते वलि वाय ।३।

दस प्रत्येक वनस्पति, चवदे लाख साधारण ।
बिति चउरिंद्री जीवना, बे बे लाख विचारण ॥४॥
देवता तिर्यंच नारकी, चार चार लाख प्रकाशी ।
चवदे लाख मनुष्यना, ए लाख चोरासी ॥५॥
इण भव परभव सेविया, जे पाप अढार ।
त्रिविध त्रिविध कर वोसरू, दुरगति दातार ॥६॥
हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद ।
दोष अदत्त दानना, मैथुन उनमाद ॥७॥
परिग्रह मेल्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष ।
मान माया लोभ में कीया, वलि राग ने द्वेष ॥८॥
कलह करि जीव दूहव्या, दीधा कूडा कलंक ।
निंदा कीधी पारकी, रति अरति निस्संक ॥९॥
चाडी कीधी चोतरे, कीधो थापण मोसो ।
कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आण्यो भरोसो ॥१०॥
खाटकीने भव जे कीया, जीवना जव घात ।
चिडीमार भव चिडकला, मार्या दिनने रात ॥११॥
माछीने भव माछला, झाल्या जलवास ।
धीवर भील कोली भवे, मृग मार्या पास ॥१२॥

काजी मुल्लाने भवे, पढी मंत्र कठोर ।
जीव अनेक जबे कीया, कीधा पाप अघोर ॥१३॥

कोटवाल भव में कीया, आकरा कर दंड ।
बंदीवान मराविया, कोरडा छडी दंड ॥१४॥

परमाधामीने भवे, दीधा नारकी दुक्ख ।
छेदन भेदन वेदना ताडना अति तिक्ख ॥१५॥

कुंभार ने भव में कीया निवाह पचाया ।
तेली भव तिल पिलिया, पापे पेट भराया ॥१६॥

हालीने भव हल खेडिया, फाड्या पृथवी पेट ।
सूड निदान कीया घणा, दीधा बलद चपेट ॥१७॥

मालीने भव रोपिया, नाना विध वृत्त ।
मूल पत्र फल फूलनां, लागां पाप ते लक्ष ॥१८॥

अधोवाईयाने भवे, भर्या अधिका भार ।
पोठी पूठे कीडा पड्या, दया नाणी लगार ॥१९॥

छीपाने भवे छेतरया, कीधां रंगण पास ।
अग्नि आरंभ कीधा घणा, धातुवाद अभ्यास ॥२०॥

शूरपणे रण जूझता, मार्यां माणस वृंद ।
मदिरा मांस माखण भख्यां खाधां मूल ने कंद ।२१।

खाण खणावी धातुनी, पाणी उलेच्या ।
आरम कीधा अति घणा, पोते पापज संच्यां ॥२२॥
कर्म अगारा कीया वली, दरमें दव दीधा ।
सम खाधा वीतरागना कूडा कोसज कीधा ॥२३॥
बिल्ली भवे उदर लीया, गिरोली हत्यारी ।
मूढ गमार तणे भवे, मैं जू लीख मारी ॥२४॥
भाड भुजा तणे भवे, एकेंद्रिय जीव ।
जवारी चणा गहूं शेकिया, पाडता रीव ॥२५॥
खाडण पीसण गारना आरम अनेक ।
राघण ईधण अग्निना कीधा पाप उद्रेक ॥२६॥
विकथा चार कीधी वली, सेव्या पांच प्रमाद ।
इष्ट वियोग पमाडिया रुदन विषवाद ॥२७॥
साधु अने श्रावक तणा, व्रत लहीने भाग्या ।
मूल अने उत्तर तणा, मुझ दूषण लागा ॥२८॥
साप विच्छु सिंह चीतरा, सिकराने समली ।
हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सबली ॥२९॥
सूवावडे दूषण घणा, वलि गरभ गलाया ।
जीवाणी ढोल्या घणा, शील व्रत भजाया ॥३०॥

भव अनंत भमतां थकां, कीया कुटुंब संबंध ।
त्रिविध त्रिविध करि वोसरूं तिणसुं प्रतिबंध ।३१।
इण भव परभव इणिपरे, कीधा पाप अखत्र ।
त्रिविध करि वोसरूं, करूं जनम पवित्र ॥३२॥
राग वेराडी जे सुणे, ए तीजी ढाल ।
समय सुंदर कहे पापथी, छुटे तत्काल ॥३३॥



## अथ पाप आलोयण स्तवन

वेकर जोडी विनवुंजी, सुण स्वामि सुविदित ।
कूड कपट मूकी करीजी बात कहुं आप वीत ॥१॥
कृपानाथ मुझ विनति अवधार ।
तुं समरथ त्रिभुवन धणीजी, मुझनें दुत्तर तार ॥२॥
भव सायर भमतां थकांजी, दीठा दुख अनंत ।
भाग्य संयोगे भेटियोजी, भय भंजन भगवंत ॥३॥
जे दुख भांजे आपणोजी–तेहने कहिये दुख ।
परदुख भंजण तूं सुण्योजी, सेवकने द्यो सुख ॥४॥
आलोयण लीधां पखेजी, जीव रुले संसार ।
रूपी लच्मणा महासतीजी, एह सुण्यो अधिकार ॥५॥

दूषम काले दोहिलोजी, सूधो गुरु संयोग ।
परमारथ प्रीछे नहिंजी, गडर प्रवाही लोक ॥६॥
तिण तुम आगल आपणाजी, पाप आलोऊ आज ।
माय बाप आगल बोलताजी, बालक केही लाज ॥७॥
जिन धर्म जिन धर्म सहू कहेजी, थापे आपणी बात ।
समाचार जूई जूईजी, संसय पड्यो मिथ्यात ॥८॥
जाण अजाण पणें करीजी, बोल्या उत्सूत्र बोल ।
रतने काग उडावतांजी, हार्‌यो जनम निटोल ॥९॥
भगवत भाष्यो ते किहाजी, किहा मुक्त करणी एह ।
गज पाखर खर किम सहेजी, सबल विमासण तेह ॥१०॥
आप प्ररूप्यो आकरोजी, जाणे लोक महंत ।
पिण न करू परमादीयोजी, मासाहस दृष्टान्त ॥११॥
काल अनन्तें मे लह्याजी, तीन रतन श्रीकार ।
पिण परमादे पाडियाजी, किहा जई करूं पुकार ॥१२॥
जाणु उत्कृष्टी करूजी, उद्यत करुरे विहार ।
धीरज जीव धरे नहींजी, पोते बहु संसार ॥१३॥
सहज पड्यो मुक्त आकरोजी, न गमे रूडी वात ।
पर निंदा करता थकाजी जावे दिनने रात ॥१४॥

किरिया करतां दोहिलोजी, आलस आणे जीव ।
धर्म पखे धंधे पड़्योजी, नरके करसे रीव ॥१५॥
अणहुंता गुण को कहेजी, तो हरखु निशदिस ।
कोई हित शीक्षा भलि कहेजी, तो मन आणु रीश ।१६।
वाद भणी विद्या भणीजी, पर रंजन उपदेश ।
मन संवेग धर्यो नहींजी, किम संसार तरेश ॥१७॥
सूत्र सिद्धान्त वखाणतांजी, सुणतां करम विपाक ।
खिण एक मनमांहि ऊपजेजी, मुझ मरकट वैराग ॥१८॥
त्रिविध त्रिविध करी ऊचरुंजी, भगवंत तुम्ह हजूर ।
वार वार भांजू वलीजी, छुटक वारो दूर ॥१९॥
आप काज सुख राचतांजी, कीधा आरंभ कोड़ ।
जयणा न करी जीवनीजी, देव दया पर छोड़ ॥२०॥
वचन दोष व्यापक कह्याजी, दाख्या अनरथ दंड ।
कूड कपट बहु केलवीजी, व्रत लीधा शत खंड ॥२१॥
अण दीधो लीजे तिणोजी, तोही अदत्तादान ।
ते दुष्टण लागा घणांजी, गिणतां नावे ज्ञान ॥२२॥
चंचल जीव रहे नहींजी, राचे रमणी रूप ।
काम विटंबण सी कहुंजी, तेतुं जाणे सरूप ॥२३॥

माया ममता में पड्योजी, कीधो अधिको लोभ।
परिग्रह मेल्यो कारमोजी, न चढी सयम शोभ ॥२४॥
लागा मुझने लालचेजी रात्री भोजन दोप।
में मन मूक्यो माहरोजी, न धर्यो धरम सतोप ॥२५॥
इण भव परभव दूहव्याजी जीव चौराशी लाख।
ते मुझ मिच्छामि दुक्कडजी, भगवत तोरी साख ॥२६॥
करमादान पनरे कह्याजी प्रकट अढारे पाप।
जे मैं कीधा ते सहुजी, वगरा २ भाई वाप ॥२७॥
मुझ आधार छे एटलोजी, सरदहिणा छे शुद्ध।
जिन धर्म मीठो जगतमेंजी, जिम साकरने दूध ॥२८॥
ऋषभदेव तुं राजियोजी शत्रुंजय सिणगार।
पाप आलोया आपणाजी, कर प्रभु मोरी सार ॥२९॥
मर्म एह जिन धर्मनोजी, पाप आलोया जाय।
मनसु मिच्छामि दुक्कडजी, देता दुरित पुलाय ॥३०॥
तुं गति तु मति तु धणीजी, तु साहिब तुं देव।
आण धरूं शिर ताहरीजी, भव भव ताहरी सेव ॥३१॥

*

॥ कलश ॥

इम चडीय शेत्रुँज चरण भेट्या, नाभिनंदन जिण तणा।
कर जौडि आदि जिणंद आगे, पाप आलोया आपणा॥
श्री पूज्य जिनचंद सूरि सदगुरु प्रथम शिष्य सुजस घणों।
गणि सकलचंद सुसीस वाचक, समय सुंदर गणि भणे।३२।



## आलोयण का स्तवन

ए धन शासन वीर जिनवर तणो।
जास प्रसाद उपगार थाये घणो।
सूत्र सिद्धान्त गुरु मुख थकी सांभली।
लहिये समकित अने विरति लहिये वली॥१॥
धर्मनो ध्यान धर, तप जप खप करे।
जिण थकी जीव संसार सागर तिरे।
दोष लागा जिके, गुरुमुख आलोइये।
जीव निर्मल हुवे, वस्त्र जिम धोइए॥२॥
दोष लागे तिके चार प्रकारना।
धूर थकी नामने अर्थ ते धारना।
किण ही कारण वशे पाप जे कीजिये।
प्रथम ते नाम संकल्प कहीजीये॥३॥

कीजिये जेह कंदर्प प्रमुखकरी ।
दोष ते बीय प्रमाद सन्ना धरी ॥
क्रूरता गर्वता होय हिंसा जिहां ।
दर्प इण नाम करी दोष तीजो तिहां ॥४॥
निरणमता जीव जीवने नहीं गिनर करे जिको ।
चोथो आकुट्टिया दोष उपजे तिको ।
अनुक्रमे चार ए अधिक इक एकथी ।
दोष धर प्रायश्चित लहे विवेकथी ॥५॥



ढाल ॥ २ ॥

पाटी पोथी स्वली नवकार वाली जोय ।
ज्ञानना उपगरण तणी आशातना किधी होय ॥
जघन्यथी पुरीमढ एकासणो आंबिल उपवास ।
अनुक्रमे एह आलोयण सुगुरु बताई तास ॥१॥
ए जो मंडित थाय अथवा किहांई गमाय ।
तो वली नवा कराया दोष सहु मिट जाय ॥
आपणा अंग पडिलेहिया पुरिमुट नो तपधार ।
गिरवा एकासणोने गमना चोथ विचार ॥२॥

दर्शनना अति चार तिहां पुरिमुढ जघन्य ।
एकासण आंबिल अठम चिहुं भेदे मन्न ॥
आसातना गुरुदेवनी साहमीसु अप्रीती ।
जघन्य एकासणनी आलोयण चढती रीत ॥३॥
अनंतकाय आरंभ विनास्या चौथ प्रसिद्ध ।
बिति चौरिन्द्री नसाया, एकासणथी वृद्ध ॥
बहु बीती चौरिंद्री हण्या, बीती चौ उपवास ।
संकल्पादि चिहुंविध, दुगुणा दुगुण प्रकाश ॥४॥
ऊदेही कुलिया बडा कीडी नगरा भंग ।
वहुत जलोया मुक्या दश उपवास प्रसंग ॥
वमन विरेचन क्रीमी पातन आंबिल इक एक ।
जीवाणी ढोलतां दोय उपवास विवेक ॥५॥
संकल्पादिक एक पंचेंद्रिय उपद्रव होई ।
दोय तीन आठ दशै उपवासै आलोयण जोई ॥
बहु पंचेंद्रिय उपद्रव छठ अठमे दश वीश ।
चिहुं प्रकारे चढती आलोयण सुणले सीस ॥६॥
पंचेंद्रियने लकड़ी प्रमुखै कीध प्रहार ।
एकाशण आंबिल उपवासने छठ विचार ॥
साधु समक्षे लोक समक्षे राज समक्ष ।
कूडा आल दिया होई चौथ अरु प्रत्यक्ष ॥७॥

उपवास दश दडाया तेम मराया वीश।
एक लख अमी सहस नवकार गुणो तजी रीस ॥
पच्च चौमास वर्ष लग एक त्रण दश उपवास।
अधिको क्रोध करे तो आलोयण नहीं तास ॥८॥
सुवानडना दोप किया गुरु उपर रोप।
जीव विराधन कीधा बहु असतीना पोप।
करीये दुवालस नार हजार गुणो नवकार ॥
मिच्छामि दुक्कडं देई आलोनो वारोवार ॥६॥

●

ढाल ॥ ३ ॥

विण कीधा पच्चखाण विण दीधा,
वांदणा पडिकमणा विधी पातरे ए।
अणो भाणे असज्झाय तिहा अविधे भणया,
एक एक आंबिल आचरे ए ॥१॥
गंठसी एकासन निवि आंबिल,
भागे आलोयण इमे ए।
एक पाच पट आठ नवकार वालिय,
गुण नवकार अनुक्रमे ए ॥२॥

उपवास भंग उपवास, आंबिल उपरां,
अधिको दंड वखाणिये ए।
पांचम आठम आदि भंग कियां वली,
फिर ग्रही पातक हणीयै ॥३॥
उखल मुशल आग चुलो घरटीयै,
दीधै अठम तप करीयै ए।
मांगी सूई दीध कतरणी छुरी,
आंबिल चढतां आदरे ए ॥४॥
जीव करावै युद्ध, रात्री भोजन,
जल तीरणो खेलन जूओ ए।
पापतणा उपदेश, परद्रोह चिंतव्यां,
उपवास एक एक जुजुओ ए ॥५॥
पनरै कर्मादान, नियमकरी भंग,
मद्य मांस माखण भख्या ए।
आलोयण उपवास संकल्पादिक,
चिहुं भेदे चढतां लिख्याए ॥६॥
बोल्या मृषावाद अदत्तादान,
जघन्य एकासण जाणीयै ए।
अति उत्कृष्टि एण, जाण आलोयण,
उपवास दश दश आणीयै ए ॥७॥

ढाल ॥ ४ ॥

चौथे व्रत भागै अतिचार जघन्य छठ आलोयण धार ।
मध्यम दश-उपवास सुविचार उत्कृष्टा गुण लख नवकार ।१।
परिग्रह विरमण दोष प्रसंग तिन गुण व्रत माही भंग चार ।
शिक्षा व्रतने अतिचारै आंबिल त्रण प्रत्येके धारै ।।२।।
शील तणी नववाड कहाय–तिहां जो लागो दोष जणाय ।
स्त्री ने स्पर्श हुवा अविवेके, एक आंबिल कीजे प्रत्येके ।।३।।
साधु अने श्रावक पौषध, एकेंद्रि चित्त संघट कीध ।
निसर मोलै सचित्त जल पीध, दंड एकासण आंबिल दीध ।४।
विन धोया विन लुया पात्रै एकासण तिम पुरसुढ मात्रै ।
गई मुहपत्ति आंबिल सारो तिम अठम ओघो अवधारो ।।५।।
चार आगार छ छिंडी राखै व्रत पचखाण करे पट साखे ।
दोषे मिच्छामि दुक्कडं दाखै आलोयण ले तो अभिलाषे ।।६।।
आलोयणनो अति विस्तार पुरो कहेता नावे पार ।
तो पण संक्षेपै तंतसार निर्मल मन करता विस्तार ।।७।।
धन श्री वीर जिनेश्वर स्वामी जसु आगम वचने विधि पामी ।
जीत कल्पटाण अ गै आदि वली परंपर गुरु सुप्रसाद ।।८।।

✱

॥ कलश ॥

इम जेह धर्मी चित्त विरमी पाप सर्व आलोइने ।
एकान्त पुछै गुरु बतावै, शक्ति वय तसु जोइने ॥
विधि एह करसी तेह तरसी धर्मवन्त तणे धुरै ।
एह स्तवनं धर्मसिंह कीधो चौपने फलवर्द्धि पुरै ॥६॥



## ॥ गर्भोत्पत्ती सजाय ॥

उतपति जोय जीव आपणी, मन मांहि विमास ।
गर्भावासे जीवडो, वसीयो नवमास ॥१॥
नारतणी नाभीतले, जिनवचने जोय ।
फुल तणी जिम नालिका, तिम नाडी छे दोय ॥२॥
तसुतल जोनि कही जिये, वर फूल समान ।
आंबतणी मांजर जिसो, तिहां मांस प्रधान ॥३॥
रुधिर श्रवे तिहां मांसथी, रितुकाल सदीव ।
रुधिर शुक्र जोगे करी, तिहां उपजे जीव ॥४॥
जे अपावन पवने करी, वासित दुर्गंध ।
तिण थानक तुँ ऊपनो हिव हुवो अंध मंध ॥५॥

नाडी वासतणी घणु, भरीये रु थाल ।
तातीलोह सिलाक ते, जाले तत्काल ॥६॥
तिम महिलानी योनी में, छे नव लाख जीव ।
पुरुष प्रसगे ते सहु, मरि जाय सदीव ॥७॥
ऊपजे नरनारी मिल्या, पंचेंद्रि जेह ।
तेह तणी मख्या नहीं, तजो कारज एह ॥८॥
नव लाख जीव तिहां, उत्कृष्टि वार ।
जीव जघन्य पणे टिके, एक दोय त्रण चार ॥६॥
जीव जघन्य तिहा रहे, महुरत परिमाण ।
बार वरसनी स्थिति तिहा, उत्कृष्टि जाण ॥१०॥
तिहा गर्भे कोई जीवडो, जपे जगदीस ।
फिर नर आवतो रहे, सवत्सर चौवीश ॥११॥
महिला वर्ष पिचानने, कहीये निर बीज ।
पिचहत्तर वरसां पछे, थाय पुरुष अबीज ॥१२॥
डीमणी कुखे नर वसे, तिहा वामे नारी ।
बीचे नपुंसक जाणीए जिन वचन विचारी ॥१३॥
हिव सामान्य पणे इहा, आयो गर्भावास ।
सात दिन उपरी रहे, नर गत नव मास ॥१४॥

आठ वरस तिर्यंच रहै, उत्कृष्टे काल ।
गर्भावासे भोगव्यां, इम बहु जंजाल ॥१५॥
कारमण काये करी लियो, पहिलो आहार ।
शुक्र अने शोणित तणो, नहीं भूठ लगार ॥१६॥
परजाप्ति पूरी नहीं तिहां विसवा वीश ।
तिण आहारे तुं थयो, उदारक मीस ॥१७॥
पवन अछेरे उदरे, तिको उपजावे अंग ।
अगनी करे थिर तेहने, जल सरस सुरंग ॥१८॥
कठिन पणे पृथवी रचे, अवगाह आकाश ।
पांच भूत शरीर में, इम करे प्रकाश ॥१९॥
बारे महुरत पीछे, विलसे नर नारी ।
गर्भ तणी उतपती तिहां, नहीं अवर प्रकाश ॥२०॥
कलल हुवे दिन सात में, अरबुद दिन सात ।
अरबुदथी पेसी बधे, घन मांस कहात ॥२१॥
मांस तणी बोटी हुवे, अडतालीस टंक ।
प्रथम मास जिनवर कहे, मन धरो निसंक ॥२२॥
सुथीर मांस बीजे हुवे, हिवे तीजे मास ।
कर्म तणे वसे उपजे माता मन आस ॥२३॥

चोथे मासे मातना, परिणमे बहु अंग ।
हाथ अने पग पाचमें, तिम सुतको मग ॥२४॥
पित्त रुधिर छठे पडे, सात में इण सच ।
नव धमणी नश सात सै, पेसी सय पंच ॥२५॥
रोमराय पिण सात मे, साढी तीन क्रोड ।
उपजे उणे केटले, इम आगम जोय ॥२६॥
आठ में मासे नीपनो, इम सकल शरीर ।
ऊंचे शिर वेदन सहे जपे जिन वीर ॥२७॥
शोणित शुक्र श्लेपमा, लघु ने वडी नीत ।
वात पित्त कफ गर्भथी थाये नर नीत ॥२८॥
मात तणी दूंटी लगे, बालकनो नाल ।
रस आहार करे तिहा आवे ततकाल ॥२९॥
जननी ले आहारते, जाये नाटो नाड ।
रोम इन्द्री नख चख वधे, तिम मींजीने हाड ॥३०॥
सघहु अंगे उलसे, सरागे आहार ।
कवल आहार करे नहीं, गर्भे सुविचार ॥३१॥
मास बीजे कोई जीवने थाये ज्ञान विभग ।
अथवा अवधि रही जीवे, तिण ज्ञान प्रसंग ॥३२॥

कटक करे वैक्रीय पणे, झूंझी नरके जाय ।
को जिन वचन सुणी करी मरी सुर पिण थाय ।३३।
ऊंधे मुख गोडा हिये, सहितो बहु पीड ।
दृष्टि आगल बेहुं हाथ सुं, रहे मुठी भीड ।।३४।।
नर विना वस्त्र जलादिके, उपजे आधान ।
अथवा बेहु नारी मिल्यां कह्यु गर्भ विधान ।।३५।।
कोई उत्तम चिंतवे, देखी दुखवास ।
पुण्य करी तिम निकलूं, नाऊं गर्भावास ।।३६।।
ऊंठ कोडी चांपे सुई, कोई समकाल ।
तिणथी गर्भे अठ गुणी सहे वेदना बाल ।।३७।।
माता दुखी दुखीयो, सुखणी सुख थाय ।
माता सुती ते सुवे, परवस दिन जाय ।।३८।।
गर्भ थकी दुख लख गुणो, जनमें जिण वार ।
जन्म थयां दुख विसरे, धिग मोह विकार ।।३९।।
उपज्यां अशुची पणे, जिहां मल मूत्र कलेश ।
पींड अशुची करि पूरियो किहां शुची लवलेश ।।४०।।
तुरत रुदन करतो थको, जनमें जिणवार ।
माता पयोधर मुख ठवे, पीये दूध तिवार ।।४१।।

दिन दिन दीसे दीपतो, करे रग अपार।
लाड कोड मात पिता, पूरे सुविचार ॥४२॥
सोत इग्यारे नारीनें, नव नरनें जाण।
रात दिवस वहेता रहै, चेतो चतुर सुजाण ॥४३॥
सात धातु साते त्वचा, छे सात से नाड।
नवसे नाडी पिड मे, तिम तीनसे हाड ॥४४॥
सधी एकसो साठ छे, सत्तोतर सो मरम।
तीन दोष पेसी पाच से, ढाकी छे चरम ॥४५॥
रुधिर सेर दश देह मे, पेसाव सरिस।
सेर पाच चरवी तिहा, दोय सेर पुरीष ॥४६॥
पित्त टाक चोसठ अछे, वीरज बत्तीस।
टाक बतीस श्लेष्मा, जाणे जगदीश ॥४७॥
इण परमाण थकी यदा, ओछो अधिको थाय।
व्यापे रोग शरीर मे, नवी चाले काय ॥४८॥
पहुतो पहेले दाशके, इम वधियो अग।
खान पान भूषण भला, करे नव नव अग ॥४९॥
हिव बीजे दशके मणयो, विद्या विविध प्रकार।
तीजे दशके तेहने, जाग्यो काम विकार ॥५०॥

भोग संजोग तजी सहु थया जे अणगार ।
धन धन सु मात पिता धन धन अवतार ॥६९॥
सुरतरु सुरमणि सारिखो सेवो जिन धर्म ।
जिणथी सुख संपत्ति वधे कीजे तेहज कर्म ॥७०॥
तंदुलवेयाली ए अछे, एहनो अधिकार ।
तिणथी उद्धरीने कह्यो, नहीं झूठ लगार ॥७१॥



॥ कलश ॥

इह जैन धर्म विचार सांभली, लिये संयमभार ए ।
सिंहनी परे सदा पाले, नेम निरतिचार ए ॥
संसारना सुख सकल भोगवी ते लहे भवपार ए ।
श्री जिन हर्ष सुशिष्य रंगे इम कहे श्रीसार ए ॥७२॥



## रिषभदेव जी का बारहमासा

॥ आषाढ ॥

हे जी मरुदेवाजी, सोच करत हैं मन में ।
मेरा रिषभ गया क्यों बन में ॥

प्रथम महीनाजी लगा आसाढ चौमासा ।
इन्दर बरसन की आसा ॥
मरुदेवीजी मन मे भई उदासा ।
प्रभु ऋषभ गये बन वासा ॥

॥ दोहा ॥

ऋषभ प्रभु बन को गये, जगत सुधारन काज ।
भरतादिक सो पुत्र को बाट दिया सब राज ॥
पुत्र तुम सबहीजी, मगन होय रहे बन में ॥१॥

॥ सावन ॥

सावन महीनाजी रिमझिम मेहला बरसे,
मेरा पुत्र बिना जी तरसे ।
भरतादिक सो पुत्रनके हरसे,
मेरा नन्द निकला गया बरसे ॥

॥ दोहा ॥

नगर अयोध्या यूँ झुरे, कहाँ गये महाराज ।
देत ओलभा भरतको, मेरा पुत्र मिलावो आज ॥
अजी तो मेरे सुत बिना जी, प्राण निकलसी छिनमें ।
मेरा ऋषभ गया क्यों बन मे ॥२॥

जिण थानक तु उपन्यो, तिणमें मन जाय ।
चोथे दशके धन तणो, करे कोडी उपाय ॥५१॥
पहुतो दशके पांचमें, मनमें सस्नेह ।
वेटा वेटी पोतरा परणावे तेह ॥५२॥
छठे दशके प्राणीयो, वली परवश थाय ।
जरा आवी जोवन गयो, तृष्णा तोही न जाय ॥५३॥
आवे दशकें सातमें, हिव प्राणी तेह ।
वल भागो वुढो थयो, नारी न धरे स्नेह ॥५४॥
आठमे दसके डोसलो, खुलीया सहु दांत ।
कर कंपावे शिर धुणे, करे फोगट वात ॥५५॥
नवमे दशके प्राणीयो, तन सूकत जाय ।
साले वचन वहुवां तणां, दिन झूरतां जाय ॥५६॥
खाट पड्यो खु खु करे, सहु गाली देह ।
हाल हुकम हाले नहीं, दिया परजन छेह ॥५७॥
आंख गले बे पुड मिले, पडे मुंडे लाल ।
वेटा बेटीने बहु न करे संभाल ॥५८॥
दशमे दशके आवियो, तव पुरी आय ।
पुण्य पाप फल भोगवी, प्राणी परभव जाय ॥५९॥

दश दृष्टांते दोहिलो, लह्यो नरभवे सार ।
श्री जिन धर्म समाचरो, पामो जिम भव पार ॥६०॥
चरण धरे ते तप तपे, पाले निर्मल शील ।
ते संसार तरी करी, लहे अविचल लील ॥६१॥
कोडी रतन कोडी साटे, कांई गमावेरे गमार ।
धर्म पखे जिण जीवने, नहीं कोई आधार ॥६२॥
काया माया कारमी, कारमो परिवार ।
तन धन जोबन कारमो, साचो धर्म संभार ॥६३॥
चवदे राज प्रमाण ए, छे लोक महंत ।
जन्म मरण करी फरसीयो, तेवार अनंत ॥६४॥
आप स्वारथिया सहु, नहीं केहनो कोय ।
विण स्वारथ अण पुछता, सुत पिण वैरी होय ॥६५॥
जरा न आवे जहां, लग सबल शरीर ।
धर्म करो जीवता लगे, होई साहस धीर ॥६६॥
आरज देश लह्यो हवे, लाधो गुरु संयोग ।
अंग धरी आलस तजो, करो सुकृत संयोग ॥६७॥
श्री नमिराय तणी परे, चेतो चित्त मांहि ।
स्वारथना सहुको सगा, कोई किणरो नांही ॥६८॥

॥ भादों ॥

भादों महीना जी तज धन दौलत माया।
अजी तो वो गये अकेली काया।
भरतादिक तो मन में हरषाया राज ये बिना कमाया पाया।

॥ दोहा ॥

नित नव नाटक होत हैं, कर रहे भोग विलास।
सब माय ये ऋषभ की वो छोड गया वनवास॥
हे जी जगतारन जी दुखी हो गया तन में।
मेरा ऋषभ गया क्यों वन में॥३॥

॥ आसोज ॥

आसोज महीना जी सूरत की छवि लागी।
पुत्र तो होय गये वैरागी, धनके लोभीजी उससे भये निरागी।
कभी खबर न ले बड़ भागी॥

॥ दोहा ॥

भरत कहे सुन मातजी, मत कर वृथा विलाप।
तीन लोक तारन तरन आवेंगे प्रभु आप॥
इन्द्र पद सेवेंजी, नहीं रहें विघन में।
मेरा ऋषभ गया क्यों वन में॥४॥



॥ कार्तिक ॥

कार्तिक महीना जी कब वो ऋषभ घर आवे ।
मोहे सुरत आन बतावे, नहीं कागज भी मुझको पुत्र पठावे ।
मेरा जीव बहुत दुख पावे ॥

॥ दोहा ॥

झुरती निश दिन पुत्रको, रो रो खोई आंख ।
उड़कर मिलती ऋषभसे, जो देत विधाता पाख ॥
मोर पपैया जी मगन जो रहते घन में ।
मेरा ऋषभ गया क्यों बन मे ॥७॥

॥ मार्गसिर ॥

मार्गसिर महीना जी भरत बाहुबल भाई ।
आपस मे करे लड़ाई ।
भरत यूँ कहता जी मानो मेरी दुहाई ।
सब सेना चढ कर आई ॥

॥ दोहा ॥

बारा बरस लड़ते हुवे, इन्द्र रहे समझाय ।
चक्रवर्ति चिन्ता गहे, भये चन्द्र जगराय ॥
जीत कारण जी खड़े बाहुबल रन मे ।
मेरा ऋषभ गया क्यों बन मे ॥८॥

॥ पौस ॥

पूस का महीना जी पड़े ठंड का पाला ।
ऋतु आया कठिन सियाला ॥
कहां वह होगा ऋषभ जगत प्रतिपाला ।
मैं रटूं रिषभ की माला ।

॥ दोहा ॥

क्या कोई परबत की ओट में होगा मेरा नन्द ।
ठंड तापकी विपति से, सहे बहुत दुख वृन्द ।
भरत मेरे सुतका जी, नहीं फिकर तेरे मन में ।
मेरा ऋषभ गया क्यों बन में ॥७॥

॥ माघ ॥

माघ का महीना जी किससे कहूं दुख मेरा,
सब पुत्र बिना अंधेरा ।
पुत्र घर आवो जी मैं देखूं मुख तेरा ।
कोई देवे ऋषभ का वेरा ॥

॥ दोहा ॥

इन्द्रादिक जाको नमें, रहे सदा कर जोड़ ।
राज रमन की संपदा; वो गया छिनक में छोड ॥
ऐसा निरमोही जी पटका बिरह दहन में ।
मेरा ऋषभ गया क्यों बन में ॥८॥

॥ फागुन ॥

फागुण महीना जी नीर नयन में भरती,
मैं सूने मन से फिरती।
भरत यूँ कहता जी सोच फिकर क्यों करती,
रहे निश दिन मुझसे लडती ॥

॥ दोहा ॥

भरत विविध तर भाति से कहता गात बनायँ।
वनं पालक उद्यान के, देई वधाई आय।
प्रभु पधारे जी, सेवत है मुनी जन मे,
मेरा ऋषभ गया क्यों वन में ॥७॥

॥ चैत ॥

चैत का महीना जी हय गज रथ सज त्यारी।
शिणगारी सेना भारी ॥
भरत कर जोडी जी मरुदेवी मनोहारी।
चलो देखो पुत्र सुखकारी।

॥ दोहा ॥

इन्द्रध्वजा आगे चले, भामडल रहे लार।
चौसठ सुरपति चवर करें दु दुभी गगन मझार ॥
" सुत तेरा जी विजसे सुख सुरीगन में।
मेरा ऋषभ गया क्यों बन मे ॥१०॥

॥ वैशाख ॥

वैशाख महीना जी मरुदेवी मन हरपे ।
जब ऋपभ प्रभु मुख निरखे ॥
नैन पट उघाडे जी वीतराग पद सरखे,
चढे शुक्ल ध्यान कूं परखे ॥

॥ दोहा ॥

गज ऊपर मुक्ति गई श्री मरुदेवी मात ।
पहिले शिवजननी दिया, ऐसे ऋपभ सुजात ।
जगसुखकारनजी विचरे प्रभु मगन में ।
मेरा ऋपभ गया क्यों वन में ॥११॥

॥ जेठ ॥

जेठ का महीना जी ऋतु गरमी की आई,
मैं ऋषभ चरण लय लाई ।
दरश ; नित तेरा जी मुझ कुं है सुखदाई,
सेवा प्रेम सदा मन भाई ॥

॥ दोहा ॥

धरम शील आधार से, कुशल सदा आनन्द ।
रिद्धि सार जिन नामसे, रहे दुरती दुख दन्द ॥

हे जी मन मधुकर जी, राखो जिन चरननमे ।
मेरा ऋषभ गया क्यों वन मे ॥१२॥



## गोडी पार्श्व जिन वृद्ध स्तवन

॥ दोहा ॥

वाणी ब्रह्मावादिनी, जागे जग विख्यात ।
पास तणा गुण गावता, मुज मुख वसज्यो मात ॥१॥
नारगे अणहिल पुरे, अहमदावादे पास ।
गोडीनो धणी जागतो, सहुनी पूरे आस ॥२॥
शुभ वेला शुभ दिन घडी, महुरत एक मंडाण ।
प्रतिमा ते इह पासनी थई प्रतिष्ठा जाण ॥३॥



॥ ढाल ॥

गुणहि विशाला मंगलिक माला, वामानो सुत साचोजी ।
भग कग रंगरा मणि माणक दे, गोडीनो धणी जाचोजी ॥४॥
अणहिलपुर पाटण माहे प्रतिमा, तुरक तणे घर छुं तीजी ।
अशुचनी भूमि अशुचनी पीडा, अशुचनी थान विगूतीजी ॥५॥

जागंतो यत्त जेहने कहिये, सुहणो तुरकने आपेजी ।
पास जिणेसर केरी प्रतिमा, सेवक तुझ संतापेजी ॥६॥
प्रह उठीने परगट करजे, मेघा गोठीने देजेजी ।
अधिको म लेजे ओछो मलेजे टक्का पांचशे लेजेजी ॥७॥
नहिं आपीस तो मारीश मुरडीश मोर बंध बंधास्येजी ।
पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुझ लच्छी घणी घर जास्येजी ॥८॥
मारगे पहिलो तुझने मिलस्ये, सारथवाह जे गोठीजी ।
निलवट टीलो चोखा चेड्यां वस्तु वहे तसु पोठीजी ॥९॥

॥ दोहा ॥

मनसुं बीहनो तुरकडो, माने वचन प्रमाण ।
बीबीने सुहणा तणो संभलावे सहिनाण ॥१०॥
बीबी बोले तुरकने, बडा देव है कोय ।
अब सताब परगट करो नहीं तर मारे सोय ॥११॥
पाछली रात परोडिये पहिली बांधे पाज ।
सुहणा मांहे सेठने संभलावे जत्तराज ॥१२॥

●

॥ ढाल ॥

एम कही जत्त आयो राते, सारथवाहने सुहणेजी ।
पास तणी प्रतिमा तुं लेजे, लेतो सिर मत धूणेजी ॥१३॥

पाच सें टक्का तेहने आपे, अधिको म आपिम वारु जी ।
जतन करी पहुंचाडे थानक प्रतिमा गुण ममारु जी ॥१४॥
तुझने होमी बहु फल दायक, भाई गोठी ? सुणजे जी ।
पूजीश प्रणमीश तेहना पाय, प्रह उठीने थुणजे जी ॥१५॥
सुहणो देईने सुर चाल्यो, आपणे थानक पहुंतो जी ।
पाटण माहे सारथराह हींडे तुरकने जोतो जी ॥१६॥
तुरके जाता दीठो गोठी, चोखा तिलक लिलाडे जी ।
सकेत पहुंतो साचो जाणी बोलावे बहु लाडे जी ॥१७॥
मुझ घर प्रतिमा तुझने आपु, पास जिणेसर केरीजी ।
पाच से टक्का जो मुझ आपे, मोल न मागु फेरीजी ॥१८॥
नाणो देई प्रतिमा लेई, थानक पहुंतो रंगे जी ।
केसर चंदन मृगमद घोली, विधि सु पुजा रंगे जी ॥१९॥
गादी रुडी रुनी कीधी, ते माहि प्रतिमा राखे जी ।
अनुक्रमे आव्या परिकर माहे, श्री मघ ने सुर साखे जी ॥२०॥
उच्छव दिन दिन अधिको थाये, सत्तर भेद सनात्रो जी ।
ठाम ठामना दरसण करवा आवे लोक प्रमातो जी ॥२१॥

*

॥ दोहा ॥

इक दिन देखे अवधि सुं, परिकर पुरनो भंग।
जतन करुं प्रतिमा तणो, तीरथ अछे अभंग ॥२२॥
सुहणो आपे शेठने, थल अटवी उज्जाड।
महिमा थासे अति घणी, प्रतिमा तिहां पहुंचाड ॥२३॥
कुशल खेम तिहां अछे, तुझने मुझने जाणी।
शंका छोडी काम कर, करतो म करि संकाणि ॥२४॥



॥ ढाल ॥

पास मनोरथ पूरा करे, वाहण एक वृषभ जोतरे।
परिकरथी परियाणो करे एक थल चढि बीजो उतरे ।२५।
बारे कोस आव्या जेतले, प्रतिमा नवि चाले तेतले।
गोठी मनह विमासण थई, पास भुवन मंडावुं सही ।२६।
आ अटवी किम करूं प्रयाण, कटको कोइ न दीसे पाहाण।
देवल पास जिणेसर तणो, मंडावुं किम गरथे विणो ।२७।
जल विण श्री संघ रहिस्ये किहां, सिलावटो किम आवे इहां।
चितातुर थयो निद्रा लहे, यक्षराज आवीने कहे ॥२८॥

गहुली उपर नाणो जिहाँ, गरथ वणो जाणीजे तिहा ।
स्वस्तिक मोपारिने ठाणि, पाहाण तणी उलटस्ये खाणि ।२६।
श्री फल सजल तिहा किल जुओ, अमृत जल नीमरमी कुओ ।
खाग कुआ तणो इह महिनाण, भूमि पड्यो छे नीलो छाण ।३०।
सिलावटो सिरोही वसे, कोढ पराभवियो किमसि ।
तिहा थकी तु इहा आणजे, सत्य वचन माहरो मानजे ॥३१॥
गोठीनो मन थिर थापियो, मिलावट ने सुहणो दियो ।
रोग गमीने पूरु आम, पास तणो मडे आवास ॥३२॥
सुपन माहे मान्यो ते वेण, हेम वरण देखाड्यो नेण ।
गोठी मनह मनोरथ हुवा, मिलावट ने गया तेडवा ॥३३॥
सिलावटो आवे सरमो, जीमे खीर खाड घृत चूरमो ।
घडे घाट करे कोरणी, लगन भले पाया रोपणी ॥३४॥
थंभ थंभ कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली ।
रंग मडप रलियामणो रसे, जोता मानवनो मन वसे ॥३५॥
नीपायो पूरो प्रासाद, स्वर्ग समोमडे आवास ।
दिवस विचारी इडो घड्यो, ततखिण देवल उपर चड्यो ॥३६॥
शुभ लगन शुभ वेलावास, पवासण बेठा श्रीपास ।
महिमा मोटी मेरु समान, ए कल मिल वगडे रहे थान ।३७।

वात पुराणी में सांभली, स्तवन मांहि सुधि सांकली ।
गोठी तणा गोतरिया अछे, यात्रा करीने परणे पछे ॥३८॥



॥ दोहा ॥

विघन विडारन यक्ष जगि, तेहनो अकल सरूप ।
प्रीत करे श्री संघने, देखाडे निज रूप ॥३९॥
गिरुओ गोडी पास जिन, आपे अरथ भंडार ।
सानिध करे श्री संघने, आशा पूरण हार ॥४०॥
नील पलाणे नील हय, नीलो थइ असवार ।
मारग चूका मानवी, वाट दिखावण हार ॥४१॥



॥ ढाल ॥

वरण अढार तणो लहे भोग, विघन निवारे टाले रोग ।
पवित्र थइ समरे जे जाप, टाले सघलां पाप संताप ॥४२॥
निरधनने घर धननो सूत, आपे अपुत्रीयाने पुत्र ।
कायरने सूरापण धरे, पार उतारे लच्छी वरे ॥४३॥
दुर्भागीने दे सोभाग, पग विहूणाने आपे पाग ।
ठाम नहीं तेहने घे ठाम, मन वंछित पूरे अभिराम ॥४४॥

निराधार ने द्ये आधार, भवसायर उतारे पार।
आरतीयानी आरत भंग, धरे ध्यान ते लहे सुरंग ॥४५॥
समर्थ सहाय दिये यत्तराज, तेहना मोटा अछे दिवाज।
बुद्धिहीणने बुद्धि प्रकाश; गूंगाने द्ये वचन विलास।४६।
दुखिया ने सुखनो दातार, भय भजण रजण अवतार।
बंधन तुटे बेडी तणा, श्री पार्श्वनाम अक्षर समरणा।४७।

●

॥ दोहा ॥

श्री पार्श्व नाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल।
हस्ति यूथ दूरे टले दुर्धर सिंह सियाल ॥४८॥
चोर तणा भय चूकवे, विष अमृत उडकार।
विषधरनो विष उतरे, सग्रामे जय जयकार ॥४९॥
रोग सोग दारिद्र दुख, दोहग दूर पलाय।
परमेश्वर श्री पार्श्वनो, महिमा मत्र जपाय ॥५०॥

●

॥ ढाल ॥

कडखानी चाल

उं जितु उं जितुं उत्र उपशम धरी।
ॐ ह्रीं श्री श्री पार्श्व अक्षर जपते।

भूतने प्रेत झोटिंग व्यंतर सुरा ।
उपशमे वार इकवीस गुणंते ॥५१॥
दुर्ध्धरा रोग सोगा, जरा जंतुने ।
ताव एकांतरा दुत्तपंते ।
गर्भ बंधन व्रणं सर्प विच्छू विषं ।
बालिका बाल मेवा भखंते ॥५२॥
साइणी डाइणी रोहणी रंकणी ।
छोटका मोटका दोष हुंते ॥
दाढ उंदर तणी कोल नोला तणी ।
श्वान सीयाल विकराल दंते ॥५३॥
धरणेंद्र पद्मावती समर शोभावती ।
वाट आघाट अटवी अटंते ।
लखमी लोंदु मिले सुजस वेला उले ।
सयल आशा फले मन हसंते ॥५४॥
अष्ट महाभय हरे कान पीडा टले ।
उतरे सूल सीसग भणंते ।
वदत वर प्रीतिशुं प्रीतिविमल प्रभु ।
श्री पास जिण नाम अभिराम मंते ॥



॥ कलश ॥

तपगच्छ नायक सुखदाया श्री विजय सेन सूरीश्वरो ।
तसपाट उदयाचले उदयो विजयदेव सुहकरो ॥
इम थुएयो गोडी पास जिनवर प्रीतिविमल जयकरो ।
भणे गणे भविक शुद्ध भावे तस घर मंगल जयकरो ॥५६॥

## जिन विंव स्थापन का स्तवन

भरतादिके उद्धारज कीधो, शत्रुंजय मोझार ।
सोनातणा जेणे देहरा करान्या, रत्न तणा विंब स्थाप्या ।
हो कुमति का जिन प्रतिमा उथापी ए जिन वचने थापी ॥१॥
वीर पछी वेसे नेवु वरसे, सप्रतिराय सुजाण ।
सवा लाख प्रसाद कराव्या, सवा क्रोड विंब स्थाप्या जाणी ।२।
द्रौपदीए जिन प्रतिमा पुजी सूत्रमां साख ठहराणी ।
छठे अंगे तेनी रे भाख्यु, गणधर पुरे साखी, हो कुमति ॥३॥
सवत नवसे त्राणु वरसे, विमल मत्रीश्वर जेह ।
आबु तणा जेणे देहरा कराव्या, छ हजार विंव स्थाप्या तेह ।४।
संवत अगिआर नव्वाणु वरसे, राजा कुमारपाल ।
पांच हजार प्रासाद कराव्या, सात हजार विंब स्थाप्या ॥५॥

संवत बार पंचाणु वरसे, वस्तुपाल तेजपाल ।
पांच हजार प्रासाद कराव्यां, अगिआर हजार बिंब स्थाप्या ।६।
संवत बार बहोंतेर वरसे, संघवी धन्नो जेह ।
राणकपुर जेणे देहरा कराव्या, क्रोड नवाणु द्रव्य खरच्या ।।७।।
संवत बार एकोतेर वरसे, समरोशा रंग शेठ ।
उद्धार पंदरमो शेत्रुंजय कीधो, अगिआर लाख द्रव्य खरच्यो।८।
संवत पनर सत्यासी वरशे, बादशाह ने वारे ।
उद्धार सोलमो शेत्रुंजे कीधो करमा शाहे जस लीधो ।।९।।
ए जिन प्रतिमा जिनवर सरखी, पुजो त्रिविध तुमे प्राणी ।
जिन प्रतिमामां संदेह न राखो, वाचक जसनी वाणी ।
हो कुमति कां जिन प्रतिमा उथापी ए जिन वचने थापी ।१०।



## सिद्धाचल जी का स्तवन

शेत्रुंजा गढना वासी रे, मुजरो मानजोरे ।
सेवकनी सुणी वातो रे, दिलमां धारजो रे ।।
प्रभु में दीठो तुम देदार ।
आज मुने उपन्यो हरख अपार ।।
साहिबानी सेवा रे, भवदुख भांजशे रे ।
साहिबानी सेवा रे, शिवसुख आपशे रे ।।१।।

एक अरज अमारी रे दिल मा धारजो रे।
चोराशी लाख फेरा रे, दूर निवारजो रे॥
प्रभु मने दुर्गति पडतो राख।
प्रभु मने दरिशण वहेलु दाख॥२॥
दोलत सवाई रे सोरठ देशनी रे।
बलिहारी हुं जाउ रे प्रभु तारा वेशनी रे।
प्रभु तारु रुडु दीठु रुप।
मोह्या सुर नर वृन्दने भूप॥सा०॥३॥
तीरथ कोइ नहिं रे, शेत्रु जा सारखु रे।
प्रवचन पेखीरे कीधु में तो पारखु रे॥
ऋषभने जोइ जोइ हरखे जेह।
त्रिभुवन लीला पामे तेह, साहिबा॥४॥
भवोभव मागु रे, प्रभु तारी सेवना रे।
भावठ भागी रे जगमा जीवना रे॥
प्रभु मारा पुरो मनना कोड।
इम कहे उदय रतन कर जोड॥५॥

## सामान्य स्तवन

जीव जीवन प्रभु म्हारा, अबोलडां शानां लीधा छे राज ।
तमे अमारा अमे तमारा, वास निगोद मां रहेता ॥
काल अनंत स्नेही प्यारा, कदीय न अंतर करता ।
बादर स्थावरमां बेहु आपण, काल असंख्य निर्गमता ॥१॥
विकलेन्द्रिमाँ काल संख्याता, विसर्या नवि विसरता ।
नरक स्थाने रह्या बहु साथे, तिहां पण बेहु दुख सहता ॥२॥
परमाधामी सनमुख आपण, टग टग नजरे जोता ।
देवना भवमां एक विमाने. देवना सुख अनुभवता ॥३॥
एकण पासे देव शय्यामां, थेइ थेइ नाटक सुणाता ।
तिहां पण तमे अने अमे बेहु साथे, जिन जन्म महोत्सव करता ।४।
तिर्यंच गतिमा सुख दुख अनुभवता, तिहां पण संग चलंता ।
एक दिन समवसरण मां आपण, जिनगुण अमृत पीता ।५।
एक दिन तमे अने असे बेहु साथे, वेलडी ए वलगीने फरता ।
एक दिन बालपणामाँ आपण, गेडी दडे नित्य रमता ॥६॥
तमे असे बेहु सिद्ध स्वरूपी, एवी कथा नित्य करता ।
एक कुल गोत्र एक ठेकाणे, एकज थालीमा जमता ॥७॥
एक दिन हुं ठाकोर तमे चाकर सेवा मारी करता ।
आज तो आप थया जगठाकोर, सिद्धि वधू ना पनोता ॥८॥

काल अनंतनो स्नेह विभागी, काम कीधा मन गमता ।
हवे अतर किम कीधु प्रभुजी, चौदराज जइ पहोता ॥९॥
दीप विजय कविराज प्रभुजी, जगतारण जग नेता ।
निज सेवक ने यशपद दीजे, अनंत गुण गुणवंता ॥१०॥



## महावीर का स्तवन

त्रिशलाना जाया रे, महावीर व्हाये आवजो जी ।
नहीं आवो तो थाशे सेवकना बेहाल ॥१॥
दैत्य महा मोहरे व्हाला लाग्यो पीडवा रे ।
दीधां दुख कहेतां न आवे पार ॥२॥
कामने अज्ञाने रे, मत्ता निज वापरी जी ।
वाले क्रोध वडी घडी क्षण माहि ॥३॥
पन्थ पाखंड जाले रे वींटायो छु वेगथी रे ।
विकार विष चरनी लागी रे चोट ॥४॥
पंचम काल पूरो रे, जम जेवो वेसीयो जी ।
सूझे नहिं धर्ममारगनी रे रीत ॥५॥
गाढो वेलो तारो रे, सेवक व्हाला मानी नेजी ।
तारो तारो भवसागरनी रे तीर ॥६॥

टलवलतो तारो व्हाला रे, सेवक हाथ झालीनेजी।
नहीं तारो तो जाशे तमारी रे लाज ।७।
तुहिं तुहिं समरुं रे दुखीना वेली आवजो जी।
शरणुं एक बुद्धिसागर ने छे तुज ।८।



## महावीर स्वामी का स्तवन

मारी नाड तमारे हाथे प्रभु संभालजो रे।
प्यारा पोतानो जाणी ने प्रभु पद आपजो रे॥
पथ्या पथ्य नहीं समजातुं दुःख सदैव रहे उभरातुं।
मन हशे शुं थयुं नाथ निहालजो रे॥१॥
अनादि वैद्य तमे छो साचा, कोई उपाय विषे नहीं काचा।
दिवस रह्या छे आछा वहेला आवजो रे॥२॥
सिद्ध प्रभुजी हवे शुं थाशे, चेतन रायनो गढ़ घेरासे।
लाज तमारी जाशे प्रभुजी निहालजो रे॥३॥
वीर प्रभुजी हजु शुं विचारो, बाजी हाथ छतां हुं हार्यो।
महा मुझारो नटवर मारो टालजो रे॥४॥
शो अपराध थयो छे स्वामी पूछु छुं प्रभुजी शिरनामी।

अन्तरयामी अति अन्तर उभराय छे ।
हठ लई बेठा छो जिनराज हवे हद थाय छे रे ॥५॥
परम प्रभु जन्म मलेलो मागे निष्फल जाय छे रे ।
छे भगवान मने भव भारे, आप विना नहीं कोई उगारे ।
आ संसारनी अथ वच वहाण तणाय छे रे ॥६॥
घणा घणानी वारे धाया आसेरकना टाळे संताया ।
प्रभुजी न करशो माग नयन उभराय छे रे ॥७॥
क्षमानन्त बहु कठिन न थाशो, दयानन्त बहु दूर न जाशो ।
करुणामृत पामी जीवन जाय छे रे ॥८॥
शान्त दान्त वली अतिय कृपालु ।
न्याय वृद्धि गुरु कपुर दयालु ॥
परम सुचेला पुन्यने पार उतारशो रे ॥९॥



## ॥ स्तवन ॥

गामलजो मुनि सयम रागे उपशम श्रेणी चढियारे ।
मातावेदनी बंध करीने, श्रेणी थकी ते पडियारे ॥मा. ॥टेर॥
मासे भगवई छट तप बाकी, मात लवायु ओछे रे ।
सर्वारथ सिद्धे मुनि पहोंता, पूर्णायु नवि ओछे रे ॥मां. ॥१॥

शय्यामां पोढ्या नित्य रहेवे, शिव मारग विसामो रे ।
निर्मल अवधि नाणे जाणे, केवलि मन परिणामो रे ॥सां. ॥२॥
ते शय्या उपर चंदरवे, झूमखडे छे मोती रे ।
विचलुं मोती चोसठ मणनुं, झगमग जालिम ज्योति रे ॥सां॥३॥
बत्रीश मणना चउ पाखलिये शोल मणां अड सुणियारे ।
आठ मणा सोलश मुक्ता फल, तिम बत्रीश चउ मणियारे ।सां. ।४।
दो मण केरा चोसठ मोती, इगसय अडवीश मणियां रे ।
दो सयणे वलि त्रेपन मोती, सर्व थईने मलियां रे ॥सां. ॥५॥
ए सघला विचलां मोतीशुं, आफले वायु योगे रे ।
राग-रागिणी नाटक प्रगटे, लवसत्तम सुर भोगे रे ॥सां. ॥६॥
भूख तरस छीपे रस लीना, सुर सागर तेत्रीशु रे ।
साता लहेरमां त्रण २ समरे वीर विजय जगदीश रे ॥सां. ॥७॥



## ॥ अष्टमी का स्तवन ॥

आठम जिन वन्दन करिये, आठम तप विधि आदरिये ।
निज आठ परम गुण वरिये, आठम तप विधि आदरिये ॥टेर॥
आठ कर्म कलङ्क निवारे, आठ मङ्गल घर विस्तारे ।
आठ सिद्धि अनुपम भरिये, आठम तप ॥ १ ॥

शठ आठ महा मद टारी अध्यातम रूप विचारी ।
पूजा आठ प्रकार से करिये, आठम ॥ २ ॥
तप आतमबल उपजावे, मोहराजका ताप मिटावे ।
तप उपशम युत चित धरिये, आठम तप ॥ ३ ॥
शुभ योग अनचक धारी निज आतम कर अधिकारी ।
जिन आज्ञाको अनुसरिये, आठम तप ॥ ४ ॥
धर्म शुक्ल सुध्यान के आठ, भेद ध्यावो सदा होय ठाठ ।
आर्त रौद्र कुध्यान न करिये, आठम तप ॥ ५ ॥
देववदन गुण सम्भारा, प्रतिक्रमण विना अतिचारा ।
शिव साधन पन्थ विहरिये, आठम तप ॥ ६ ॥
पट साखे कर पचखाणा चढिये क्रमशः गुणठाणा ।
ब्रह्मचर्य सुगुण आचरिये, आठम तप ॥ ७ ॥
आठ मास करो आठ वर्ष, शुध भाव सहित तप हर्ष ।
सुन्दर शिव रमणी वरिये, आठम तप ॥८॥
पूरण तप पुण्य विलासा चढते चित अति उल्लासा ।
उद्यापन उत्सव करियें ॥ आठम तप० ॥६॥
सुख सागर श्री भगवाना, हरिपूज्य सु पुण्य प्रधाना ।
पद पर नहीं मोह से डरिये, ॥ आठम तप० ।१०।

तप निर्मलता गुण हेतु, भवसागर तारक सेतु ।
कीरति सुकवीन्द्र उचरियें, आठम तप ॥११॥



## अष्टापद तीर्थ स्तवन

तीरथ अष्टापद नित्य नमिये, जिहाँ जिनवर चौवीस जी ।
मणिमय बिम्ब भराव्या भरते, ते वन्दू निशदीश जी ॥
निज निज देह प्रमाणे मूर्ति, दीठे मनडूं मोहे जी ।
चत्तारि अट्ठ दस दोय इणिपरे, जिन चौवीसे सोहे जी ॥१॥
बत्तीश कोशनो पर्वत उँचो, आठ तिहां पावडीया जी ।
एके को चऊ कोश प्रमाणे, नवि जाये कोई चढिया जी ॥२॥
गौतम स्वामी चढियां लब्धे, वान्द्या जिन चोवीश जी ।
जग चिंतामणी स्तवन त्यां कीधूं पूरी मननी जगीश जी ।३।
तद्भव मोक्षगामी जे मानव, ए तीरथ ने वान्दे जी ।
जंघा विद्या चारण वान्दे, ते तो लब्धि प्रसादे जी ॥४॥
साठ सहस सुत सागर चक्रिना, ए तीरथ सेवंता जी ।
बारमा देवलोके ते पहुंता, लहेशे सुक्ख अनन्ता जी ॥५॥
कञ्चनमय प्रसाद इहां छे, वन्दन करवा जोग जी ।
ए अधिकार छे आवश्यक सूत्रे, जो जो देई उपयोग जी ।६।

जिहाँ आदेश्वरजी मुक्ति पोहोता, अविचल तीरथ एह जी।
जशवन्त सागर शिष्य पयपे, जिनेन्द्र वधते नेह जी ॥७॥



## पर्युषण पर्व की सभाय

पर्व पजुषण आवियारे लाल, कीजे घणो धर्म ध्यान रे।
भविक जन आरम सकल निवारिये रे लाल ॥
जीवों ने दीजे अभयदान रे, भविक पर्व ॥ टेर ॥
सघला मासा माही सिरे रे लाल, भादरवो मास सुमासरे।
तिण माहे आठ दिन रूवडा रे, कीजे सुकृत उल्लास रे ॥१॥
खाडण पीसण गारना रे, न्हावण धोवण जेह रे।
एहना आरंभ टालिये रे, वाञ्छो सुक्ख अछेह रे ॥२॥
पुस्तक वामी न राखिये रे, उच्छव करिये अनेक रे।
घर मारु चित्त वावरो रे, हियडे आँणी विवेक रे ॥३॥
पूजी अरची आर्णाये रे, श्री सदगुरु जीनी पास रे।
ढोल दमामा नफेरिने रे, मंगलिक गावो सास रे ॥४॥
श्रीफल सगर सोपारियां रे, दीजे साहमी हाथ रे।
लाभ अनन्तो वखानियो रे, श्रीमुख त्रिभुवन नाथ रे ॥५॥

नव वाचना कल्पसूत्रनी रे, सांभलो सूधे भाव रे।
साहमी वच्छल कीजिये रे, भव जल तरवा नाव रे ॥६॥
चित्त कर चैत्य जुहारिये रे, पूजा सत्तर प्रकार रे।
अंग पूजा सदगुरू तणी रे, कीजे हर्ष अपार रे ॥७॥
जीवों ने अमर पलाविये रे, तिणथी शिव सुख होय रे।
दान संवत्सरी दीजीये रे, इण समो पर्व न कोय रे ॥८॥
काउस्सग करीने सांभलो रे, आगम आपणे कान रे।
छठ अट्ठम तपस्या करो रे, कीजे उज्वल ध्यान रे ॥९॥
इण विध जे आराधस्ये रे, ते लहेसे शिव सुख कोड रे।
मुक्ति मंदिर में मालसे रे, मति हंस नमें कर जोड़ रे ॥१०॥



## पार्श्वनाथ का स्तवन

समेत शिखर मुझने वाहलु लागे छे।
प्रगट वसे छे वहालो पार्श्व जिनन्द सखी ।१।
आटलो संदेशो जइने प्रभुजी ने केजे।
भवरूपी दरियामांथी क्यारे जालशो हाथ सखी ।२।
क्रोध अगनिनी ज्वाला मुजने बाले छे।
कृपा करिने क्यारे करशो वरसाद सखी ।३।

काम स्वरूपी हस्ति कचटी नाखे छे ।
शठना रुपी सिंह करे छे साद सखी ।४।
सूष्टि न जाणु हु तो रान भयंकर ।
नजरे न आवे प्यारो प्रेमशु पथ सखी ।५।
हुं तो दासी प्यारा पार्श्व जिनन्दनी ।
सेजे सलुणो मारो कोडिलो कथ सखी ।६।
हिमालु लोक ज्या त्या शोर करे छे ।
आलस अजगर केरो भारे छे त्रास सखी ।।७।
कुटुंब कबीलो साचा शियाल वाघ वेरी ।
रह्या छे मुजने आवी चौपास सखी ।।८।।
अन्तरना वेली मुजने क्यारे उगारशो ।
व्हालु लागे छे व्हाला आपनु धाम सखी ।६।
करुणाना वेली मने क्यारे उगारशो ।
हैयामा हवे मने नथी कई हाम सखी ।।१०।।
समेत शिखर वासी व्हाला पार्श्व जिणदजी ।
वामा माताना रुडा लाडीला नद सखी ।।११।।
अमिरस झरती मूर्ति प्यारी लागे छे ।
कुमुद ने व्हालो जेम शरदनो चद सखी ।१२।

नटडीनी दोर उपर दृष्टि छे जेवी।
एवी वनी छे प्रभुनी प्रीत सखी ।१३।
अजित सागर सूरि प्रीते बोले छे।
प्रभुने संभालवानी रुडी छे रीत सखी ।१४।



## चिन्तामणि पार्श्वनाथ का स्तवन

श्री चिंतामणि पार्श्वजी दादा वात सुणो एक मोरी रे।
म्हारा मनना मनोरथ पुरशो हुं तो भक्ति न छोडुं तोरी रे ।१।
माहरी खिजमतमां खामी नहीं, ताहरे खोट न कांइ खजाने रे।
हवे देवानी शी ढील छे? कहेवुं ते कहीए छाने रे ॥२॥
तें उरण सवि पृथवीकरी, धन वरसी वरसी–दाने रे।
माहरी वेला शुं एहवा दीओ वांछित वानो वाने रे ॥३॥
हुं तो केड न छोडुं ताहरी, आप्या विण शिवसुख स्वामी रे।
मूरख ते ओछो मानसे चिन्तामणि करयल पामी रे ॥४॥
मत कहेश्यो तुज कर्मे नथी कर्मे छे तो तुं पाम्यो रे।
मुज सरीखा कीधा मोटका, कहो तेणे कांइ तुज धाम्योरे ।५।
काल स्वभाव भवितव्यता ते मवला तारा दासो रे।
मुख्य हेतु तुं मोक्षनो, ए मुजने सबल विश्वासो रे ॥६॥

अमे मक्ते मुक्तिने खेचसुं, जिम लोहने चमक पाषाणो रे।
तुमे हेजे हमीने देखशो, कहेशो सेवक छे मपडाणो रे ॥७॥
भक्ति आराध्या फल दीये श्री चितामणी पाषाणो रे।
वली अधिक काइ कहानशो ए भद्रक भक्ति ते जाणो रे ॥८॥
बालक ते जिम तिम बोलतो करे लाड तातनी आगे रे।
ते तेहशुं वाछित पूरवे बनी आवे सघलुं रागे रे ॥९॥
मारे धननारु ते बन्युं ज छे हुतो लोकने वात शीखावु रे।
वाचक जम कहे माहिरा ए गीने तुम गुण गावुं रे ॥१०॥



## सुविधि नाथ का स्तवन

सुविधि जिनेश्वर साहिब सेवो, आपे शिवपुर मेवो।
सदा घट अन्तरजामी प्रेम लागीने प्रभु पाय पड़ुं छु ॥
दुखडा मारा रडुं छु, सदा घट ॥१॥
अष्ट प्रकारी हु तो पुजा रचावुं मावे भावना भावुं।
बोलो प्रभु जरा प्रेम करीने, दयानी दृष्टि करीने ॥२॥
शाने माटे मने तारो ना स्वामी, कहेशो जो गुणनी छे खामी।
प्रेम धरीने ते गुणो ने आपो, जेथी जाय वलापो, सदा ॥३॥
कहेशो जो योग्यता नथी तारामां, आपो योग्यता मारा मा।
कहेशो समये तुज योग्यता आवे, आपो समय ते भावे ॥४॥

कहेशो के दील नथी मुक्तिनुं साचुं, ते पण भावथी याचुं ।
कहेशो जो ज्ञान नथी तुज मारुं, तेयी हुं केम करी तारुं ॥५।

ते पण ज्ञान घडीमां आपो शाने माटे तमे नापो ।
कहेशो के श्रद्धा नथी तुज साची, श्रद्धा तेवी में याची ॥६॥

मोडा वहला शिव तमे पमाडो, शीदने वार लगाडो ।
श्वासो श्वास भक्ति जो जागे, बोल्या प्रभु गुण रागे ।७।

अन्तरजामीनी भक्ति तो करशुं तन्मय थइने विचरशुं ।
अनुभव नयणे अगम पंथ जोशुं, पोतानी ऋद्धि कमाशुं ।८।

अजरामर अज जे अविनाशी, सुख अनन्ता विलासी ।
नाम रुप नहीं निर्मल ज्ञानी, बुद्धिसागर सेवो जाणी ॥
सदा घट अन्तर जामी ॥९॥



## नेम राजुलना बारमासा

सखी तोरण आवी कंत, गया निज मंदिरे ।
जे नजर मेलावो कीध, ते मुज सांभरे ॥
घर लावी झाली हाथ हूं हेठे उतरी ।
पण करी वरघोडो, आत छबीलो छेतरी ॥

मधु बिंदु समो संसार, मुंझाणा महालतां ।
संसारे सुखी अणगार, जिनेश्वर बोलता ॥१॥
सखी शा रे कहुं अवदात, वियोगी दुखी तणा ।
दुनीया मा दुर्जन लोक, हांसी करे घणा ॥
मीठी लागे परनी वात, अगन पगना लहे ।
केना मोम चूवे केना नेत्र, ते मुख ना कहे ॥२॥
सखी श्रावण छड्डे मेली, महीयरीया तले ।
छटकी धारधि वेल वाली नहीं वले ।
काम वरती फरती धरती, भरती वादली ।
गयो श्रावण मास निराश, राजूल एकली ॥३॥
सखी भादरवे भरथार, विना केम रीझीए ।
विरहानल उठी झाल, धुंआ विण दाजीए ॥
फल पाम्यां दर्पण, शाल न खाइए खेलीए ।
दोन दुगना दहाडा वे चार, आशा ठेली ए ॥४॥
वन आगो मारो नेम, गुवाली सुंखडी ।
गया दश रे दशेराना दिन, दिवाली टूंकडी ।
सखी आसरा रही ए लाग, मरम नहि मोकना ।
रंग नानने नाटक शाल, पिउ विना पेखणा ।५।

सखि कार्तिके केली करे, नरनारी बागमां ।
जेणे मासे टबुके टाढ, कुमारी रागमां ॥
जेना वालम गया विदेश, संदेशा मोकले ।
सारे गाम धणी घरवट, वसे पियु वेगले ॥६॥
सखी मागशीरे मागणाना, मनोरथ पूरता ।
मने मेली वाले वेश, चतुर गुण चूरता ।
सखी कोइ रे संदेशो लेई, आपी जाय मुज कने ।
तेने देऊं रे मोतिन को हार, अमूलख भूषणो ॥७॥
पोष मासे पोतानी छंडी, शीयाले चालीया ।
वालेसर विणा वेरण रात, सूनां महेल मालीया ॥
जाय जोवनीयुं भरपूर, अरण्य जेम मालती ।
जेना पियु रे गया परदेश, दुखे दिन काढती ॥८॥
पियु महा मासे मत जावो रे, हिमालो हालशे ।
रयणी एक वरस समान, वियोगी सालशे ।
लंकाथी सीता षट मासे, राम घर लावीया ॥
एवा वही गया साते मास, प्रीतम घेर न आवीया ॥९॥
हलकारो हसंत वसंत आकाशथी उतर्यो ।
मानुं फागण सुर नर राय मलीने नोतर्यो ॥
होली खेले गोपी गोविंद, हम घर आवती ।
अति केसुआं झंपापात, वियोगे मालती ॥१०॥

सखी चैत रे चित्त थकी, विछोही वालमे ।
आवा दुखना दहाडा किम जाय, उगे रवि आथमे ।
आख मींचाणे मली जाय रे, उघाडे वेगलो ।
शामनीओ सिद्ध स्वरूप, सुपनमा आगलो ॥११॥
रमे हंस युगल शुक मोर, चकोर सरोवरे ।
निज नाथ सहियरने साथ, सुखे रमे वन घरे ।
शुख मंजरी आवा डाले, कोयल टहुकती ।
सखी वातमा वीत्यो वसत, रोवे राजिमती ॥१२॥
सखी वैशाखे वन माहे रे, हींचोला हींचता ।
कदली घर फूल नीछाय, खुशीथी नाचता ॥
सरोवर जल कमले केल, करता राजवी ।
तुज सरीखी छबीली नार, लग्न लेइ लाजवी ॥१३॥
जेठ मासे जुलमना ताप, तपती भूतला ।
आठ मासनो मेघ वियोग, वले तरु रुतला ॥
पशु पखी निशामा खाय रे, शीतल छाया तरु ।
मारे पियु विना नहीं विसराम, नातीने नोतरु ॥१४॥
सखी आवीयो मास आषाढ, भरे जल वादली ।
गरजारवे टहूके मोर, भबूके विजली ॥

वरसादे वसुधा नव पल्लव, हरीआं धरे ।
नदी नाले भरीआं नीर, वपैयो पियु पियु करे ॥१५॥
चोमासे करी तरुमाला, रमतां पंखीआं ।
एम वीत्या बारे मास प्रीतम घेर न आवीया ॥
श्रावण सुदि छट्ठे स्वामी, गया सहस्रावने ।
लेइ संयम केवली थाय, दिन पंचावने ॥१६॥
नेम मुखथी राजुल नव भव, नेह निहालती ।
वैरागे सुधारस लीन, सदा मन वालती ॥
कालांतरे नेम दयाल, तिहां देशना दीये ।
प्रभु हाथ साहेली साथ, राजुल दीक्षा लीए ॥१७॥
लइ केवलकरी परिसाटन बेहु मुगते गया ।
बनी प्रीत ते सादि अनंत, भाग्ये भेलां थयां ॥
शुभ वीर विजय सुख लील, मगन विशेषता ।
लोक नालनी नाटक शाला, समयमां देखता ॥१८॥

